॥ ओ३म् ॥

यज्ञ महिमा

॥ ओ३म् ॥

यज्ञ महिमा

सम्पादक

डॉ. नरेश कुमार धीमान्

प्राचार्य

दोआबा कॉलेज़, जालन्धर

प्रकाशक

वैदिक प्रकाशन

महर्षि दयानन्द मठ, ढन मुहल्ला

जालन्धर–144008

दूरभाष : 0181–2453792

१3 वाँ संस्करण (संशोधित)

लागत मूल्य : **पन्द्रह रुपये**

प्रचारार्थ मूल्य : **दस रुपये**

'यज्ञ महिमा' पुस्तक के 13वें संशोधित संस्करण के प्रकाशन-छपाई में प्रमुख सहयोगियों-दानियों की सूची:

1. श्री चतुर्भुज जी मित्तल
2. श्री ओम प्रकाश जी अग्रवाल
3. श्री कुन्दन लाल जी अग्रवाल
4. स्व० माता कमला देवी जी की स्मृति में उनके सुपुत्र डा० नरेश कुमार धीमान, प्रिंसीपल दोआबा कालेज जालन्धर द्वारा
5. श्री यशपाल जी आर्य
6. श्री रवि मित्तल जी
7. श्री कैलाश जी अग्रवाल
8. श्री बलराम जी गुप्ता
9. श्री चौधरी राम कुमार जी
10. श्री सत्य शरण गुप्ता (जिंदल)
11. श्री प्रकाश चन्द्र जी सुनेजा
12. श्री वीरेन्द्र जी अग्रवाल
13. श्री ज्ञानेन्द्र जी सग्गी
14. स्व. माता तारावती गुप्ता धर्मपत्नी स्व. श्री सोहन लाल जी गुप्ता
15. श्रीमती सरला गुप्ता धर्मपत्नी स्व० श्री बैजनाथ गुप्ता
16. श्रीमती सुदर्शना रानी विज
17. श्री अरुण जी कोहली
18. श्री हिन्दपाल जी सेठी
19. श्री मदन लाल कालरा - श्री सोनू दीपक पोपली जी
20. स्व. लाला बनारसी दास गुप्ता जी की स्मृति में श्रीमती विमलावती गुप्ता (मलसियाँ)
21. श्री योगराज गुप्ता जी - माता निर्मल गुप्ता जी
22. श्री ललित जी मित्तल लोहे वाले (टांडा रोड)
23. श्री संजय बांसल जी
24. श्री आर.के आनन्द जी
25. श्री मदन लाल जी टण्डन
26. श्री राम भुवन जी शुक्ला
27. श्री ओम प्रकाश जी चुघ
28. श्री अविनाश जी तलवाड़ा
29. श्रीमती निर्मला शर्मा
30. श्री ओ.पी. सैनी
31. प्रो० ए.जे. बहल
32. माता सावित्री खन्ना
33. स्व० डा० हरप्रसाद सच्चर की स्मृति में उनके सुपुत्र द्वारा

सभी सहयोगियों-दानियों का इस पुण्य यज्ञ में सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद-आभार। सब पर प्रभु कृपा बनी रहे।

सम्पादकीय

'यज्ञ' अर्थात् स्वार्थ भावना से ऊपर उठकर किए गए कर्म। ऐसे निष्काम कर्म सदैव शुभ तथा श्रेष्ठतम होते हैं, इन्हीं का वैदिक नाम 'यज्ञ' है —***यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म***। 'कोई फिसल कर गिर न जाए, किसी का अंग-भंग न हो जाए'—इस भावना से यदि सड़क से केले का एक छिलका उठाकर एक ओर कर दिया जाता है तो यह भी यज्ञ है। इस प्रकार यज्ञ अनन्त हैं। ये तथा अश्वमेध यज्ञ जैसे सभी यज्ञ-कर्म साधारण यज्ञ हैं।

वैदिक आचार संहिता के प्रतिष्ठापक महर्षि मनु के अनुसार (मनुस्मृति ३.७१) उन अनन्त यज्ञों में से प्रत्येक गृहस्थ द्वारा प्रतिदिन अवश्य करणीय पाँच यज्ञ **'महायज्ञ'** कहलाते हैं— **ब्रह्मयज्ञ-सन्ध्या, देवयज्ञ-अग्निहोत्र, पितृ-यज्ञ, बलिवैश्वदेव-यज्ञ तथा अतिथि यज्ञ**। इन्हीं पाँच महायज्ञों का विधि सहित प्रकाश **यज्ञ-महिमा** में किया गया है।

यज्ञ-महिमा में पूरा-पूरा प्रयास किया गया है कि साधारण व्यक्ति भी इस पुस्तक की सहायता से यज्ञ कर सके, उसे बार-बार पृष्ठ पलटने न पड़ें, इसीलिए **पहले दैनिक यज्ञ के सभी मन्त्र आदि देकर उसके बाद अलग खण्ड में बृहद् यज्ञ को पूरी विधि सहित प्रकाशित किया गया है**। प्रत्येक मन्त्र को सरलता से पढ़ने योग्य रूप में तथा एक प्रकार की क्रिया के सभी मन्त्रों को प्राय: एक ही पृष्ठ पर छापने का प्रयास किया गया है। प्रत्येक पूरा मन्त्र एक ही पृष्ठ पर है। सभी मन्त्रों के अर्थ प्रार्थना शैली में किए गए हैं। पुस्तक का मूल्यांकन याज्ञिक स्वयं करेंगे। पुस्तक को लागत से भी कम मूल्य पर देकर दयानन्द मठ स्वयं में महान् यज्ञ कर रहा है, मठ के सभी पदाधिकारी विशेषरूप से धन्यवाद के पात्र हैं।

२३ दिसम्बर, २०११ **-नरेश कुमार धीमान्**

(स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस)

प्रकाशकीय

श्रद्धेय **स्वामी सत्यानन्द जी महाराज** ने इस महर्षि दयानन्द मठ (वेद मन्दिर), जालन्धर की स्थापना वेद तथा स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करने के लिए १९४९ ई० में की थी। १९८७ ई० में पूज्य स्वामी जी ने अपनी देहलीला पूर्ण की। उनके निधन के बाद मठ के **अधिष्ठाता श्री शालिग्राम जी पराशर** तथा अन्य पदाधिकारी आर्य जनता के सहयोग से इस उत्तरदायित्व का निर्वाह पूर्ण निष्ठा एवं तत्परता से निरन्तर कर रहे हैं।

मठ में आर्य अतिथियों के रात्री-निवास, भोजन आदि की समुचित व्यवस्था है। प्रतिदिन सन्ध्या-हवन के अतिरिक्त पौर्णमासी, अमावस्या तथा सभी संक्रान्तियों पर विशेष यज्ञ एवं प्रवचनों का आयोजन किया जाता है। वार्षिक उत्सव, वेद प्रचार सप्ताह, ऋषिबोधोत्सव, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आदि का आयोजन विशाल स्तर पर किया जाता है। इन कार्यक्रमों में उपस्थिति के लिए **मठ के माननीय प्रधान, महर्षि दयानन्द तथा वेद के दीवाने सेठ श्री कुन्दन लाल जी अग्रवाल** मठ के अन्य पदाधिकारियों को साथ लेकर नगर के प्रतिष्ठित लोगों से व्यक्तिगत सम्पर्क करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक **यज्ञ-महिमा** को इस नये रूप में प्रकाशित करने में गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर के प्रथम स्नातक तथा वर्तमान में दोआबा कालेज, जालंधर के प्रिंसीपल डा० नरेश कुमार धीमान का हमें विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है। उन्होंने कम्प्यूटर पर स्वयं ही इसकी सस्वर कम्पोजिंग तथा साज-सज्जा करके मठ का अर्थभार भी कम किया है। हम विशेष रूप से उनका आभार प्रकट करते हैं। इससे पूर्व यज्ञ-महिमा के ग्यारह संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं, यह बारहवाँ संशोधित संस्करण है। लागत से भी कम मूल्य पर प्रचारित यह पुस्तक यज्ञ तथा यज्ञ-भावना के प्रसार में अवश्य सहायक होगी। धन्यवाद सहित।

-यशपाल आर्य
(महामन्त्री- दयानन्द मठ)

॥ओ३म्॥

प्रातः काल पाठ करने योग्य मन्त्र

सदा स्त्री-पुरुष रात्री के दस बजे शयन और रात्री के पिछले प्रहर अथवा चार बजे उठकर ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना किया करें, जिससे परमेश्वर की कृपादृष्टि और सहाय से महा-कठिन कार्य भी सुगमता से सिद्ध हो सकें। इसके लिए निम्नलिखित मन्त्र हैं—

ओ३म्। प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे
प्रातर् मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर् भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं
प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम॥ १ ॥

अर्थ— हम प्रतिदिन **प्रातः**= प्रभातवेला में **अग्निम्**= प्रकाशस्वरूप परमेश्वर की, **प्रातः**= प्रातः काल के समय **इन्द्रम्**= परमैश्वर्ययुक्त परमात्मा की, **प्रातः**= प्रातः काल के समय **मित्रावरुणा**= सबके मित्र और वरणीय सबसे श्रेष्ठ प्रभु की तथा **प्रातः**= प्रातः काल के समय **अश्विना**= सर्वत्र व्यापक परम प्रभु तथा उसकी महती शक्ति की **हवामहे**=स्तुति करते हैं। **प्रातः**=प्रातः काल की शान्त वेला में **भगम्**=सौभाग्य प्रदान करनेवाले, सबके भजनीय सेवनीय, **पूषणम्**=सब जगत् का पोषण करनेवाले, **ब्रह्मणस्पतिम्**=ब्रह्माण्ड के पालनकर्ता की, **प्रातः**= प्रातः काल के समय **सोमम्**=शान्ति के भण्डार, सौम्यस्वरूप **उत**=और **रुद्रम्**= दुष्टों को दण्ड देनेवाले प्रभु की हम **हुवेम**= स्तुति-प्रार्थना करते हैं॥ १ ॥

प्रातर् जितं भगमुग्रं हुवेम वयं
पुत्रमदितेर् यो विधर्ता।
आध्रश्चिद् यं मन्यमानस् तुरश्चिद् राजा
चिद् यं भगं भक्षीत्याह॥ २ ॥

अर्थ— **प्रातः**=ब्राह्म मुहूर्त में **जितम्**=जयशील, **भगम्**= ऐश्वर्य के दाता, **उग्रम्**= तेजस्वी, **अदितेः**= समस्त ब्रह्माण्ड के **पुत्रम्**= पवित्र करनेवाले, **यः**= जो **विधर्ता**= विविध प्रकार से धारण करनेवाला प्रभु है, उसकी **वयम्**= हम लोग **हुवेम**= स्तुति करते हैं। **आध्रः**= जो सब ओर से धारण करनेवाला, **यम् चित्**=जिस किसी भी पदार्थ का **मन्यमानः**= जाननेवाला, **तुरश्चित्**= दुष्टों को दण्ड देनेवाला, **राजा**= प्रकाशस्वरूप प्रभु है,**यम् चित्**=जिस **भगम्**= भजन करने योग्य स्वरूप का **भक्षि इति**= मैं सेवन करता हूँ, स्तुति करता हूँ और उसी की उपासना के लिए **आह**= मैं उपदेश करता हूँ॥ २॥

भग प्रणेतर् भग सत्यराधो
भगेमां धियमुदवा ददन् नः।
भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्
भग प्र नृभिर् नृवन्तः स्याम॥ ३॥

अर्थ— हे **भग**=भजनीयस्वरूप प्रभो! **प्रणेतः**=हे सबके उत्पादक, सत्य-व्यवहार में प्रेरक! **भग**=हे ऐश्वर्य प्रदाता! तू ही **सत्यराधः**=मोक्ष रूपी अविनाशी धन का देनेवाला है। **भग**=हे ऐश्वर्य के दानी! आप **नः**=हमें **इमाम् धियम्**=इस ऐश्वर्य की इच्छुक बुद्धि को **ददत्**=प्रदान करते हुए उसके दान से हमारी **उत् अव**=उत्तमता से रक्षा करें। **भग**=हे ऐश्वर्यशालिन्! आप **नः**=हमें **गोभिः**=गो आदि तथा **अश्वैः**=घोड़े आदि उत्तम पशुओं से **प्रजनय**=युक्त कीजिए। **भग**=हे सकल ऐश्वर्य के स्वामी प्रभो! आपकी कृपा से हम लोग **नृभिः**=उत्तम मनुष्यों के सम्बन्ध से **नृवन्तः**=श्रेष्ठ एवं वीर पुरुषोंवाले **प्र स्याम**=होवें अर्थात् हम वीर सन्ततिवाले हों॥ ३॥

उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत
प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं
देवानां सुमतौ स्याम॥ ४॥

अर्थ— हे भगवन्! आपकी कृपा **उत**=और अपने पुरुषार्थ से

इदानीम्=अब इस **सूर्यस्य**=सूर्य के **उदितौ**=उदय काल—पूर्वाह्ण में **भगवन्तः**=हम ऐश्वर्यशाली **स्याम** =हों **उत**=और **मध्ये अह्नाम्**=दिन के मध्य भाग—मध्याह्न में ऐश्वर्य से युक्त हों **उत**=तथा **प्रपित्वे**=सूर्यास्त के समय—सायं काल में ऐश्वर्य से युक्त हों। **उत**=और **मघवन्**=हे परम पूजित, असंख्य धन के देनेवाले परमात्मन्! **वयम्**=हम लोग **देवानाम्**=दिव्यगुणी मनुष्यों के **सुमतौ**=सत्परामर्श में **स्याम**=सदा रहें अर्थात् वे सदा हमारा मार्गदर्शन करते रहें॥ ४॥

भग एव भगवाँ अस्तु
देवास् तेन वयं भगवन्तः स्याम ।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति
स नो भग पुरएता भवेह॥ ५॥

अर्थ— भगवान्=सकल ऐश्वर्य का स्वामी परमात्मा **एव**=ही हमारा **भगः**=ऐश्वर्य **अस्तु**=बन जाए अर्थात् हे प्रभो! हम तुझसे तुझको ही माँगते हैं। **तेन**=तेरे इस कृपाकटाक्ष से **वयम्**=हम **भगवन्तः**=ऐश्वर्यवान् होकर **देवाः**=दिव्य दानशील स्वभाववाले अर्थात् लोकोपकारी **स्याम**=बन जाएँ। **भग**=हे सौभाग्य के दानी प्रभो! ऐसी कृपा करनेवाले **तम्**=उस **त्वा**=तुझ को **सर्वः**=सब उपासक लोग **इत्**=निश्चय ही **जोहवीति**=बार-बार पुकारते हैं। **भग**=हे परम ऐश्वर्य के स्वामिन् परमात्मन्! **सः**=वह तू **इह**=इस भवसागर में **नः**=हमारा **पुरएता**=मार्गदर्शक पुरोहित सदा ही **भव**=बने रहना॥ ५॥ —ऋग्वेद ७.४१.१-५

रात्री में सोते समय पाठ करने योग्य मन्त्र

रात्री में सोते समय बुरे स्वप्न न आएँ, किसी प्रकार का भय न लगे और सुखपूर्वक नींद आए एतदर्थ *शिव-संकल्प मन्त्रों* के नाम से प्रसिद्ध *शान्तिकरण मन्त्र* संख्या २०-२५ तक के मन्त्रों का अर्थ सहित पाठ करना चाहिए। देखें पृष्ठ सं० 76-78 तक।

युगपुरुष दयानन्द

हे युगद्रष्टा ! हे युगस्रष्टा !
नवयुग नायक, युग-ऋषि महान् !
जन-जन-मानस के मान्य मुनि,
युग के युग-युग तक हों प्रणाम !

हे ब्रह्मचर्य प्रतिमा अनुपम, हे वेदपुरुष वैदिक प्रमाण !
तुम थे वेदों से प्राणवान् या वेद तुम्हीं से? हूँ अजान॥
हे वेदसिद्ध, हे कर्मनिष्ठ, हे लौहपुरुष कोमल उदार !
तुम द्रवित हृदय धर्मावतार, पीड़ित शोषित जन की पुकार॥

तेरे सद्भावों के रवि से, ज्यों ओस लुप्त त्यों एक साथ।
क्या ऊँच-नीच क्या छूत-छात, सब भेदभाव सब जात-पात॥
जिस ओर तुम्हारे बढ़े कदम, समरसता की फूटी बयार।
कट गए अविद्या बन्ध विकट, पाखण्ड कुरीति अन्ध जाल॥

शिक्षा - समानता - स्वाभिमान, पाकर नारी लहलहा उठी।
मानवता में कोंपल फूटी, सामाजिकता मुस्करा उठी॥
तुम मूक प्राणियों की वाणी, विधवा की आँखों के चिराग।
तुम थे स्वराज्य प्रथमोद्घोष, स्वातन्त्र्य-समर के रौद्र-राग॥

वैदिक संस्कृति के विमल मन्त्र, नव-राष्ट्र-चेतना-उषःराग।
सत्यार्थ-प्रकाशक सत्यनिष्ठ, एकेश उपासक वीतराग॥
हे भस्मकाम पूर्णाप्तकाम, तुम चिर-नवीन तुम चिर-पुराण।
आचरणसिद्ध आचार्यवृद्ध, तुम दिव्य कर्म तुम दिव्य ज्ञान॥

हे शान्तिशील! हे क्रान्तिदूत!
गंगा की पावन विमल धार।
आनन्दकन्द यति दयानन्द,
नत-नयन-कोटिजन नमस्कार॥

ब्रह्मयज्ञ : वैदिक सन्ध्या

रात और दिन के संयोग -समय दोनों सन्ध्याओं में सब मनुष्यों को परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करनी चाहिए।

—पञ्चमहायज्ञविधि

जैसे समाधिस्थ होकर योगी लोग परमात्मा का ध्यान करते हैं, वैसे ही सन्ध्या करनी चाहिए।

—सत्यार्थप्रकाश

ब्रह्मयज्ञ : वैदिक सन्ध्या

गायत्री-मन्त्र (१)

सर्वप्रथम गायत्री-मन्त्र का उच्चारण करके शिखा-बन्धन अर्थात् अपने केशों को सुरक्षित करें:

ओ३म्। भूर् भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

–यजुर्वेद ३६.३

भावार्थ– हे सर्वरक्षक, प्राणाधार, दुःखविनाशक, सुखस्वरूप, सत्-चित्-आनन्दघन-परमात्मन्! आप सकल जड़-चेतन-जगत् के उत्पन्न करनेवाले, दिव्यगुणयुक्त, परम दयालु देव हैं। हम आपके वरण करने योग्य उस 'भर्ग' नामक तेज का ध्यान करते हैं; जो भर्ग-तेज हमारे सूक्ष्म, स्थूल और कारण शरीर में उत्पन्न होनेवाले समस्त पापों का भर्जन करनेवाला है—भून देनेवाला है, जो आत्मिक-मानसिक-शारीरिक सभी दोषों को जला देनेवाला है। वह धारण किया हुआ तेज हमारी बुद्धियों, कर्मों, प्राणशक्ति और वाणी को सदा सन्मार्ग पर प्रेरित करे।

हे सर्वप्रेरक, सकल ऐश्वर्य के स्वामी, जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति दिलानेवाले, सर्व-प्रकाशक, सविता-पिता! हमारी बुद्धि आपसे कभी विमुख न हो। आप हमारी बुद्धियों में सदैव प्रकाशित रहें। हम पर अपनी अमोघ कृपा-दृष्टि की वृष्टि सदैव सर्वत्र करते रहें। हे करुणानिधान! मुझ उपासक की इस विनम्र प्रार्थना को स्वीकार करें तथा इस अबोध का सब प्रकार से कल्याण एवं उद्धार करें॥

आचमन-मन्त्र (२)

आचमन-पात्र से दाँए हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र द्वारा प्रभु से सुख की कामना करते हुए तीन आचमन करें :

ओ३म्। शन्नो॒ दे॒वीर॒भिष्ट॑य॒ ऽ आपो॑ भवन्तु पी॒तये॑। शँयोर॒भिस्र॑वन्तु नः॥ —यजुर्वेद ३६.१२

भावार्थ– हे सर्वरक्षक सर्वप्रकाशक प्रभो! आप हमारे लिए अभीष्ट सुखकारक, पूर्ण आनन्द के देनेवाले तथा कल्याणकारक होवें; और अपने परमानन्द की हम पर सब ओर से सदा वर्षा कीजिए अर्थात् हमें शान्ति प्रदान कीजिए॥

अङ्ग-स्पर्श-मन्त्र (३)

बाँए हाथ की हथेली में जल लेकर, दाँए हाथ की बीच की दो अंगुलियों मध्यमा और अनामिका से जल का स्पर्श करके, नीचे लिखे मन्त्रों से पहले दाँए अंग का फिर बाँए अंग का स्पर्श करते हुए इन्द्रियों की स्वस्थता तथा दृढ़ता के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें :

ओ३म् वाक् वाक्। —इस मन्त्र से मुख का दायाँ और बाँया भाग

ओ३म् प्राणः प्राणः। —इससे नासिका का दायाँ और बाँया छिद्र

ओ३म् चक्षुः चक्षुः। —इस मन्त्र से दायाँ और बाँया नेत्र

ओ३म् श्रोत्रं श्रोत्रम्। —इस मन्त्र से दायाँ और बाँया कान

ओ३म् नाभिः। —इस मन्त्र से नाभि

ओ३म् हृदयम्। —इस मन्त्र से हृदय

ओ३म् कण्ठः। —इस मन्त्र से कण्ठ

ओ३म् शिरः। —इस मन्त्र से मस्तक

ओ३म् बाहुभ्यां यशोबलम्। —इससे दायाँ-बाँया कन्धा

ओ३म् करतल-करपृष्ठे। —इस मन्त्र से दोनों हाथों की हथेलियों तथा हाथ के उपरि भाग का स्पर्श करें।

भावार्थ– हे परमेश्वर! आपकी कृपा से मेरी वाणी और रसना, प्राण-अपान, दोनों नेत्र, दोनों कान, नाभि अर्थात् प्रजनन-केन्द्र, हृदय, कण्ठ, शिर, दोनों भुजाएँ, दोनों हाथों की हथेलियाँ तथा उनका उपरि भाग – सभी अङ्ग सुदृढ़,यश और बल से युक्त हों॥

मार्जन-मन्त्र (४)

बाएँ हाथ की हथेली में जल लेकर दाहिने हाथ की बीच की दो अंगुलियों मध्यमा और अनामिका से जल का स्पर्श करके, नीचे लिखे मन्त्रों से शिर आदि अंगों पर जल छिड़कते हुए इन अंगों की पवित्रता के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें :

ओ३म् भूः पुनातु शिरसि। –इससे शिर पर

ओ३म् भुवः पुनातु नेत्रयोः। –इससे दोनों नेत्रों पर

ओ३म् स्वः पुनातु कण्ठे। –इससे कण्ठ पर

ओ३म् महः पुनातु हृदये। –इससे हृदय पर

ओ३म् जनः पुनातु नाभ्याम्। –इससे नाभि पर

ओ३म् तपः पुनातु पादयोः। –इससे दोनों पैरों पर

ओ३म् सत्यं पुनातु पुनः शिरसि। –इससे पुनः शिर पर

ओ३म् खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र। –इससे सब अंगों पर

भावार्थ– हे सत्यस्वरूप प्रभु! हमारा शिर पवित्र कीजिए। हे चित्-स्वरूप प्रभु! हमारी दोनों आँखें पवित्र कीजिए। हे आनन्दस्वरूप प्रभु! हमारा कण्ठ पवित्र कीजिए। हे सर्वपूज्य! हमारा हृदय पवित्र कीजिए। हे सब जगत् के उत्पादक! हमारी नाभि पवित्र रखिए। हे दुष्टों के लिए सन्तापकारी! हमारे पैरों को पवित्र रखिए। हे सत्य अविनाशी ब्रह्म! हमारी बार-बार प्रार्थना है कि हमारे मस्तिष्क को पवित्र रखिए। हे सर्वव्यापक! हमारे सब अङ्गों को सदा-सर्वथा पवित्र रखने की कृपा कीजिए॥

प्राणायाम-मन्त्र (५)

ओ३म् भूः। ओ३म् भुवः। ओ३म् स्वः।
ओ३म् महः। ओ३म् जनः। ओ३म् तपः।
ओ३म् सत्यम् । — तैत्तिरीय संहिता १.२७

भावार्थ– हे सर्वरक्षक परमात्मा! आप प्राणों का प्राण, दुःखविनाशक, सुखस्वरूप, सर्वमहान्, सब जगत् के उत्पादक, दुष्टों के लिए सन्तापकारी तथा अविनाशी होने से सदा सत्यस्वरूप हैं। आपके इन शुभ गुणों का हम चिन्तन करते हैं॥

विशेष सूचना– इन मन्त्रों के उच्चारण तथा अर्थविचार-पूर्वक कम-से-कम तीन प्राणायाम करें। प्राणायाम की सर्वसामान्य विधि इस प्रकार है :

भीतर की वायु को बलपूर्वक नासिका द्वारा बाहर फैंककर श्वास को यथाशक्ति बाहर ही रोकें। पुनः धीरे-धीरे श्वास को भीतर लेकर यथाशक्ति भीतर ही रोकें। पुनः श्वास को बलपूर्वक बाहर फैंक देवें। यह एक प्राणायाम हुआ। इसी प्रकार कम-से-कम तीन प्रणायाम करें। ***प्राणायाम में जबरदस्ती कभी नहीं करनी चाहिए*** अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि होने की अधिक सम्भावना रहती है। मन को शुद्ध, पवित्र और एकाग्र करने तथा शरीर केअन्दर के सूक्ष्म दोषों को दग्ध करने के लिए प्राणायाम सबसे अधिक लाभकारी है।

अघमर्षण-मन्त्र (६)

निम्न मन्त्रों के द्वारा प्रभु की सर्व-व्यापकता, शक्तिमत्ता, न्यायकारिता और सृष्टिरचना का चिन्तन करते हुए रात्री में किए पापों का प्रातः काल तथा दिन में किए पापों का सायंकाल पश्चात्ताप करना चाहिए। उपासक को यह प्रयत्न भी करना चाहिए कि ये पाप भविष्य में न दोहराए जाएँ :

ओ३म्। ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो ऽ अर्णवः॥ १ ॥ —ऋग्वेद १०.१९०.१

भावार्थ– हे सर्वशक्तिमान् परमेश्वर! आप के ज्ञानमय सामर्थ्य से ही सब विद्याओं का ख़ज़ाना वेद प्रकट हुआ। आपकेही अनन्त सामर्थ्य से सब जगत् की कारणभूत सत्त्व-रजस्-तमस् गुण युक्त प्रकृति कार्यरूप में प्रकट हुई। आपने ही प्रलय-कालरूपी महारात्री, मेघमण्डल तथा समुद्र आदि बनाए॥ १॥

समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो ऽअजायत। अहोरात्राणि विदधद् विश्वस्य मिषतो वशी॥ २॥ —ऋग्वेद १०.१९०.२

भावार्थ–हे परमेश्वर! आपने ही मेघमण्डल तथा जल बनाने के पश्चात् दिन और रात आदि को बनाकर संवत्सर अर्थात् क्षण, मुहूर्त, प्रहर आदि में विभक्त काल को उत्पन्न किया। आपने ही अपने सहज स्वभाव के अनुसार सकल ब्रह्माण्ड को अपने वश में रखा हुआ है॥ २॥

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥ ३॥

—ऋग्वेद १०.१९०.३

भावार्थ–हे सब जगत् के धारण करनेवाले ज्ञानमय प्रभु! आपने ही अपने अनन्त सामर्थ्य से सूर्य, चन्द्र, द्यु-लोक, पृथिवी-लोक, अन्तरिक्ष-लोक तथा अन्य लोक-लोकान्तरों एवं उन लोकों के सुखविशेष के पदार्थों को पूर्व कल्प में जैसी सृष्टि-रचना की थी उसीके अनुसार बनाया है॥ ३॥

आचमन-मन्त्र (७)

आचमन-पात्र से दाँए हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र द्वारा प्रभु से सुख की कामना करते हुए तीन आचमन करें :

ओ३म्। शन्नो देवीरभिष्टय ऽ आपो भवन्तु पीतये। शँयोरभिस्त्रवन्तु नः॥ —यजुर्वेद ३६.१२

भावार्थ– हे सर्वरक्षक सर्वप्रकाशक प्रभो! आप हमारे लिए अभीष्ट सुखकारक, पूर्ण आनन्द के देनेवाले तथा कल्याणकारक होवें; और अपने परमानन्द की हम पर सब ओर से सदा वर्षा कीजिए अर्थात् हमें शान्ति प्रदान कीजिए॥

तदनन्तर गायत्री-आदि मन्त्रों का अर्थपूर्वक विचार तथा परमेश्वर के निर्गुण-सगुण स्वरूप का ध्यान करके मनसा-परिक्रमा मन्त्रों से सर्वव्यापक परमात्मा की स्तुति-प्रार्थना करें :

मनसा-परिक्रमा-मन्त्र (८)

'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' सत्यस्वरूप परमात्मा एक ही है, विद्वान् लोग उस एक परमेश्वर को ही 'अग्नि'-'इन्द्र' आदि अनेक नामों से पुकारते हैं। इन मनसा-परिक्रमा-मन्त्रों में भी प्रभु को अनेक नामों से पुकारा गया है। वह एक ही अपनी अनन्त सामर्थ्य से सब दिशाओं में व्यापक है। इन मन्त्रों के अर्थ-चिन्तन द्वारा उसीकी सर्वव्यापकता का अनुभव करें :

ओ३म्। प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस् तं वो जम्भे दध्मः॥ १॥

भावार्थ– हे पूर्व दिशा के स्वामी अग्निस्वरूप परमेश्वर! आप सब प्रकार के बन्धनों से रहित तथा हमारी रक्षा करनेवाले हैं। तुझ अग्निस्वरूप परमात्मा के प्रेरक साधन आदित्य अर्थात् अखण्ड-अविनाशी और प्रकाशमय हैं। ऐसे विलक्षण अधिपति को हमारा नमस्कार है, आपकी रक्षक शक्तियों को नमस्कार है, आपके सर्वप्रेरक साधनों को नमस्कार है— इन सबको हमारा बार-बार नमस्कार है। हे प्रभो! अज्ञानतावश

जो कोई प्राणी हमसे द्वेष करता है अथवा हम किसीसे अज्ञानतावश द्वेष करते हैं, हम अपने इस द्वेष-भाव को आपकी दयापूर्ण न्याय-व्यवस्था के अधीन करते हैं, जिससे हम परस्पर सदैव मित्रवत् व्यवहार करते हुए सन्मार्ग पर आगे बढ़ सकें॥ १॥

दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस् तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस् तं वो जम्भे दध्मः॥ २॥

भावार्थ– हे दक्षिण दिशा के स्वामी ऐश्वर्यशाली परमात्मा! कीट-पतंग भी तुझ रक्षक-इन्द्र-परमात्मा अर्थात् आपकी सृष्टि की शोभा हैं। आपके प्रेरक साधन हमारे पालक हैं। ऐसे विलक्षण अधिपति को हमारा नमस्कार है,आपकी रक्षक शक्तियों को नमस्कार है, आपके सर्वप्रेरक साधनों को नमस्कार है— इन सबको हमारा बार-बार नमस्कार है। हे प्रभो! अज्ञानतावश जो कोई प्राणी हमसे द्वेष करता है अथवा हम किसीसे अज्ञानतावश द्वेष करते हैं, हम अपने इस द्वेष-भाव को आपकी दयापूर्ण न्याय-व्यवस्था के अधीन करते हैं, जिससे हम परस्पर सदैव मित्रवत् व्यवहार करते हुए सन्मार्ग पर आगे बढ़ सकें॥ २॥

प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस् तं वो जम्भे दध्मः॥ ३॥

भावार्थ– हे पश्चिम दिशा के स्वामी वरण-योग्य जगदीश्वर! आप रक्षक-वरुण 'पृदाकु' अर्थात् हमारी न्यूनताओं को पूर्ण करनेवाले, समस्त भोग्य पदार्थों के दाता एवं वेद रूपी काव्य के कवि हैं। तुझ पृदाकु वरुण के प्रेरक साधन अन्न की भाँति सबके पोषक हैं। ऐसे विलक्षण अधिपति को हमारा नमस्कार है, आपकी रक्षक शक्तियों को नमस्कार है, आपके सर्वप्रेरक साधनों को नमस्कार है– इन सबको हमारा बार-बार नमस्कार है। हे प्रभो! अज्ञानतावश जो कोई प्राणी हमसे द्वेष करता है अथवा हम किसीसे अज्ञानतावश द्वेष करते हैं, हम अपने इस द्वेष-भाव को आपकी दयापूर्ण न्याय-व्यवस्था के अधीन करते हैं, जिससे हम परस्पर सदैव मित्रवत् व्यवहार करते हुए सन्मार्ग पर आगे बढ़ सकें॥ ३॥

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽ३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस् तं वो जम्भे दध्मः॥ ४॥

भावार्थ–हे उत्तर की दिशा के स्वामी सोमस्वरूप परमेश्वर! आप स्वयंभू हैं अर्थात् आपका बनानेवाला कोई नहीं है, आप अपनी सत्ता से स्वयं विराजमान हैं। आपके प्रेरक साधन अशनि अर्थात् विद्युत् की भाँति मार्गदर्शक हैं। ऐसे विलक्षण अधिपति को हमारा नमस्कार है, आपकी रक्षक शक्तियों को नमस्कार है, आपके सर्वप्रेरक साधनों को नमस्कार है– इन सबको हमारा बार-बार नमस्कार है। हे प्रभो! अज्ञानतावश जो कोई प्राणी हमसे द्वेष करता है अथवा हम किसीसे अज्ञानतावश द्वेष करते हैं, हम अपने इस द्वेष-भाव को आपकी दयापूर्ण न्याय-व्यवस्था के अधीन करते हैं, जिससे हम परस्पर सदैव मित्रवत् व्यवहार करते हुए सन्मार्ग पर आगे बढ़ सकें॥ ४॥

ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस् तं वो जम्भे दध्मः॥ ५॥

भावार्थ– हे दृढ आधारवाली इस पृथिवी-दिशा के स्वामी, सर्वव्यापक विष्णु परमेश्वर! आप अनन्त ज्ञान से भूषित कण्ठवाले हैं, जिस कण्ठ से मनुष्यमात्र के कल्याण के लिए वेद के रूप में ज्ञान का शाश्वत स्रोत फूटा। तुझ विष्णु के प्रेरक साधन 'वीरुध' अर्थात् विशेषरूप से उन्नति के मार्ग का आरोहण करवानेवाले हैं। ऐसे विलक्षण अधिपति को हमारा नमस्कार है, आपकी रक्षक शक्तियों को नमस्कार है, आपके सर्वप्रेरक साधनों को नमस्कार है– इन सबको हमारा बार-बार नमस्कार है। हे प्रभो! अज्ञानतावश जो कोई प्राणी हमसे द्वेष करता है अथवा हम किसीसे अज्ञानतावश द्वेष करते हैं, हम अपने इस द्वेष-भाव को आपकी दयापूर्ण न्याय-व्यवस्था के अधीन करते हैं, जिससे हम परस्पर सदैव मित्रवत् व्यवहार करते हुए सन्मार्ग पर आगे बढ़ सकें॥ ५॥

ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस् तं वो जम्भे दध्मः॥ ६॥

—अथर्ववेद ३.२७.१-६

भावार्थ– हे ऊपर की दिशा के स्वामी, वेदवाणी के प्रकाशक,

बृहस्पति परमेश्वर! आप श्वेत-शुद्ध ज्ञानवाले हैं। आपके प्रेरक साधन हम पर निरन्तर आनन्द की वर्षा करनेवाले हैं। ऐसे विलक्षण अधिपति को हमारा नमस्कार है, आपकी रक्षक शक्तियों को नमस्कार है, आपके सर्वप्रेरक साधनों को नमस्कार है— इन सबको हमारा बार-बार नमस्कार है। हे प्रभो! अज्ञानतावश जो कोई प्राणी हमसे द्वेष करता है अथवा हम किसीसे अज्ञानतावश द्वेष करते हैं, हम अपने इस द्वेष-भाव को आपकी दयापूर्ण न्याय-व्यवस्था के अधीन करते हैं, जिससे हम परस्पर सदैव मित्रवत् व्यवहार करते हुए सन्मार्ग पर आगे बढ़ सकें॥ ६॥

उपस्थान-मन्त्र (९)

इसके पश्चात् नीचे लिखे उपस्थान-मन्त्रों के अर्थ-चिन्तन-पूर्वक उपस्थान करें अर्थात् परमेश्वर के अति निकट मैं तथा मेरे अति निकट परमेश्वर है, ऐसी बुद्धि करते हुए सर्वरक्षक-सर्वशक्तिमान् प्रभु की गोद में स्वयं को सुरक्षित अनुभव करें :

ओ३म्। उद् वयं तमसस् परि स्वः पश्यन्त ऽ उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥ १॥ —यजुर्वेद ३५.१४

भावार्थ— हे जगत्-पिता! हम उपासकगण आपको अविद्या-अन्धकार से परे, उत्कृष्ट-उत्कृष्टतर-उत्कृष्टतम, आनन्दस्वरूप, दिव्य-प्रकाशमय, विद्वानों के रक्षक, चराचर जगत् को गति देनेवाला तथा ज्योतिः-स्वरूप जानते हुए आपकी शरण को प्राप्त करते हैं॥ १॥

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्॥ २॥ —यजर्वेद ३३.३१

भावार्थ— हे प्रभु! आप वेद के रूप में ज्ञान को उत्पन्न करनेवाले, दिव्य-गुणयुक्त तथा समस्त जड़-चेतन-जगत् के प्रेरक हैं। आप कृपा पूर्वक ज्ञान-प्राप्ति के इच्छुक हम लोगों को विश्व-दर्शन अर्थात्

संसार के आमूल-चूल ज्ञान की प्राप्ति के लिए वेद की श्रुतियों का ज्ञान कराइए॥ २॥

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर् मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी ऽ अन्तरिक्षꣳ सूर्यऽऽआत्मा जगतस् तस्थुषश्च स्वाहा॥ ३॥

–यजुर्वेद ७.४२

भावार्थ– हे जगदीश! आप सकल जगत् के उत्पादक तथा प्रेरक हैं। आप जड़ और चेतन जगत् के आत्मा हैं। आप ही द्यु-लोक, पृथिवी-लोक तथा अन्तरिक्ष-लोक को चारों ओर से व्याप्त कर रहे हैं। आप ही जल, वायु, सूर्य,अग्नि आदि पदार्थों के प्रकाशक हैं, प्रकाश के अद्‌भुत पुञ्ज हैं। हे प्रभु! आप हमारे हृदयों में सदा प्रकाशित रहें—यही हमारी हार्दिक कामना है॥ ३॥

तच्चक्षुर् देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥ ४॥

–यजुर्वेद ३६.२४

भावार्थ– हे करुणासागर प्रभु! आप सब लोक-लोकान्तरों के प्रकाशक चक्षु, देव-बुद्धिवाले मनुष्यों के परम हितकारी, सृष्टि-उत्पत्ति से पूर्व तथा सृष्टि-प्रलय के पश्चात् भी वर्तमान, सृष्टि के कारणभूत, शुद्ध एवं पवित्र हैं। हे परम पिता! आपकी कृपा से हम तुझ परम ब्रह्म तथा आपकी अद्‌भुत सृष्टि को अपनी आन्तर एवं बाह्य आँखों से सौ वर्षों तक अर्थात् पूर्ण आयु तक देखें। हम सौ वर्षों तक प्राण धारण करें। हम

अपने कानों से सौ वर्षों तक आपका ही गुण-कीर्तन सुनें और अपनी वाणी से दूसरों को भी आपके ही स्वरूप का उपदेश सौ वर्षों तक करें। सौ वर्षों तक हम किसी के सामने दीन-हीन न बनें। हे दयालु देव! आपकी आज्ञा-पालन में विचरण करते हुए ही आपकी कृपा से हम सौ वर्षों के बाद भी देखें, जीएँ, सुनें, सुनाएँ और स्वतन्त्र रहें। हम किसी के अधीन न रहें, सदैव स्वाभिमानी होकर ही अपना जीवन व्यतीत करें। हम पूर्ण आयु आपकी कृपा से स्वस्थ शरीर, दृढ़ इन्द्रिय तथा शुद्ध मनवाले होकर अपने आत्मा में सदा आनन्दित रहें॥ ४॥

गायत्री-मन्त्र (१०)

ओ३म्। भूर् भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

—यजुर्वेद ३६.३

भावार्थ— हे सर्वरक्षक परमात्मा! ओम् आपका निज नाम है। आप सर्वरक्षक, प्राणाधार, दुःखविनाशक, सुखस्वरूप तथा आनन्द के एकमात्र स्रोत हैं। हे सब जगत् के उत्पन्न करनेवाले, ऐश्वर्यप्रदाता, सबके आत्माओं को प्रकाशित करनेवाले तथा सब गुणों के दाता, परम दयालु देव! आपके अत्यन्त ग्रहण करने योग्य 'भर्ग' नामक शुद्ध विज्ञानस्वरूप को हम अपने आत्मा में धारण करते हैं। हे भर्गस्वरूप भगवन्! आप हमारी बुद्धियों, कर्मों, प्राणशक्ति और वाणी को सदा सन्मार्ग में प्रेरित करें, हम आपसे कभी विमुख न हों॥

समर्पण-मन्त्र (११)

हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादि-कर्मणा धर्मार्थ-काम-मोक्षाणां सद्यः सिद्धिर् भवेन्नः॥

भावार्थ— हे ईश्वर दयानिधे! आपकी कृपा से जो-जो उत्तम काम हम लोग करते हैं, वे सब आपके अर्पण हैं, जिससे हम लोग आपको

प्राप्त होकर **धर्म–** जो सत्य-न्याय का आचरण करना है, **अर्थ–** जो धर्म से पदार्थों को प्राप्त करना है, **काम–** जो धर्म और अर्थ से इष्ट भोगों का सेवन करना है और **मोक्ष–** जो सब दु:खों से छूटकर सदा आनन्द में रहना है– इन चार पदार्थों की सिद्धि हमको शीघ्र प्राप्त हो॥

नमस्कार-मन्त्र (१२)

ओ३म्। नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

—यजुर्वेद १६.४१

भावार्थ– हे शान्तस्वरूप परम कल्याणकारी तथा सुखस्वरूप प्रभु! आपको मेरा नमस्कार है। हे भक्तों का सर्वविध कल्याण करनेवाले तथा उन्हें सदैव सुख देनेवाले प्रभु! आपको मेरा नमस्कार है। जो निरन्तर सकल जगत् का कल्याण और कल्याण ही किए जा रहा है – ऐसे परम कृपालु मङ्गलमय प्रभु! आपको कृतज्ञता-भाव से पूरित मेरा बार-बार नमस्कार है॥

॥इति ब्रह्मयज्ञः॥

देवयज्ञ-अग्निहोत्र
(दैनिक-हवन)

जब तक होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्तदेश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाए। —सत्यार्थप्रकाश, तृतीय समुल्लास

गायत्री-कीर्तन

ओ३म्। भूर् भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

—यजुर्वेद ३६.३

तूने हमें उत्पन्न किया , पालन कर रहा है तू ।
तुझसे ही पाते प्राण हम, दुखियों के कष्ट हरता है तू ॥
तेरा महान् तेज है , छाया हुआ सभी स्थान ।
सृष्टि की वस्तु–वस्तु में , तू हो रहा है विद्यमान ॥
तेरा ही धरते ध्यान हम , माँगते तेरी दया ।
ईश्वर हमारी बुद्धि को , श्रेष्ठ मार्ग पर चला ॥

॥ ओ३म् ॥

देवयज्ञ-अग्निहोत्र (दैनिक-हवन)

आचमन-मन्त्र (१)

दाँए हाथ की हथेली में जल लेकर, नीचे लिखा एक-एक मन्त्र पढ़कर तीन आचमन करें :

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥

(हथेली में लिया जल पी लें - पहला आचमन पूरा हुआ, हथेली में पुनः जल लें)

ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥

(हथेली में लिया जल पी लें - दूसरा आचमन पूरा हुआ, हथेली में पुनः जल लें)

ओ३म् सत्यं यशः श्रीर् मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥ — तैत्तिरीय संहिता १.३२-३४

(हथेली में लिया जल पी लें - तीसरा आचमन पूरा हुआ)

भावार्थ– हे सर्वरक्षक, अमृतस्वरूप, अविनाशी प्रभो! तू मेरे नीचे का बिछौना है, यह मैं यथार्थ रूप से समझ रहा हूँ। हे नित्य शुद्ध-बुद्ध-मुक्त, शान्तस्वभाव, परमात्मन्! तू ही मेरे ऊपर का ओढ़ना है, यह मैं ठीक-ठीक समझ रहा हूँ। माँ के आँचल की भाँति अपने भक्त-पुत्रों को सदैव अपने रक्षा-कवच में आश्रय देनेवाले प्रभो! आपकी कृपा से मुझमें सत्य भाषण, सत्य व्यवहार, सत्य ज्ञान, यश-कीर्ति, स्वास्थ्य, शोभा, धन, ऐश्वर्य –ये सभी स्थायी आश्रय बनाकर रहें। हे भक्तवत्सल कृपालु देव! मेरी यह हार्दिक कामना है॥

अङ्गस्पर्श-मन्त्र (२)

बाँए हाथ की हथेली में जल लेकर, दाँए हाथ की बीच की दो अंगुलियों से जल का स्पर्श करके, नीचे लिखे मन्त्रों से पहले दाँए अंग का फिर बाँए अंग का स्पर्श करें :

ओ३म् वाङ्म ऽ आस्येऽस्तु ॥ (मुख का स्पर्श करें)

ओ३म् नसोर् मे प्राणोऽस्तु ॥(नासिका का स्पर्श करें)

ओ३म् अक्ष्णोर् मे चक्षुरस्तु ॥

(दोनों आँखों का स्पर्श करें)

ओ३म् कर्णयोर् मे श्रोत्रमस्तु ॥

(दोनों कानों का स्पर्श करें)

ओ३म् बाह्वोर् मे बलमस्तु ॥

(दोनों कंधों का स्पर्श करें)

ओ३म् ऊर्वोर् म ऽ ओजोऽस्तु ॥

(दोनों जंघाओं का स्पर्श करें)

ओ३म् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस् तन्वा मे सह सन्तु ॥ —पारस्कर गृह्यसूत्र १.३.२५

(पूरे शरीर पर जल छिड़कें)

भावार्थ— हे सर्वरक्षक प्रभो! आपकी कृपा से मेरे मुख में वाक्-शक्ति, नासिका में प्राण-शक्ति, आँखों में दर्शन-शक्ति, कानों में श्रवण-शक्ति,भुजाओं में बल-पराक्रम तथा दोनों जंघाओं में दौड़ने और भार वहन करने का सामर्थ्य आजीवन विद्यमान रहे। मेरा शरीर तथा मेरे शरीर के सब अंग-प्रत्यंग, ज्ञानेन्द्रियाँ एवं कर्मेन्द्रियाँ रोग-रहित, दोषमुक्त तथा शक्ति-सम्पन्न हों॥

ईश्वर-स्तुति-प्रार्थना-उपासना-मन्त्र (३)

ओ३म्। विश्वानि देव सवितर् दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥ १ ॥

—यजुर्वेद ३०.३

भावार्थ— हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्य युक्त, शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दु:खों को दूर कर दीजिए। जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं; वह सब हमको प्राप्त कीजिए॥ १ ॥

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ २ ॥

—यजुर्वेद १३.४

भावार्थ— जो स्व-प्रकाशस्वरूप और जिसने प्रकाश करनेवाले सूर्य-चन्द्रमादि पदार्थ उत्पन्न किए हैं, जो उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का प्रसिद्ध स्वामी एक ही चेतनस्वरूप था, जो सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व वर्तमान था, वह इस भूमि और सूर्यादि को धारण कर रहा है, हम लोग उस सुखस्वरूप शुद्ध परमात्मा के लिए ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अतिप्रेम से विशेष भक्ति किया करें॥ २॥

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ३ ॥

—यजुर्वेद २५.१३

भावार्थ— जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर-आत्मा और समाज के बल का देनेवाला, जिसकी सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं और जिसका प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन और न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, जिसका आश्रय ही मोक्ष-सुखदायक है, जिसका न मानना अर्थात् भक्ति

न करना ही मृत्यु आदि दुःख का हेतु है, हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ज्ञान के देनेवाले परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्तःकरण से भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञा-पालन करने में तत्पर रहें॥ ३॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक ऽ इद् राजा जगतो बभूव। य ईशे ऽ अस्य द्विपदश् चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ४॥

–यजुर्वेद २३.३

भावार्थ– जो प्राणवाले और अप्राणिरूप जगत् का अपनी अनन्त महिमा से एक ही विराजमान राजा है, जो मनुष्यादि और गौ आदि प्राणियों के शरीरकी रचना करता है,हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ऐश्वर्य के देनेवाले परमात्मा के लिए अपनी सकल उत्तम सामग्री से विशेष भक्ति करें॥ ४॥

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं येन नाकः। यो ऽ अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ५॥ –यजुर्वेद ३२.६

भावार्थ– जिस परमात्मा ने तीक्ष्ण स्वभाववाले सूर्य आदि और भूमि को धारण किया है, जिस जगदीश्वर ने सुख को धारण किया है और जिस ईश्वर ने दुःख-रहित मोक्ष को धारण किया है,जो आकाश में सब लोक-लोकान्तरों को विशेष मानयुक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, वैसे सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग उस सुखदायक कामना करने योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए विशेष भक्ति करें ॥५ ॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास् ते जुहुमस् तन्नो ऽ अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ ६ ॥–ऋग्वेद १०.१२१.१०

भावार्थ– हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मन्! आपसे भिन्न दूसरा कोई उन-इन-सब उत्पन्न हुए जड़-चेतनादिकों को नहीं तिरस्कार करता है अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। जिस-जिस पदार्थ की कामनावाले हम लोग आपका आश्रय लेवें और वाञ्छा करें उस-उसकी कामना हमारी सिद्ध होवे, जिससे हम लोग धनैश्वर्यों के स्वामी होवें॥ ६॥

स नो बन्धुर् जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवा ऽ अमृतमानशानास् तृतीये धामन्नध्यैरयन्त॥ ७॥

—यजुर्वेद ३२.१०

भावार्थ– हे मनुष्यो! वह परमात्मा अपने लोगों का भ्राता के समान सुखदायक, सकल जगत् का उत्पादक, वह सब कामों का पूर्ण करनेवाला, सम्पूर्ण लोकमात्र और नाम-स्थान-जन्मों को जानता है; और जिस सांसारिक सुख-दु:ख से रहित, नित्यानन्दयुक्त मोक्षस्वरूप धारण करनेवाले परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त होके विद्वान् लोग स्वेच्छा-पूर्वक विचरते हैं; वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है; अपने लोग मिलके सदा उसकी भक्ति किया करें॥ ७॥

अग्ने नय सुपथा राये ऽ अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम ऽ उक्तिं विधेम ॥ ८॥

—यजुर्वेद ४०.१६

भावार्थ– हे स्वप्रकाश, ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाश करनेवाले, सकल सुखदाता परमेश्वर! आप जिससे सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके हम लोगों को विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए अच्छे धर्मयुक्त, आप्त लोगों के मार्ग से सम्पूर्ण प्रज्ञान और उत्तम कर्म प्राप्त कराइए और हमसे कुटिलतायुक्त पापरूप कर्म को दूर कीजिए। इस

कारण हम लोग आपकी बहुत प्रकार की स्तुतिरूप नम्रता-पूर्वक प्रशंसा सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें॥ ८॥

॥ इति ईश्वर-स्तुति-प्रार्थनोपासना-प्रकरणम्॥

प्रार्थना

हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता! समग्र ऐश्वर्य युक्त, शुद्धस्वरूप, सर्व सुखों के दाता परमेश्वर! आपको हमारा बार-बार प्रणाम हो, अगाध श्रद्धा, प्रेम तथा भक्ति से पूरित प्रणाम हो।

हे जगत्-जननी मंगलमयी माँ! आपकी अपार अनुकम्पा से हम सब आपकी चरण-शरण में उपस्थित होकर यह यज्ञ करने के लिए उद्यत हुए हैं। हे दयालु देव! जिस-जिस पवित्र भाव से प्रेरित होकर हम यह यज्ञ कर रहे हैं, प्रभो! हमारी वह-वह मनःकामना पूर्ण हो सके, एतदर्थ हमें बल-बुद्धि-सद्विवेक तथा सत्सामर्थ्य निरन्तर प्रदान करें; तथा सत्पुरुषार्थ के लिए हमें सदा प्रेरित करें ।

हे भक्तवत्सल, करुणामय जगदीश्वर! आपकी कृपा का वरद हस्त हम पर निरन्तर बना रहे, आपके आँचल में बैठकर हम अविचल सुख-शान्ति तथा आनन्द का निरन्तर अनुभव करें, सफलता सदा हमारे चरण चूमे, मानवता से हम कभी न भटकें, प्राणी-मात्र से हमारा प्रेम हो, हम सन्मार्ग पर चलते हुए सदैव यश के भागी बनें, प्रभो! यही आपसे याचना है, स्वीकार करो - स्वीकार करो - स्वीकार करो।

॥ ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ ओ३म् ॥

अग्निहोत्र का सामान्य प्रकरण (दैनिक हवन)

समिधा-चयन (४)

सबसे पहले आम, पीपल, ढाक, बड़, गूलर, बेल आदि की समिधाएँ हवन-कुण्ड में अच्छी प्रकार चयन कर लेवें ।

दीपक-प्रज्वलन (५)

फिर यजमान अपने सामने घी भरकर एक दीपक रखे, उसमें रूई की बत्ती रखे, फिर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर दियासलाई से दीपक प्रज्वलित करे :

ओ३म् भूर् भुवः स्वः ॥ –गोभिल गृह्यसूत्र १.१.११

भावार्थ– हे सर्वरक्षक सत्-चित्-आनन्दस्वरूप प्रभो! भूः-भुवः-स्वः = पृथिवी-अन्तरिक्ष-द्युलोक में विद्यमान अग्नि की प्रतीक रूप इस ज्योति को मैं प्रज्वलित करता हूँ, जिससे इन तीनों लोकों के ज्ञान का प्रकाश मेरे अन्दर हो सके॥ १ ॥

यज्ञकुण्ड में अग्नि-स्थापन (६)

यजमान हवन के चमसे में कपूर रखकर या चमसे में घी से भीगी रूई की बत्ती रखकर, उसे दीपक से जलाकर, नीचे लिखा मन्त्र पढ़े और यज्ञकुण्ड में अग्नि-स्थापन करे :

ओ३म्। भूर् भुवः स्वुर् द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास् ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥

–यजुर्वेद ३.५

इस मन्त्र से यज्ञकुण्ड में अग्नि-स्थापन करके दीपक को यज्ञकुण्ड के उत्तर-पूर्व कोण में स्थापित कर देवें।

भावार्थ– भूः, भुवः, स्वः नामक तीनों लोकों में विद्यमान हे सर्वव्यापक, सर्वरक्षक, ज्योतिःस्वरूप परमेश्वर! 'मैं उच्चता-उदात्तता आदि महिमा में द्युलोक के समान एवं उदारता-सहनशीलता आदि श्रेष्ठ गुणसमूह में पृथिवी के समान हो जाऊँ'— इस कामना से तथा खाद्य अन्नों की प्राप्ति के लिए मैं इस अत्यन्त विस्तृत पृथिवी की पीठ पर हव्य-द्रव्य को सूक्ष्मरूप में सब तक पहुँचानेवाली अग्नि की स्थापना करता हूँ जो पृथिवी सब जड़-चेतन देवों की यजन-स्थली है॥ २॥

अग्नि-प्रदीपन (७)

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर यज्ञकुण्ड में छोटी-छोटी समिधाएँ रखकर स्थापित-अग्नि को प्रदीप्त करें :

ओ३म्। उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सꣳ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे ऽ अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥

–यजुर्वेद १५.५४

भावार्थ– हे दोषों का दहन करनेवाले, प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! मेरे अन्दर ज्ञान का प्रकाश करके अपनी ज्ञानाग्नि से मुझे समृद्ध करें, मुझे बोध करा, जगा और सावधान कर। हे पवित्र इच्छाओं को पूर्ण करनेवाले प्रभु! आप की कृपा से घर में सर्वोत्कृष्ट, सबके मिल-बैठने के स्थान इस यज्ञस्थल में सभी दिव्यगुणवाले विद्वान् और यज्ञ करनेवाले लोग आपस में मिलकर बैठें - सत्संगति करें - परस्पर संवाद द्वारा आत्मविकास करें॥

तीन समिधाएँ अग्नि के अर्पण (८)

आठ-आठ अँगुल की तीन समिधाएँ घी में डुबोकर रख लें, फिर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर एक-एक करके समिधा अग्नि में अर्पित करें :

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस् तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय। चास्मान् प्रजया पशुभिर् ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा॥ इदमग्नये जातवेदसे - इदन्न मम॥ १ ॥

–आश्वलायन गृह्यसूत्र १.१०.१२

(इस मन्त्र से पहली समिधा अर्पित करें)

भावार्थ– हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! यज्ञाग्नि में समर्पित यह समिधा अग्नि का जीवन है। जिस प्रकार इस समिधा से प्रत्येक पदार्थ को प्रकाशित करनेवाली यह अग्नि प्रदीप्त होती है और खूब बढ़ती है, उसी प्रकार आप भी हमें प्रजा, पशु, ब्रह्मतेज, खाने योग्य अन्न तथा खाए हुए अन्न को पचाने योग्य शक्ति से समृद्ध करें —यही हमारी प्रार्थना है। पदार्थमात्र को प्रकाशित करनेवाले प्रभु! लोककल्याण के लिए यह आहुति आपको समर्पित है, इसमें मेरा कोई स्वार्थ नहीं है॥ १॥

ओ३म्। समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर् बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन॥

सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा॥ इदमग्नये जातवेदसे - इदन्न मम॥ २ ॥ –यजुर्वेद ३.१-२

(इन दोनों मन्त्रों से दूसरी समिधा अर्पित करें)

भावार्थ– हे प्रभु! प्रतिदिन प्रातः सायं मैं समिधाओं से इस यज्ञाग्नि को प्रज्वलित करता रहूँ तथा जिस प्रकार अतिथि श्रद्धेय होता है उसी प्रकार पूर्ण श्रद्धाभाव से घृत द्वारा इस अग्नि को प्रदीप्त रखता रहूँ। सामग्री आदि हव्य पदार्थों से इसमें हवन करता रहूँ। सब पदार्थों में विद्यमान तथा पवित्र करनेवाली अग्नि में, उसे और अधिक प्रदीप्त करने

के लिए मैं अच्छी प्रकार तपे हुए घृत की आहुतियाँ देता रहूँ —यही मेरी प्रार्थना है। सर्वप्रकाशक प्रभु! यह आहुति आपको समर्पित है, यह मेरे लिए नहीं है॥ २॥

ओ३म्। तन्त्वा॑ स॒मिद्भि॑रङ्गिरो घृ॒तेन॑ वर्धयामसि। बृ॒हच्छो॑चा यविष्ठ्य॒ स्वाहा॑॥ इदमग्नयेऽङ्गिरसे - इदन्न मम॥ ३॥ –यजुर्वेद ३.३

(इस मन्त्र से तीसरी समिधा अर्पित करें)

भावार्थ– हे प्रभु! आप सब पदार्थों को प्राप्त करानेवाले, सर्वमहान्, सबको पवित्र करनेवाले तथा सर्वशक्तिमान् हैं। आपके इन्हीं गुणों से युक्त आपकी इस अग्नि को मैं समिधाओं तथा घृत की आहुतियों से बढ़ाता हूँ —यही मेरी प्रार्थना है। हे प्राणप्रिय प्रभु! निष्काम भाव से यह आहुति आपको समर्पित है॥ ३॥

घृत की पाँच आहुतियाँ (९)

नीचे लिखे मन्त्र को एक बार पढ़कर घी की एक आहुति दें। इस प्रक्रिया को पाँच बार दोहराएँ अर्थात् एक-एक करके **पाँच बार मन्त्र पढ़कर घी की कुल पाँच आहुतियाँ दें :**

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस् तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय। चास्मान् प्रजया पशुभिर् ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा॥ इदमग्नये जातवेदसे - इदन्न मम॥ १॥

–आश्वलायन गृह्यसूत्र १.१०.१२

भावार्थ– हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! यज्ञाग्नि में समर्पित यह समिधा अग्नि का जीवन है। जिस प्रकार इस समिधा से प्रत्येक पदार्थ को प्रकाशित करनेवाली यह अग्नि प्रदीप्त होती है और खूब बढ़ती है, उसी

प्रकार आप भी हमें प्रजा, पशु, ब्रह्मतेज, खाने योग्य अन्न तथा खाए हुए अन्न को पचाने योग्य शक्ति से समृद्ध करें —यही हमारी प्रार्थना है। सर्वप्रकाशक प्रभु! यह आहुति आपको समर्पित है, यह मेरे लिए नहीं है॥

जल-प्रसेचन (१०)

दाएँ हाथ की अंजली में जल लेकर, नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर **यज्ञकुण्ड की पूर्व दिशा में** *दक्षिण से उत्तर की ओर* जल छिड़कें:

ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व॥ –गोभिल गृह्यसूत्र १.३.१

भावार्थ– हे अखण्ड-एकरस परमेश्वर! आप हमें यज्ञ के अनुकूल बुद्धि प्रदान करें, जिससे हम जल द्वारा यज्ञ का मार्ग प्रशस्त कर सकें॥

दाएँ हाथ की अंजली में जल लेकर, नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर **यज्ञकुण्ड की पश्चिम दिशा में** *दक्षिण से उत्तर की ओर* जल छिड़कें:

ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व॥ –गोभिल गृह्यसूत्र १.३.२

भावार्थ– हे अनुमानगम्य परमेश्वर! आप हमें यज्ञ के अनुकूल बुद्धि प्रदान करें, जिससे हम याज्ञिकबुद्धि होकर वेद-विहित धर्म का पालन कर सकें॥

दाएँ हाथ की अंजली में जल लेकर,नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर **यज्ञकुण्ड की उत्तर दिशा में** *पश्चिम से पूर्व की ओर* जल छिड़कें :

ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व॥ –गोभिल गृह्य० १.३.३

भावार्थ– हे ज्ञान के शाश्वत स्रोत प्रभु! आप हमें यज्ञ के अनुकूल ज्ञान प्रदान करें, जिससे हम पवित्र ज्ञानवाले होकर निष्काम भाव से यज्ञ आदि शुभ कर्मों का अनुष्ठान कर सकें॥

दाएँ हाथ की अंजली में जल लेकर, नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर यज्ञकुण्ड की *पूर्व दिशा के मध्य से आरम्भ करके* **यज्ञकुण्ड के चारों ओर** जल छिड़कें :

ओ३म्। देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर् वाचं नः स्वदतु॥

–यजुर्वेद ३०.१

भावार्थ– हे सबको उत्पन्न करनेवाले सर्वप्रेरक प्रभु! आप सुख-सौभाग्य की प्राप्ति के लिए प्रत्येक मनुष्य के हृदय में यज्ञ आदि श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा दीजिए तथा यज्ञ के रक्षक यजमान को सब प्रकार से समृद्ध कीजिए। हे दिव्यस्वरूप, वेदवाणी के धारक, ज्ञान द्वारा हमारे जीवनों को पवित्र करनेवाले प्रभु! हमारे ज्ञान को पवित्र कीजिए। हे वाणी के स्वामी परमपिता! हमारी वाणी में मधुरता भर दीजिए॥

घृत की चार आघार-आज्यभाग आहुतियाँ (११)

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर पहली आहुति घृत की धार बाँध कर यज्ञकुण्ड के **उत्तर-भाग में** *पश्चिम से पूर्व की ओर* जलती हुई अग्नि पर देवें :

ओ३म् अग्नये स्वाहा॥ इदमग्नये – इदन्न मम॥ १॥

–यजुर्वेद २२.२७

भावार्थ– हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर! 'मैं भी आपके गुणानुरूप ज्ञानवान् बन जाऊँ' —इस भावना से यह आहुति आपको समर्पित करता

हूँ। हे प्रकाशस्वरूप प्रभु! यह समस्त हव्य-द्रव्य आपका ही प्रदान किया हुआ है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर दूसरी आहुति घृत की धार बाँध कर यज्ञकुण्ड के **दक्षिण-भाग में** पश्चिम से पूर्व की ओर जलती हुई अग्नि पर देवें :

ओ३म् सोमाय स्वाहा॥ इदं सोमाय - इदन्न मम॥ २ ॥

-यजुर्वेद २२.२८

भावार्थ– हे सौम्यस्वरूप परमेश्वर! 'मैं भी आपके गुणानुरूप कान्त, शान्त और सौम्यस्वभाव बन जाऊँ' —इस भावना से यह आहुति आपको समर्पित करता हूँ। हे शान्तस्वरूप परम पिता परमात्मा! यह समस्त हव्य-द्रव्य आपका ही है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥

नीचे लिखे मन्त्रों को पढ़कर **शेष दो आहुतियाँ** घृत की धार बाँध कर **यज्ञकुण्ड के मध्य** में देवें :

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा॥ इदं प्रजापतये - इदन्न मम॥ ३ ॥

-यजुर्वेद २२.३२

भावार्थ– हे प्रजापालक परमेश्वर! 'मैं भी आपके गुणानुरूप प्रजापति बन जाऊँ' —इस भावना से यह आहुति आपको समर्पित करता हूँ। हे प्रजापति! यह समस्त हव्य-द्रव्य आपका ही है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥

ओ३म् इन्द्राय स्वाहा॥ इदमिन्द्राय -इदन्न मम॥ ४ ॥

-यजुर्वेद २२.६

भावार्थ– हे परम ऐश्वर्यशाली परमात्मा! शान्त, कान्त और सौम्यस्वभाव बनने के लिए मैं अपना सर्वस्व आपको अर्पित करता हूँ। हे सौम्यरूप प्रभु! यह समस्त हव्य-द्रव्य आपका ही है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं॥

घृत और सामग्री की आहुतियाँ (१२)

नीचे लिखे मन्त्रों से यजमान घी की तथा दूसरे याजक सामग्री की आहुतियाँ देवें:

(प्रातःकाल की चार आहुतियाँ)

ओ३म्। सूर्यो ज्योतिर् ज्योतिः सूर्यः स्वाहा॥ १ ॥ –यजुर्वेद ३.९

भावार्थ– हे प्रभु ! आप सकल चराचर जगत् के आत्मा, प्रकाशकों के भी प्रकाशक तथा सर्वप्रेरक हैं। हे प्रभु ! निःस्वार्थ भाव से यह आहुति आपको श्रद्धापूर्वक समर्पित करता हूँ॥ १ ॥

ओ३म्। सूर्यो वर्चो ज्योतिर् वर्चः स्वाहा॥ २ ॥ –यजुर्वेद ३.९

भावार्थ– हे प्रभु ! आप प्रकाशस्वरूप, ज्ञान के शाश्वत स्रोत तथा ज्ञानियों को भी ज्ञान देनेवाले हैं। हे प्रियतम देव! लोक-कल्याण के लिए यह आहुति आपको विनम्र भाव से समर्पित करता हूँ॥ २ ॥

ओ३म्। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ ३ ॥ –यजुर्वेद ३.९

भावार्थ– हे ज्योतिःस्वरूप परमात्मा ! आप स्वयं प्रकाशमान तथा सूर्य आदि के भी प्रकाशक हैं। हे परम पिता परमेश्वर! यह आहुति लोक-कल्याण के लिए निःस्वार्थभाव से आपको सादर समर्पित करता हूँ ॥ ३ ॥

ओ३म्। सजूर् देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या। जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥ ४ ॥ –यजुर्वेद ३.१०

भावार्थ– हे प्रभु! आप समस्त चराचर जगत् की प्रकाशक तथा प्रेरक शक्तियों से स्वयं सम्पन्न हैं और ऐश्वर्यशालिनी उषा से इस जगत् को संयुक्त करते हैं। सबसे प्रीति करनेवाले , सबके अंग-अंग में व्याप्त, सर्वान्तर्यामी प्रभु! आप अपने कृपाकटाक्ष से मुझमें व्याप्त हो जाएँ और अपनी ज्योति से मेरे हृदय को आलोकित कर दें। प्रियतम देव! लोक-कल्याण के लिए यह आहुति आपको प्रेमपूर्वक समर्पित करता हूँ॥ ४॥

(सांयकाल की चार आहुतियाँ)

ओ३म् । अग्निर् ज्योतिर् ज्योतिरग्निः स्वाहा॥ १ ॥ –यजुर्वेद ३.९

भावार्थ– हे प्रभु! आप ज्ञानस्वरूप, प्रकाशकों के भी प्रकाशक तथा सबके अग्रणी हैं। प्रियतम देव! लोक-कल्याण के लिए यह आहुति आपको सादर समर्पित करता हूँ॥ १॥

ओ३म्। अग्निर् वर्चो ज्योतिर् वर्चः स्वाहा॥ २ ॥ –यजुर्वेद ३.९

भावार्थ– हे प्रभु! आप प्रकाशस्वरूप, ज्ञानस्वरूप तथा ज्ञानियों के भी ज्ञानदाता हैं। हे भक्तवत्सल, देवाधिदेव प्रभु! लोक-कल्याण के लिए यह आहुति आपको श्रद्धाभाव से सादर समर्पित करता हूँ॥ २॥

ओ३म्। अग्निर् ज्योतिर् ज्योतिरग्निः स्वाहा॥ ३ ॥ –यजुर्वेद ३.९

(इस तीसरे मन्त्र का मन में उच्चारण करके आहुति दें)

भावार्थ– हे प्रभु! आप ज्ञानस्वरूप, प्रकाशकों के भी प्रकाशक तथा सबके अग्रणी हैं। हे प्रियतम देव! लोक-कल्याण के लिए यह आहुति आपको सादर समर्पित करता हूँ॥ ३॥

ओ३म्। सजूर् देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या। जुषाणो ऽ अग्निर् वैतु स्वाहा ॥ ४॥

-यजुर्वेद ३.१०

भावार्थ– हे प्रभु! आप समस्त चराचर जगत् की प्रकाशक तथा प्रेरक शक्तियों से स्वयं सम्पन्न हैं। आप ही ऐश्वर्यशाली चन्द्रमा के प्रकाशवाली रात्री से इस जगत् को संयुक्त करते हैं। सबसे प्रीति करनेवाले , सबके अंग-अंग में व्याप्त होनेवाले, सर्वान्तर्यामी प्रभु! आप अपने कृपाकटाक्ष से मुझमें व्याप्त हो जाएँ और अपनी ज्योति से मेरे हृदय को ज्ञान के प्रकाश से भर दें। हे प्रियतम देव! लोक-कल्याण के लिए यह आहुति आपको निःस्वार्थ भाव से सादर समर्पित करता हूँ॥ ४॥

(प्रातःकाल तथा सायंकाल की आठ सामान्य आहुतियाँ)

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा॥ इदमग्नये प्राणाय - इदन्न मम॥ १ ॥

भावार्थ– हे प्रभु! आप सत्-स्वरूप, प्राणों के प्राण, ज्ञानस्वरूप तथा प्राणदाता हैं। हे प्रकाशस्वरूप, प्राणदाता परमेश्वर! यह आहुति लोक-कल्याण के लिए निःस्वार्थभाव से आपको सादर समर्पित करता हूँ —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ १॥

ओ३म् भुवर् वायवेऽ पानाय स्वाहा ॥ इदं वायवेऽ पानाय - इदन्न मम ॥ २॥

भावार्थ– हे प्रभु! आप चित्-स्वरूप, दुःख-विनाशक, सर्वशक्तिमान् तथा भक्तों के अज्ञान एवं दुःख को दूर करनेवाले हैं। हे अत्यन्त बलवान्, दुःखहर्ता प्रभु! लोक-कल्याण के लिए यह आहुति आपको निःस्वार्थभाव से सादर समर्पित करता हूँ —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ २॥

ओ३म् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ॥ इदमादित्याय व्यानाय -इदन्न मम ॥ ३ ॥

भावार्थ– हे प्रभु! आप आनन्दस्वरूप, अखण्ड-एकरस तथा सर्वव्यापक हैं। हे अखण्डैकरस, कण-कण में व्यापक प्रभु! यह आहुति लोक-कल्याण के लिए निःस्वार्थभाव से आपको सादर समर्पित करता हूँ —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ ३॥

ओ३म्। भूर् भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा॥ इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः -इदन्न मम ॥ ४॥

भावार्थ– हे सत्-चित्-आनन्दस्वरूप प्रभु! आप प्राणों के प्राण, दुःख-विनाशक, सुखस्वरूप, प्रकाश के पुञ्ज, अनन्त बलवान्, अखण्डैकरस, प्राणदाता, दुःखहर्ता तथा सर्वव्यापक हैं। हे ज्ञानस्वरूप, सर्वसमर्थ, अविनाशी, प्राणरूप तथा अज्ञान-अन्धकार को दूर हटानेवाले प्रभु! यह आहुति निःस्वार्थभाव से आपको सादर समर्पित है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ ४॥

ओ३म्। आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर् भुवः स्वरों स्वाहा॥ ५॥

भावार्थ– हे प्रभु! आप सर्वव्यापक, ज्योतिःस्वरूप, परम रसरूप, अविनाशी, सर्वमहान्, प्राणों के प्राण,दुःख-विनाशक तथा सुखस्वरूप हैं। हे परम ब्रह्म परमेश्वर! यह आहुति आपको सादर समर्पित है॥ ५॥

ओ३म्। यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा॥ ६॥

–यजु०३२.१४

भावार्थ– हे सर्वरक्षक, ज्ञानस्वरूप, ज्ञानप्रकाशक प्रभु! सभी विद्वान् लोग तथा ज्ञानी मनुष्य जिस मेधा बुद्धि को प्राप्त करने के लिए सदैव उद्यत रहते हैं; प्रभुवर! उसी मेधा बुद्धि से युक्त कर मुझे भी आज ही मेधावी बना दीजिए —यही मेरी हार्दिक प्रार्थना है, स्वीकार कीजिए। हे दयालु देव! यह आहुति आपको सादर समर्पित है॥ ६॥

ओ३म्। विश्वानि देव सवितर् दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा॥ ७॥

–यजुर्वेद ३०.३

भावार्थ– हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्य युक्त परमेश्वर! आप हमारी उन्नति और सुख के बाधक समस्त दुर्गुणों को दूर कर हमारे अन्दर अभ्युदय तथा निःश्रेयस् की सिद्धि करवानेवाले समस्त शुभ गुणों एवं कर्मों को धारण कराइए। हे प्रभु! यह आहुति आपको सादर समर्पित है ॥ ७॥

ओ३म्। अग्ने नय सुपथा राये ऽ अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम ऽ उक्तिं विधेम स्वाहा॥ ८॥

–यजुर्वेद ४०.१६

भावार्थ– हे ज्ञानस्वरूप प्रभु! आप हमें ऐश्वर्य की प्राप्ति केलिए अच्छे धर्मयुक्त मार्ग से ले चलिए। प्रभुवर! आप हमारे सम्पूर्ण ज्ञान और कर्मों को सदा जानते हैं, अतः हम लोगों को कुटिलतायुक्त पापरूप कर्मों से सदैव दूर कीजिए। हम विनम्रभाव से आपकी बारम्बार स्तुति करते हैं। हे प्रकाशस्वरूप परमात्मा! यह आहुति आपको सप्रेम समर्पित है॥

सामान्य-यज्ञों में अतिरिक्त विधि (१३)

यहाँ तक सामान्य अग्निहोत्र की आहुतियाँ देने के पश्चात् अभीष्ट उद्देश्य के अनुसार :

卐 गायत्री , महामृत्युञ्जय आदि मन्त्रों की आहुतियाँ
卐 वेद के किसी अध्याय या सूक्त के मन्त्रों की आहुतियाँ, पौर्णमासी अथवा अमावस्या यज्ञ की आहुतियाँ
卐 दीपावली आदि पर्वों पर आर्य-पर्व-पद्धति में लिखे गए मन्त्रों की आहुतियाँ
卐 जन्म-दिवस आदि पर विशेष मन्त्र-समूह की आहुतियाँ

—ये सभी आहुतियाँ इसी स्थान पर दी जाती हैं।

गायत्री-मन्त्र की आहुतियाँ

इसके पश्चात् **इच्छानुसार** तीन या अधिक बार नीचे लिखा **गायत्री-मन्त्र** पढ़कर आहुतियाँ देनी चाहिए :

ओ३म्। भूर् भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा॥
–यजुर्वेद ३६.३

भावार्थ– हे सर्वरक्षक, सत्-चित्-आनन्दस्वरूप, सब जगत् के उत्पन्न करनेवाले, ऐश्वर्यप्रदाता, परम दयालु देव! आपके अत्यन्त ग्रहण करने योग्य 'भर्ग' नामक शुद्ध विज्ञानस्वरूप को हम अपने आत्मा में धारण करते हैं। हे भर्गस्वरूप भगवन्! आप हमारी बुद्धियों, कर्मों,प्राणशक्ति और वाणी को सदा सन्मार्ग में प्रेरित करें। हे सविता देव! यह आहुति निःस्वार्थभाव से आपको श्रद्धापूर्वक समर्पित है॥

सूचना– *कुछ लोग दैनिक यज्ञ में **'स्विष्टकृत्-आहुति'** तथा **'प्राजापत्य-आहुति'** भी देते हैं। दैनिक-यज्ञ में ये आहुतियाँ आवश्यक नहीं। अतः महर्षि दयानन्द ने भी इनका विधान नहीं किया। यदि कोई देना चाहे तो पूर्णाहुति से पूर्व निर्दिष्ट विधि से दे। विधि इस प्रकार है :*

स्विष्टकृत् - आहुति (१४)

[भात, घृत अथवा मिष्टान्न की आहुति]

इसके पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर भात, घृत अथवा मिष्टान्न की आहुति दें :

ओ३म्। यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद् वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान् नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा ॥ इदमग्नये स्विष्टकृते - इदन्न मम ॥

–आश्वलायन–गृह्यसूत्र १.१०.२२

भावार्थ– हे समस्त दोषों का निवारण करनेवाले, सकल इष्ट कामनाओं को पूर्ण करनेवाले, प्रकाशस्वरूप प्रभु! मैंने अपनी अज्ञानतावश इस यज्ञकर्म में जो विधि से अधिक क्रिया कर दी हो अथवा इस यज्ञ–अनुष्ठान में कोई क्रिया विधि से कम कर दी हो, उस अधिकता या न्यूनता को आप भली प्रकार जानते हैं। हे प्रभु! आप मेरी अल्पज्ञता को ध्यान में रखते हुए इसे ही यथोचित रूप से किया हुआ स्वीकार करें अर्थात् उत्तम फलदायक बनाएँ। हे पूर्णकाम, यज्ञों को सफल करनेवाले, सब प्रायश्चित्त आहुतियों तथा समस्त कामनाओं को पूर्ण करनेवाले ज्ञानस्वरूप परमात्मा! आप हमारी यज्ञ–विषयक सम्पूर्ण कामनाओं को कृपा करके पूर्ण कीजिए। समस्त यज्ञों को सफलीभूत करनेवाले, प्रकाशस्वरूप प्रभु! यह आहुति लोक–कल्याण के लिए निःस्वार्थभाव से आपको सादर समर्पित है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥

प्राजापत्य-आहुति (१५)

इसके पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र का उच्चारण मन में करके **केवल घृत की आहुति** दें :

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा॥ इदं प्रजापतये - इदन्न मम॥ ३ ॥

-यजुर्वेद २२.३२

भावार्थ— हे प्रजापालक परमेश्वर! 'मैं भी आपके गुणानुरूप प्रजापति बन जाऊँ' —इस भावना से यह आहुति आपको समर्पित करता हूँ। हे प्रजापति! यह समस्त हव्य-द्रव्य आपका ही है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥

पूर्णाहुति (१६)

इसके पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र को एक बार पढ़कर एक आहुति दें । इस प्रक्रिया को तीन बार दोहराएँ अर्थात् तीन बार मन्त्र पढ़कर कुल तीन आहुतियाँ दें :

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा॥ (पहली पूर्णाहुति)

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा॥ (दूसरी पूर्णाहुति)

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा॥

(तीसरी और अन्तिम पूर्णाहुति)

भावार्थ— हे सर्वरक्षक, समस्त कामनाओं को पूर्ण करनेवाले आनन्दस्वरूप परमात्मा! आप स्वयं में सब प्रकार से पूर्ण हैं। आपकी कृपा से ही हमारे श्रेष्ठ-उपकारक कार्य सिद्ध होते हैं। हे पूर्णकाम! यह यज्ञ लोक-कल्याण के लिए निःस्वार्थभाव से आपको सादर समर्पित है। प्रभु! इसे सफल कीजिए और मेरी इस प्रार्थना को सत्य कीजिए॥

॥ इति सामान्य-यज्ञविधिः॥

यज्ञ-प्रार्थना

यज्ञरूप प्रभो ! हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए ।
छोड़ देवें छल-कपट को मानसिक बल दीजिए ॥
वेद की बोलें ऋचाएँ , सत्य को धारण करें ।
हर्ष में हों मग्न सारे , शोक-सागर से तरें ॥
अश्वमेधादिक रचाएँ , यज्ञ पर-उपकार को ।
धर्म-मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को ॥
नित्य श्रद्धा-भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें ।
रोग-पीड़ित विश्व के संताप सब हरते रहें ॥
भावना मिट जाएँ मन से पाप अत्याचार की ।
कामनाएँ पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नार की ॥
लाभकारी हो हवन हर प्राणधारी के लिए ।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किए ॥
स्वार्थभाव मिटे हमारा प्रेम-पथ विस्तार हो ।
'इदन्न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो ॥
हाथ जोड़ झुकाय मस्तक वन्दना हम कर रहे ।
नाथ करुणारूप ! करुणा आपकी सब पर रहे ॥

मङ्गलकामना

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ॥

सबका भला करो भगवान् , सब पर दया करो भगवान् ।
सब पर कृपा करो भगवान्, सबका सब विधि हो कल्याण ॥

****

हे ईश सब सुखी हों , कोई न हो दुखारी ।
सब हों निरोग भगवन्, धन-धान्य के भण्डारी॥
सब भद्र भाव देखें , सन्मार्ग के पथिक हों ।
दुखिया न कोई होवे, सृष्टि में प्राणधारी ॥

सुखी बसे संसार सब दुखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी भगवन् पूरी होय॥
विद्या-बुद्धि-तेज-बल, सबके भीतर होय।
दूध-पूत धन-धान्य से वञ्चित रहे न कोय॥
आपकी भक्ति-प्रेम से मन होवे भरपूर।
राग-द्वेष से चित्त मेरा कोसों भागे दूर॥
मिले भरोसा नाम का हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे धाम की बनी रहे मम ईश॥
पाप से हमें बचाइए करके दया दयाल।
अपना भक्त बनायके सबको करो निहाल॥
दिल में दया उदारता मन में प्रेम अपार।
हृदय में धैर्य-वीरता सबको दो करतार॥
हाथ जोड़ विनती करूँ सुनिए कृपानिधान।
साधु-संगत सुख दीजिए, दया-नम्रता दान॥

यजमान परिवार को आशीर्वाद (पुष्पवर्षा)

ओं सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।
ओं सफलाः सन्तु यजमानस्य कामाः।
ओं पूर्णाः सन्तु यजमानस्य कामाः।
ओं सौभाग्यमस्तु, शुभं भवतु, कल्याणमस्तु।
ओं स्वस्ति, स्वस्ति, स्वस्ति॥

(यजमान की सभी शुभ कामनाएँ सत्य, सफल और पूर्ण हों। यजमान परिवार में सदा सौभाग्य, शुभ तथा कल्याण ही कल्याण बना रहे।)

शान्ति-पाठ

ओ३म्। द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर् विश्वे देवाः शान्तिर् ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥

॥ ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

बृहद्-अग्निहोत्र

(विशेष अवसरों पर हवन)

जब तक होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्तदेश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाए। —सत्यार्थप्रकाश, तृतीय समुल्लास

॥ ओ३म् ॥

बृहद्-अग्निहोत्र

(विशेष अवसरों पर हवन)

आवश्यक सामान की सूची :

1. यज्ञ के स्थान पर बिछाने के लिए 4 आसन या चादर
2. आचमन के लिए जल भरे हुए 4 पात्र (गिलास या कटोरियाँ चम्मच सहित)
3. जल-सेचन के लिए पानी से भरा लोटा
4. हवन-सामग्री के लिए 4 प्लेटें या थालियाँ
5. दीपक बत्ती सहित
6. कपूर की टिकिया या रूई की बत्ती
7. एक माचिस
8. हवन में घी डालने के लिए एक स्रुवा (लंबी डंडी का चम्मच)
9. देशी घी (गोघृत हो तो अति उत्तम है।)
10. हवन-कुण्ड (तांबे या लोहे का बना हुआ)
11. आम, बेरी या पीपल की समिधाएँ (बिना कीड़ा लगी हुई)
12. हवन-सामग्री
13. यज्ञशेष के लिए मीठा भात या अन्य मिष्टान्न
14. यजमान को आशीर्वाद के लिए ताज़े फूल

आवश्यक निर्देश :

卐 प्रातः काल सूर्योदय के पश्चात् तथा सायं काल सूर्य अस्त होने के पश्चात् अग्निहोत्र का समय है।

卐 हवन में मन और शरीर से शुद्ध, पवित्र और शान्त होकर बैठें ।

卐 यजमान पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठे ।

卐 हवन के पात्र चाँदी, तांबे, पीतल या स्टील के हों ।

卐 कोई भी पात्र प्लास्टिक का न हो। स्रुवा लकड़ी का हो सकता है ।

卐 हवन में समिधा अर्पित करना, घी - सामग्री या मिष्टान्न की आहुति देना अथवा जल-सेचन आदि करने की कोई भी क्रिया पूरा मन्त्र पढ़ने के बाद ही करें , मन्त्र बोलते हुए कोई क्रिया न करें।

卐 पूर्ण श्रद्धा और विनम्र भाव से पूरा मन्त्र पढ़कर स्वाहा बोलते हुए सीधे (दाएँ) हाथ से ही आहुति दी जाती है और **इदं ...... इदन्न मम** का पाठ बाद में किया जाता है ।

गायत्री-कीर्तन

ओ३म्। भूर् भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

—यजुर्वेद ३६.३

तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू।
तुझसे ही पाते प्राण हम, दुखियों के कष्ट हरता है तू॥
तेरा महान् तेज है, छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु–वस्तु में, तू हो रहा है विद्यमान॥
तेरा ही धरते ध्यान हम, माँगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला॥

* * * * * * *

'ओम्' हो रक्षक हमारे, सब गुणों की खान हो।
'भूः' सदा सब प्राणियों में, प्राण के भी प्राण हो॥
'भुवः' सब दुःखों को हरते, आप कृपानिधान हो।
'स्वः' सदा सुखरूप सुखमय, सुखद सुखधि महान् हो॥
'तत्' वही सुप्रसिद्ध ब्रह्मा, देववर्णित सार हो।
देव 'सवितुः' सर्व उत्पादक हो पालनहार हो॥
शुभ 'वरेण्यम्' वरण करने योग्य भगवन् आप हो।
शुद्ध 'भर्गः' मलरहित, निर्लेप हो निष्पाप हो॥
दिव्यगुण 'देवस्य' दिव्य–स्वरूप देव अनूप के।
'धीमहि' धारें हृदय में, दिव्यगुण सब भूपके॥
'धियो यो नः' वह हमारी, बुद्धियों का हित करे।
अमर 'प्रचोदयात्' नित, सन्मार्ग पर प्रेरित करे॥

॥ ओ३म् ॥

बृहद्-अग्निहोत्र

आचमन-मन्त्र (१)

दाँए हाथ की हथेली में जल लेकर, नीचे लिखा एक-एक मन्त्र पढ़कर तीन आचमन करें :

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥

(हथेली में लिया जल पी लें - पहला आचमन पूरा हुआ, हथेली में पुनः जल लें)

ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥

(हथेली में लिया जल पी लें - दूसरा आचमन पूरा हुआ, हथेली में पुनः जल लें)

ओ३म् सत्यं यशः श्रीर् मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥ — तैत्तिरीय संहिता १.३२-३४

(हथेली में लिया जल पी लें - तीसरा आचमन पूरा हुआ)

भावार्थ— हे सर्वरक्षक, अमृतस्वरूप, अविनाशी प्रभो! तू मेरे नीचे का बिछौना है, यह मैं यथार्थ रूप से समझ रहा हूँ। हे नित्य शुद्ध-बुद्ध-मुक्त, शान्तस्वभाव, परमात्मन्! तू ही मेरे ऊपर का ओढ़ना है, यह मैं ठीक-ठीक समझ रहा हूँ । माँ के आँचल की भाँति अपने भक्त-पुत्रों को सदैव अपने रक्षा-कवच में आश्रय देनेवाले प्रभो! आपकी कृपा से मुझमें सत्य भाषण, सत्य व्यवहार, सत्य ज्ञान, यश-कीर्ति, स्वास्थ्य, शोभा, धन, ऐश्वर्य —ये सभी स्थायी आश्रय बनाकर रहें। हे भक्तवत्सल कृपालु देव! मेरी यह हार्दिक कामना है॥

अङ्गस्पर्श-मन्त्र (२)

बाँए हाथ की हथेली में जल लेकर, दाँए हाथ की बीच की दो अंगुलियों से जल का स्पर्श करके, नीचे लिखे मन्त्रों से पहले दाँए अंग का फिर बाँए अंग का स्पर्श करें :

ओ३म् वाङ्म ऽ आस्येऽस्तु ॥ (मुख का स्पर्श करें)

ओ३म् नसोर् मे प्राणोऽस्तु ॥(नासिका का स्पर्श करें)

ओ३म् अक्ष्णोर् मे चक्षुरस्तु ॥

(दोनों आँखों का स्पर्श करें)

ओ३म् कर्णयोर् मे श्रोत्रमस्तु ॥

(दोनों कानों का स्पर्श करें)

ओ३म् बाह्वोर् मे बलमस्तु ॥

(दोनों कंधों का स्पर्श करें)

ओ३म् ऊर्वोर् म ऽ ओजोऽस्तु ॥

(दोनों जंघाओं का स्पर्श करें)

ओ३म् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस् तन्वा मे सह सन्तु ॥ —पारस्कर गृह्यसूत्र १.३.२५

(पूरे शरीर पर जल छिड़कें)

भावार्थ– हे सर्वरक्षक प्रभो ! आपकी कृपा से मेरे मुख में वाक्-शक्ति, नासिका में प्राण-शक्ति, आँखों में दर्शन-शक्ति, कानों में श्रवण-शक्ति,भुजाओं में बल-पराक्रम तथा दोनों जंघाओं में दौड़ने और भार वहन करने का सामर्थ्य आजीवन विद्यमान रहे। मेरा शरीर तथा मेरे शरीर के सब अंग-प्रत्यंग, ज्ञानेन्द्रियाँ एवं कर्मेन्द्रियाँ रोग-रहित, दोषमुक्त तथा शक्ति-सम्पन्न हों॥

ईश्वर-स्तुति-प्रार्थना-उपासना-मन्त्र (३)

ओ३म्। विश्वानि देव सवितर् दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥ १ ॥

—यजुर्वेद ३०.३

भावार्थ— हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्य युक्त, शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए। जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं; वह सब हमको प्राप्त कीजिए॥ १ ॥

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ २ ॥ —यजुर्वेद १३.४

भावार्थ— जो स्व-प्रकाशस्वरूप और जिसने प्रकाश करनेवाले सूर्य-चन्द्रमादि पदार्थ उत्पन्न किए हैं, जो उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का प्रसिद्ध स्वामी एक ही चेतनस्वरूप था, जो सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व वर्तमान था, वह इस भूमि और सूर्यादि को धारण कर रहा है, हम लोग उस सुखस्वरूप शुद्ध परमात्मा के लिए ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अतिप्रेम से विशेष भक्ति किया करें॥ २ ॥

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ३ ॥ —यजुर्वेद २५.१३

भावार्थ— जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर-आत्मा और समाज के बल का देनेवाला, जिसकी सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं और जिसका प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन और न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, जिसका आश्रय ही मोक्ष-सुखदायक है, जिसका न मानना अर्थात् भक्ति

न करना ही मृत्यु आदि दु:ख का हेतु है, हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ज्ञान के देनेवाले परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्त:करण से भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञा-पालन करने में तत्पर रहें॥ ३॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक ऽ इद् राजा जगतो बभूव। य ईशे ऽ अस्य द्विपदश् चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ४॥

–यजुर्वेद २३.३

भावार्थ– जो प्राणवाले और अप्राणिरूप जगत् का अपनी अनन्त महिमा से एक ही विराजमान राजा है, जो मनुष्यादि और गौ आदि प्राणियों के शरीरकी रचना करता है,हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ऐश्वर्य के देनेवाले परमात्मा के लिए अपनी सकल उत्तम सामग्री से विशेष भक्ति करें॥ ४॥

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं येन नाकः। यो ऽ अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ५॥ –यजुर्वेद ३२.६

भावार्थ– जिस परमात्मा ने तीक्ष्ण स्वभाववाले सूर्य आदि और भूमि को धारण किया है, जिस जगदीश्वर ने सुख को धारण किया है और जिस ईश्वर ने दु:ख-रहित मोक्ष को धारण किया है,जो आकाश में सब लोक-लोकान्तरों को विशेष मानयुक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, वैसे सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग उस सुखदायक कामना करने योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए विशेष भक्ति करें ॥५ ॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास् ते जुहुमस् तन्नो ऽ अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ ६ ॥–ऋग्वेद १०.१२१.१०

भावार्थ– हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मन्! आपसे भिन्न दूसरा कोई उन-इन-सब उत्पन्न हुए जड़-चेतनादिकों को नहीं तिरस्कार करता है अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। जिस-जिस पदार्थ की कामनावाले हम लोग आपका आश्रय लेवें और वाञ्छा करें उस-उसकी कामना हमारी सिद्ध होवे, जिससे हम लोग धनैश्वर्यों के स्वामी होवें॥ ६॥

स नो बन्धुर् जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवा ऽ अमृतमानशानास् तृतीये धामन्नध्यैरयन्त॥ ७॥

—यजुर्वेद ३२.१०

भावार्थ– हे मनुष्यो! वह परमात्मा अपने लोगों का भ्राता के समान सुखदायक, सकल जगत् का उत्पादक, वह सब कामों का पूर्ण करनेवाला, सम्पूर्ण लोकमात्र और नाम-स्थान-जन्मों को जानता है; और जिस सांसारिक सुख-दुःख से रहित, नित्यानन्दयुक्त मोक्षस्वरूप धारण करनेवाले परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त होके विद्वान् लोग स्वेच्छा-पूर्वक विचरते हैं; वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है; अपने लोग मिलके सदा उसकी भक्ति किया करें॥ ७॥

अग्ने नय सुपथा राये ऽ अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम ऽ उक्तिं विधेम ॥ ८॥

—यजुर्वेद ४०.१६

भावार्थ– हे स्वप्रकाश, ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाश करनेवाले, सकल सुखदाता परमेश्वर! आप जिससे सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके हम लोगों को विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए अच्छे धर्मयुक्त, आप्त लोगों के मार्ग से सम्पूर्ण प्रज्ञान और उत्तम कर्म प्राप्त कराइए और हमसे कुटिलतायुक्त पापरूप कर्म को दूर कीजिए। इस

कारण हम लोग आपकी बहुत प्रकार की स्तुतिरूप नम्रता-पूर्वक प्रशंसा सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें॥ ८॥

॥ इति ईश्वर-स्तुति-प्रार्थनोपासना-प्रकरणम्॥

प्रार्थना

हे सर्वाधार! सर्वान्तर्यामिन् परमेश्वर! तुम अनन्त काल से अपने उपकारों की वर्षा किए जाते हो। प्राणिमात्र की सम्पूर्ण कामनाओं को तुम्हीं प्रतिक्षण पूर्ण करते हो। हमारे लिए जो कुछ शुभ है तथा हितकर है, उसे तुम बिना माँगे ही स्वयं हमारी झोली में डालते जाते हो। तुम्हारे आँचल में अविचल शान्ति तथा आनन्द का वास है। तुम्हारी चरण-शरण की शीतल छाया में परम तृप्ति है, शाश्वत सुख की उपलब्धि है तथा सब अभिलषित पदार्थों की प्राप्ति है।

हे जगत्-पिता परमेश्वर! हममें सच्ची श्रद्धा तथा विश्वास हो। हम तुम्हारी अमृतमयी गोद में बैठने के अधिकारी बनें। अन्त:करण को मलिन बनानेवाली स्वार्थ तथा संकीर्णता की सब क्षुद्र भावनाओं से हम ऊँचे उठें। काम, क्रोध, मोह, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि कुटिल भावनाओं तथा सब मलिन वासनाओं को हमसे दूर करें। अपने हृदय की आसुरी प्रवृत्तियों के साथ युद्ध में विजय पाने के लिए हे प्रभो! हम तुम्हें पुकारते हैं और तुम्हारा आँचल पकड़ते हैं।

हे परम पावन प्रभो! हममें सात्त्विक वृत्तियाँ जागरित हों। क्षमा, सरलता, स्थिरता, निर्भयता, अहङ्कार-शून्यता इत्यादि शुभ भावनाएँ हमारी सम्पत्ति हों। हमारा शरीर स्वस्थ तथा परिपुष्ट हो, मन सूक्ष्म तथा उन्नत हो, आत्मा पवित्र तथा सुन्दर हो, तुम्हारे संस्पर्श से हमारी सारी शक्तियाँ विकसित हों। हृदय दया तथा सहानुभूति से भरा हो। हमारी वाणी में मिठास हो तथा दृष्टि में प्यार हो। विद्या और ज्ञान से हम परिपूर्ण हों। हमारा व्यक्तित्व महान् तथा विशाल हो।

हे प्रभो! अपने आशीर्वादों की वर्षा करो। दीनातिदीनों के मध्य में विचरनेवाले तुम्हारे चरणारविन्दों में हमारा जीवन अर्पित हो, इसे अपनी सेवा में लेकर हमें कृतार्थ करें।

॥ ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

अथ स्वस्ति-वाचनम् (४)

(विशेष-यज्ञों में पाठ करने योग्य)

ओ३म् । अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥ १ ॥

—ऋग्वेद १.१.१

भावार्थ— हे ज्ञानस्वरूप, ज्योतिर्मय, सर्वप्रथम हितकारक, सृष्टि-यज्ञ के नेता और प्रकाशक, प्रत्येक ऋतु में पूजनीय, रमणीय रत्नों को धारण करनेवालों में सर्वोत्तम, सृष्टि-विधाता परमेश्वर! मैं आपकी स्तुति करता हूँ॥ १ ॥

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये॥ २ ॥

—ऋग्वेद १.१.९

भावार्थ— हे मार्गदर्शक अग्निस्वरूप परमात्मन्! आप हमारे लिए उसी प्रकार सरलता से प्राप्त होने योग्य तथा अनायास ही सुख-साधक पदार्थों एवं ज्ञान के देनेवाले हैं जैसे पुत्र के लिए माता-पिता होते हैं। हे जगत्-पिता! आप हमें इहलौकिक तथा पारलौकिक कल्याण से संयुक्त कीजिए॥ २ ॥

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः। स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना॥ ३ ॥

—ऋग्वेद ५.५१.११

भावार्थ— हे ऐश्वर्यशाली भगवन्! व्यापक बुद्धिवाले अध्यापक और उपदेशक तथा सूर्य और चन्द्र हमारे लिए सुखकारी हों; सब विद्याओं की प्रकाशक अखण्ड वेद-विद्या अचल रूप में हमारा कल्याण करे; पुष्टिकारक दुग्ध आदि पदार्थ तथा जीवनदाता मेघ हमारे लिए कल्याणकारी हों; सूर्य के समान तेजस्वी और पृथिवी के समान धैर्यशील माता-पिता ज्ञान के प्रकाश द्वारा हमारा कल्याण करें॥ ३ ॥

स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः। बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः॥ ४॥

—ऋग्वेद ५.५१.१२

भावार्थ– हे प्राणदाता प्रभु! हम आपको आत्म-कल्याण के लिए पुकारते हैं। हे शान्ति के शाश्वत स्रोत, भुवनपति, सकल ब्रह्माण्ड के पालक, रक्षक, सर्वगुण-निधान प्रभु! हम आपको कल्याण के लिए पुकारते हैं। हे प्रभु! आपकी कृपा से आदित्य के समान ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशमान ज्ञानी पुरुष हमारा कल्याण करनेवाले हों॥ ४॥

विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये। देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः॥ ५॥

—ऋग्वेद ५.५१.१३

भावार्थ– हे सम्पूर्ण चराचर में प्रकाशमान, सबको बसानेवाले, ज्ञानस्वरूप परमात्मा! आप हमारा कल्याण कीजिए। आपकी कृपा से शरीर में प्रकाशमान समस्त इन्द्रियाँ हमारे लिए कल्याणकारी हों — कुपथ पर न चलें तथा ज्ञान-ज्योति से देदीप्यमान विद्वान् लोग कल्याणभाव से हमारी रक्षा का मार्ग प्रशस्त करें। हे दुष्टों को रुलानेवाले रुद्रस्वरूप परमात्मा! कृपा करके हमें पापकर्म से बचाइए तथा इस रीति से हमें अभ्युदय-निःश्रेयस की प्राप्ति करवाकर हमारा कल्याण कीजिए॥ ५॥

स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति। स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि॥ ६॥

—ऋग्वेद ५.५१.१४

भावार्थ– हे प्रभु! आपके अनुग्रह से हमारे शरीर में विद्यमान

प्राण और उदान कभी कुपित न हों। हे परम हितकारी विघ्न-विनाशक प्रभु! हमें धन-समृद्धि से युक्त जीवन के हितकारी पथ पर चलाकर हमारा कल्याण कीजिए। हे सकल ऐश्वर्य के स्वामी प्रभु! हमें ऐश्वर्य प्रदान कर हमारा कल्याण कीजिए। हे प्रकाश की ओर लेजानेवाले अविनाशी परमात्मन्! आप हमारा सदैव कल्याण ही कल्याण कीजिए॥ ६॥

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्या-चन्द्रमसाविव। पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि॥ ७॥ —ऋग्वेद ५.५१.१५

भावार्थ— हे परमात्मन्! हम सदैव सूर्य और चन्द्र के समान धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष के साधक कल्याणकारी मार्गों का ही अनुसरण करें। हे प्रभो! हम किसी को पीड़ा न देनेवाले, दानशील तथा ज्ञानीजनों की पुनः-पुनः अच्छी प्रकार संगति करें॥ ७॥

ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः। ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ८॥ —ऋग्वेद ७.३५.१५

भावार्थ— हे प्रभु! जो यज्ञमय जीवनवाले विद्वानों में सर्वपूज्य एवं मननशील लोगों के भी आदरणीय हैं, जो जीवन-मुक्त तथा शाश्वत-सत्य के ज्ञाता हैं; वे विद्वान् इसी जीवन में हमें प्रशंसनीय ज्ञान प्रदान करें। हे सर्वप्रेरक प्रभु! आप अपनी कल्याण-परम्पराओं द्वारा सदैव हमारी रक्षा करें॥ ८॥

येभ्यो माता मधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः। उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस् ताँ आदित्याँ अनु मदा स्वस्तये॥ ९॥ —ऋग्वेद १०.६३.३

भावार्थ—हे प्रभु! जिन सदाचारी विद्वानों के लिए सबकी पालक-पोषक भूमिमाता और जननी माधुर्य-गुणयुक्त अन्न-रस आदि प्रदान करती है, मेघों से आच्छादित अन्तरिक्ष तथा द्युलोक जिनके लिए अमृततुल्य वृष्टि करता है; उन विद्या के बल से प्रसिद्ध, वृष्टि-यज्ञ कराने में निपुण, अत्यन्त महत्त्वाकांक्षी तथा अखण्ड वेद-ज्ञानवाले विद्वानों का हम अनुसरण करें जिससे हमारा कल्याण हो सके॥ ९॥

नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद् देवासो अमृतत्वमानशुः। ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये॥ १०॥

—ऋग्वेद १०.६३.४

भावार्थ— हे कृपालु प्रभु! जो मनुष्यमात्र पर दृष्टि रखनेवाले, पलक न झपकनेवाले = अत्यन्त जागरूक तथा पूजनीय विद्वान् लोग हैं; जो मरकर भी अमर हो जाते हैं; जो प्रकाशमय ज्ञान के रथ पर आरूढ़, व्यापक बुद्धिवाले तथा पाप से रहित ज्ञानीजन हैं; वे अपने उपदेशों द्वारा हमारे कल्याण के लिए हमें ज्ञान के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाएँ॥ १०॥

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम्। ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर् महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये॥ ११॥

—ऋग्वेद १०.६३.५

भावार्थ— हे जगदीश्वर! जो अपने शुभ गुणों से प्रकाशमान, कुटिलता से रहित, उत्तम ज्ञानवृद्ध लोग हैं; जो उच्च सम्माननीय पद पर प्रतिष्ठित हैं; उन आदित्य के समान तेजस्वी वीरपुत्रों तथा अखण्ड व्रतशील विदुषी माताओं को उत्तम प्रशंसनीय वचनों द्वारा नमन करके एवं उत्तम पदार्थों द्वारा उनका सत्कार करके हम सब प्रकार से उनकी सेवा करें॥ ११॥

को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यति ष्ठन । को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये॥ १२॥

—ऋग्वेद १०.६३.६

भावार्थ— हे प्रभु! जब हम प्रश्न करते हैं कि हे ज्ञान का दान करनेवाले, अनेक जन्म लेनेवाले, जितनी संख्या में भी उपस्थित मननशील पुरुषों! वह कौन है जो आपके लिए स्तोत्र-ऋचाएँ रचता है? जिनका आप प्रेमपूर्वक उच्चारण करते हैं? वह कौन है जो हिंसा-रहित इस यज्ञ को अपने ज्ञान द्वारा अलंकृत करता है, जो हमारे कल्याण के लिए हमें पाप से बचाता है और दु:ख-सागर से पार करता है? प्रभु, वेद की ऋचाओं को रचनेवाले परम ज्ञानदाता वह आप ही तो हैं॥ १२॥

येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर् मनसा सप्त होतृभिः। त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये॥ १३॥

—ऋग्वेद १०.६३.७

भावार्थ— हे सूर्य-चन्द्र आदि प्रकाशमान पदार्थों के भी प्रकाशक, मनन करने योग्य, सर्वज्ञ परमेश्वर! आपने जिन आदित्य के समान तेजस्वी वीर-पुरुषों के लिए दो हाथ, दो आँख, दो कान, दो नासिका छिद्र तथा एक मुखरूपी सात होताओं द्वारा किए जानेवाले सर्वश्रेष्ठ शरीररूपी यज्ञ का आयोजन किया है अर्थात् आपने जिनके शरीरों का निर्माण किया है; वे सूर्य के समान तेजस्वी पुरुष हमें भय-रहित सुख प्रदान करें और हमें श्रेष्ठ वेद-मार्ग पर सरलता से चलने योग्य बनाएँ॥ १३॥

य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर् जगतश्च मन्तवः। ते नः कृतादकृतादेनसस् पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये॥ १४॥ —ऋग् १०.६३.८

भावार्थ– हे प्रभु! जो उत्कृष्ट ज्ञानी मननशील पुरुष इस जड़-चेतन जगत् की सब गतिविधियों को जानने में समर्थ हैं, वे दैवी-सम्पदा-सम्पन्न विद्वान् हमारे कल्याण के लिए हमें किए-न किए सब पापों से आज ही भली प्रकार बचाएँ॥ १४॥

भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽंहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम्। अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये॥ १५॥

—ऋग्वेद १०.६३.९

भावार्थ– हे अति शीघ्र पुकार सुननेवाले, पापों से छुड़ानेवाले, सृष्टि-यज्ञरूपी श्रेष्ठ कर्म करनेवाले, दिव्य सामर्थ्यवाले, प्राणिमात्र के मित्र, वरण करने योग्य तथा सबके भजनीय प्रभु! तुझ ऐश्वर्यशाली परमात्मा को हम यज्ञों और जीवन-संघर्षों के अवसरों पर अपनी जीवन-रक्षा तथा अन्न आदि की प्राप्ति के लिए श्रद्धाभाव से पुकारते हैं; द्युलोक से पृथिवीलोक तक सब लोक-लोकान्तर तथा वायु आदि भौतिक तत्त्व आपके अनुग्रह से हमारे लिए कल्याणकारी हों॥ १५॥

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्। दैवीं नावं स्वरित्रामनागसम-स्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये॥ १६॥ —ऋग्वेद १०.६३.१०

भावार्थ– हे प्रभु! विघ्नों से रक्षा करनेवाली, अत्यन्त विस्तृत, प्रकाशमय, बाधा-रहित, सुख देनेवाली, अखण्डनीय विज्ञान से युक्त, भवसागर से पार उतारनेवाली, निष्पाप, उत्तम ऋत्विजों से युक्त, न चूनेवाली - त्रुटि रहित, दिव्य वेदज्ञानरूपी - दिव्य यज्ञरूपी - दिव्य

शरीररूपी नौका पर हम आत्म-कल्याण के लिए आरोहण करें; अर्थात् हम जीवन-कल्याण के लिए वेदों का स्वाध्याय करें, यज्ञों के अनुष्ठान से जीवन को यज्ञमय बनाएँ तथा धर्म के साधनभूत शरीर को स्वस्थ एवं दृढ़ बनाएँ॥ १६॥

विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः। सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये॥ १७॥ —ऋग्वेद १०.६३.११

भावार्थ— हे यज्ञमय जीवनवालों के तारणहार, विशाल, उदार परमेश्वर! आप हमारी रक्षा एवं उन्नति के लिए अधिकारपूर्वक हमारा मार्गदर्शन कीजिए, दुर्गति तथा कुटिल वृत्तियों से हमारा त्राण कीजिए। हमारी पुकार को सुननेवाले हे दिव्य दाता! हम अपनी रक्षा तथा कल्याण के लिए सत्यवाणी एवं हार्दिक प्रार्थना द्वारा आपको पुकारते हैं॥ १७॥

अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः। आरे देवा द्वेषो अस्मद् युयोतनोरु णः शर्म यच्छता स्वस्तये॥ १८॥

—ऋग्वेद १०.६३.१२

भावार्थ— हे परम चिकित्सक देवाधिदेव प्रभु! आप समस्त रोगों तथा रोगोत्पादक कीटाणुओं को दूर कीजिए, यज्ञ न करने की सब भावनाओं को दूर कीजिए, पापमय विचारवालों की दुष्ट बुद्धि को दूर कीजिए, हमारी द्वेष भावनाओं को हमसे बहुत दूर भगा दीजिए और हमारे कल्याण के लिए जो-जो सुखकारी साधन हैं हमें प्रदान कीजिए॥ १८॥

अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर् जायते धर्मणस्परि। यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये॥ १९॥ —ऋग्वेद १०.६३.१३

भावार्थ– हे अखण्ड वेदज्ञान से सम्पन्न तेजस्वी विद्वानो! आप जिस मनुष्य को भी उसके कल्याण के लिए धर्मयुक्त नीति-मार्ग से ले जाते हैं, वह मनुष्य समस्त दुरित-दोषों को पार कर जाता है। वह इस संसार में बाधारहित होकर समृद्धि को प्राप्त करता है, उत्तम सन्तान से प्रजावान होता है तथा उसका जीवन धर्म-परायण बन जाता है॥ १९॥

यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने। प्रातर् यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये॥ २०॥

—ऋग्वेद १०.६३.१४

भावार्थ– हे सकल ऐश्वर्य के स्वामी इन्द्ररूप परमात्मा! विद्वान् लोग ज्ञान-बल आदि की प्राप्ति के लिए, हितकारक धन की प्राप्ति के लिए तथा शूरवीरों की संगति के लिए जिस शरीररूपी रथ की रक्षा करते हैं; हम भी ब्राह्म मुहूर्त में आपका साक्षात्कार करानेवाले, भोग्य पदार्थों की प्राप्ति करानेवाले तथा आधि-व्याधि से रहित उसी शरीररूपी रथ पर आरोहण करें। अर्थात् यह शरीर स्वस्थ एवं दृढ़ होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष —इन चारों पुरुषार्थों की सिद्धि का साधन बने॥ २१॥

स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्य१प्सु वृजने स्ववति। स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन॥ २१॥

—ऋग्वेद १०.६३.१५

भावार्थ– 'दुःखी होकर मत जीओ, धैर्य धारण करो' – ऐसा आश्वासन देनेवाले प्रभो! हमारे आवागमन के मार्गों पर कल्याण का वातावरण हो, मरुस्थलों-जलमय प्रदेशों-अन्तरिक्ष तथा द्युलोक में कल्याणमय वातावरण हो, हमारे घरों में वीर पुत्रों को जन्म देनेवाले स्त्रीशरीरों में आरोग्यता एवं पुष्टिरूप कल्याण प्रदान करें॥ २१॥

स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति। सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपा॥ २२॥ —ऋग्वेद १०.६३.१६

भावार्थ— हे प्रेरक प्रभु! धन-ऐश्वर्य को प्राप्त करानेवाली श्रेष्ठ मंगल आपकी प्रेरणा निश्चय ही हमें जीवन के उत्कृष्ट मार्ग में उन्नति की ओर ले जाती है, वह मंगल प्रेरणा ही घर और जंगल में अर्थात् सभी जगह हमारी पालना करे, हमारा मार्गदर्शन करे। वही प्रेरणा हमारे दिव्यभावों की रक्षा करे जिससे हम कभी पतित न हों॥ २२॥

इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण ऽ आप्यायध्वमघ्न्या ऽ इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा ऽ अयक्ष्मा मा व स्तेनऽ ईशत माघशꣳसो ध्रुवा ऽ अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर् यजमानस्य पशून् पाहि॥ २३॥ —यजुर्वेद १.१

भावार्थ— हे परमात्मा! हम अन्न आदि उत्तम पदार्थों की प्राप्ति के लिए आपको पुकारते हैं। हम उत्तम बल-पराक्रम और आनन्द की प्राप्ति के लिए आपकी शरण में आते हैं।

प्रभुवर! हमारी यह प्रार्थना सुनकर आप ही अपने उपासकों को प्रेरणा देते हैं कि तुम सब वायु के समान बल-पराक्रमवाले बनो; ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित तथा उस ज्ञान की निरन्तर वर्षा करनेवाले विद्वान् तुम्हें अत्यन्त श्रेष्ठ सर्वहितकारक यज्ञ एवं निष्काम कर्म के लिए प्रेरित करें; तुम सदैव सब प्रकार से उन्नति करो,फूलो-फलो; तुम्हारी अहिंसनीय गाय ऐश्वर्य के इच्छुक जनों के सेवन करने योग्य दूध को देनेवाली हों;

वह उत्तम प्रजावाली, सामान्य रोगाणुओं-कीटाणुओं से रहित तथा यक्ष्मा जैसे राजरोगों से रहित हो; चौर वृत्तिवाले तथा पापकर्म के प्रशंसक लोग तुम पर कभी शासन न करें; ऐसे स्वतन्त्र,धर्मवृत्ति तुम गोस्वामियों के पास स्थिर सुखकारक बहुत-सी गउएँ हों।

अपने आशीर्वचनों की वर्षा करनेवाले हे प्रभो! आपसे प्रेरणा पाकर हम पुनः प्रार्थना करते हैं कि आपकी स्तुति करनेवाले इस यजमानसमूह के गो आदि पशुओं की आप सब प्रकार से रक्षा करें॥ २३॥

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽ अपरीतासऽ उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद् वृधेऽ असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे॥ २४॥

—यजुर्वेद २५.१४

भावार्थ— किसीसे न दबनेवाले,निर्भीक, भद्रभाव, कर्मठ, सूक्ष्म-विचारशील, संयमी विद्वान् सब दिशाओं से हमारे पास आवें। प्राणिमात्र की रक्षा में तत्पर जागरूक विद्वान् हमारे लिए वैसे प्रयत्नशील हों जिससे हमारे घरों में प्रतिदिन उन्नति और समृद्धि हो॥ २४॥

देवानां भद्रा सुमतिर् ऋजूयतां देवानाᳬं रातिरभि नो निवर्तताम्। देवानाᳬं सख्यमुपसेदिमा वयं देवा नऽ आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥ २५॥

—यजुर्वेद २५.१५

भावार्थ— सरलचित्त विद्वानों के कल्याणकारी परामर्श हमें प्राप्त हों। हमें दानशील पुरुषों की दानशील वृत्ति प्राप्त हो। हम ज्ञान से प्रकाशित हृदयवाले ज्ञानियों की मित्रता प्राप्त करें। आयुर्वेद के ज्ञाता और योग-क्रिया में दक्ष विद्वान् हमारी आयु को दीर्घ जीवन के लिए प्रेरित करें अर्थात् हमें दीर्घजीवी होने के उपायों का उपदेश करें॥ २५॥

तमीशानं जगतस् तस्थुषस् पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ २६॥

—यजुर्वेद २५.१८

भावार्थ— समस्त जड़-चेतन संसार को वश में रखनेवाले, पालक, स्वामी, ज्ञानस्वरूप, उपासकों को अपने आनन्द से तृप्त करनेवाले उस प्रभु को हम अपनी रक्षा के लिए पुकारते हैं। जिससे पोषक, रक्षक, पालक, किसीको न दबानेवाला करुणामय प्रभु हमारे ज्ञान की वृद्धि तथा कल्याण करनेवाला हो॥ २७॥

स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस् ताक्ष्योऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर् दधातु॥ २७॥

—यजुर्वेद २५.१९

भावार्थ— संसार में सब लोग जिसका यश गाते हैं, वह ऐश्वर्यशाली परमेश्वर हमारा कल्याण करे। समस्त ज्ञान का आश्रयभूत पोषक प्रभु हमारा कल्याण करे। जानने योग्य तथा समस्त दु:खों का नाशक ब्रह्म हमारे लिए सुख की वर्षा करे। वेदवाणी का स्वामी प्रभु हम सब में कल्याणकारक वेदज्ञान को धारण कराए॥ २७॥

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर् यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस् तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर् व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ २८॥

—यजुर्वेद २५.२१

भावार्थ— हे सृष्टियज्ञ के कर्ता परम दयालु देव! हम कानों से भला सुनें, आँखों से भला देखें; हम दृढ़ अंगोंवाले शरीरों से युक्त होकर

आपकी स्तुति करते हुए आपके द्वारा धारण कराई गई आयु को पूर्णरूप से प्राप्त करें अर्थात् पूर्वजन्मों में किए अच्छे-बुरे कर्मों के अनुरूप इस शरीर को जो आयु प्राप्त हुई है हम अपने दुराचरण से उस आयु को नष्ट करनेवाले न हों अपितु अपने सदाचरण से उसे बढ़ानेवाले हों॥ २९॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
१ २र ३ १ २
नि होता सत्सि बर्हिषि॥ २९॥ —सामवेद पू०१.१.१

भावार्थ— हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप हमारी स्तुतियों को स्वीकार करते हुए, इस जीवन-यज्ञ के भोग्य पदार्थों को प्रदान करने के लिए तथा हमारी रक्षा के लिए हमारे हृदयरूपी आसन पर उसी प्रकार निरन्तर विराजमान रहें जिस प्रकार कोई याजक यज्ञ के आसन पर विराजता है॥ २९॥

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः।
३ २ ३ १ २ ३ १ २
देवेभिर् मानुषे जने॥ ३०॥ —सामवेद पू० १.१.२

भावार्थ— हे सबके मार्गदर्शक परमात्मन्! आप सब श्रेष्ठ कर्मों के प्रेरक और पूरक हैं, सबके हितकारक हैं, आपकी ही प्रेरणा तथा आप द्वारा प्रदत्त शक्ति से ही हम शुभ कर्म कर पाते हैं, आप अपने दिव्य गुणों से प्रत्येक मननशील मनुष्य में विराजमान रहते हैं, जो दिव्यगुण हमें आपका साक्षात्कार करने के योग्य बनाते हैं॥ ३०॥

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः। वाचस्पतिर् बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे॥ ३१॥ —अथर्ववेद १.१.१

भावार्थ—हे सृष्टि-कर्ता, वेदवाणी के स्वामी, जगदीश्वर! सम्पूर्ण रूपों को धारण करती हुई प्रकृति के जो त्रिषप्त=३×७=२१ इक्कीस तत्त्व अर्थात् पाँच तन्मात्राएँ (शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध), पाँच महाभूत

(पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश), पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ (आँख, नाक, कान, जिह्वा और त्वचा), पाँच प्राण (प्राण, अपान, व्यान, समान और उदान) तथा एक अन्त:करण आपके सामर्थ्य से सृष्टि में चारों ओर व्याप्त होकर गति कर रहे हैं —इन इक्कीस तत्त्वों के शरीर सम्बन्धी बलों का आधान आज मेरे शरीर में कीजिए॥ ३१ ॥

॥ इति स्वस्ति-वाचनम् ॥

अथ शान्तिकरणम् (५)

(विशेष-यज्ञों में पाठ करने योग्य)

ओ३म्। शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ॥ १ ॥

—ऋग्वेद ७.३५.१

भावार्थ— हे परमेश्वर! आपकी कृपा से विद्युत् और अग्नि अपने रक्षा-साधनों के द्वारा हमारे लिए सुखकारी हों, भोग्य-पदार्थों के देनेवाले विद्युत् और जल हमारे लिए शान्तिदायक हों। रोगशामक और भय को दूर करनेवाले विद्युत् और सोमलता आदि ओषध हमारे ऐश्वर्य की वृद्धि तथा सुखपूर्ण श्रेष्ठ जीवन के लिए शान्तिदायक हों। विद्युत् और वायु जीवन-संग्राम में हमारे लिए कल्याणकारक हों॥ १ ॥

शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः। शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु॥ २ ॥

—ऋग्वेद ७.३५.२

भावार्थ– हे जगदीश्वर! आपकी कृपादृष्टि से ऐश्वर्यों की वर्षा करनेवाला सूर्य हमारे लिए सुखकारी हो और ज्ञानियों के उपदेश हमारे लिए मङ्गल करनेवाले हों। राष्ट्र को धारण करनेवाला राजा हमारे लिए शान्तिदायक हो। सुवर्ण आदि धन भी हमारे लिए कल्याणकारी हों। हमारे सत्य व्यवहार और संयम की प्रशंसा भी हमारे लिए आनन्दकारी हो अर्थात् अपनी प्रशंसा सुनकर हम अभिमान में आकर सत्य और संयम के पथ से कभी भी विचलित न हों अपितु सत्य और संयम की पालना और भी दृढ़ता से करें। विशाल जनसमूह में अपनी न्यायप्रियता के लिए प्रसिद्ध न्यायाधीश हमारे लिए सुखकारी हों॥ २॥

शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः। शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु॥ ३॥

—ऋग्वेद ७.३५.३

भावार्थ– हे प्रभो! आपके अनुग्रह से सबको धारण करनेवाला वायु हमारे लिए शान्तिदायक हो, धारण करनेवाला सूर्य भी हमारे लिए कल्याणकारी हो। विशाल आकाश में घूमनेवाली विस्तृत वसुन्धरा अन्न आदि पदार्थों के द्वारा हमारे लिए सुखदायिनी हो। अति विशाल द्युलोक और पृथिवीलोक हमारे लिए मङ्गलकारी हों। मेघ और पर्वत हमारे लिए सुखदायी हों। विद्वानों के उपदेश और उनका आगमन हमारे लिए शुभ पथ-प्रदर्शक हों॥ ३॥

शं नो अग्निर् ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम्। शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः॥ ४॥

—ऋग्वेद ७.३५.४

भावार्थ– हे परमेश्वर! आपकी कृपा से प्रकाशमय सेनावाला

पार्थिव अग्नि हमारे लिए सुखकारी हो, प्राण और उदान हमारे लिए शान्तिदायक हों, सूर्य और चन्द्रमा हमें शान्ति प्रदान करनेवाले हों, शुभ कर्म करनेवालों के धर्माचरण हमारे लिए शान्ति प्रदान करनेवाले हों तथा स्वयं गतिशील और अन्यों को गति देनेवाला वायु हम लोगों के लिए कल्याणकारी होकर सब ओर से बहे॥ ४॥

शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु। शं न ओषधीर् वनिनो भवन्तु शं नो रजसस् पतिरस्तु जिष्णुः॥ ५॥

—ऋग्वेद ७.३५.५

भावार्थ— हे दयालु प्रभो! आपकी करुणा और अनुग्रह से पूर्व कल्प के समान वर्तमान कल्प में भी प्रशंसनीय गुण-कर्मवाले द्युलोक तथा पृथिवीलोक हमारे लिए सुखकारी हों। अन्तरिक्ष हमारी दृष्टि के लिए सुखकारी हो। रोगनिवारक-पुष्टिकारक ओषधियाँ तथा वन में उत्पन्न होनेवाले वृक्ष एवं वनस्पतियाँ हमारे लिए कल्याणकारी हों। राष्ट्र का विजयशील नायक हमारे लिए कल्याणकारक हो॥ ७॥

शं न इन्द्रो वसुभिर् देवो अस्तु शमादित्येभिर् वरुणः सुशंसः। शं नो रुद्रो रुद्रेभिर् जलाषः शं नस् त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोतु॥ ६॥

—ऋग्वेद ७.३५.६

भावार्थ— हे परमेश्वर! आपकी कृपा और सहाय से पृथिवी-आदि लोकों के साथ दिव्य गुण-कर्म-स्वभाव से युक्त सूर्य हमारे लिए मङ्गलप्रद हो। मलों के शोधक प्रशंसनीय जल सूर्यकिरणों के साथ हमारे लिए सुखरूप हों। दुःखविनाशक राजा दुष्ट शत्रुओं को रुलानेवाले अपने न्यायपूर्ण कर्मों के द्वारा हमारे लिए कल्याणकारी हो। इस लोक में शिल्पी के समान काँट-छाँट करनेवाले विवेकशील विद्वान् वेदवाणियों के द्वारा हमें शान्ति का सन्देश सुनाएँ॥ ६॥

शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः। शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः॥ ७॥

—ऋग्वेद ७.३५.७

भावार्थ– हे जगदीश्वर! आपके अनुग्रह से सोम्य प्रकृति के लोग हमारे लिए शान्तिदायक हों। वेदज्ञान हमारा कल्याण करे। उपदेष्टा विद्वान् हमारे लिए कल्याणकारी हों। यज्ञ हमारे लिए सुखवर्षक हों। शुभकर्मों की मर्यादाएँ हमारे लिए सुखकारी हों। ओषधियाँ हमारे लिए शान्तिदायक हों। भूमि हमारे लिए कल्याणकारी हो॥ ७॥

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्त्रः प्रदिशो भवन्तु। शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः॥ ८॥—ऋग्वेद ७.३५.८

भावार्थ– हे परमेश्वर! आपकी कृपा से विशाल प्रकाशवाला सूर्य हमारे लिए सुखकारी होकर उदित हो। चारों प्रकृष्ट दिशाएँ हमारे लिए शान्ति देनेवाली हों। दृढ़ पर्वतमालाएँ हमारे लिए शान्ति देनेवाली हों। नदियाँ और समुद्र हमारे लिए शान्तिदायक हों और कुएँ-तालाब आदि के जल हमारे लिए शान्ति देनेवाले हों॥ ८॥

शं नो अदितिर् भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः। शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः॥ ९॥

—ऋग्वेद ७.३५.९

भावार्थ– हे परमेश्वर! आपकी कृपा से अखण्ड पृथिवी अपने

भौतिक नियमों से हमारे लिए कल्याण करनेवाली हो। सबको जीवन देनेवाले प्रशंसनीय प्राण हमारे लिए सुख देनेवाले हों। यज्ञ हमारे लिए कल्याण करनेवाला हो। हमारा भविष्य कल्याणमय हो तथा वायु भी हमारे लिए सुखरूप हो॥ ९॥

शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः। शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः॥ १०॥

—ऋग्वेद ७.३५.१०

भावार्थ— हे सकल संसार के उत्पादक और प्रकाशक प्रभु! आप निरन्तर हमारी रक्षा करते हुए हमारा कल्याण कीजिए, विशेषरूप से चमकनेवाली प्रभातवेलाएँ हमारे लिए कल्याण करनेवाली हों, मेघ हम प्रजाओं के लिए कल्याणकारक हों। निरन्तर मङ्गल करनेवाले, संसाररूपी खेत के स्वामी परमेश्वर! आप सदैव हमारे लिए मङ्गलमय हों॥ १०॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु। शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः॥ ११॥

—ऋग्वेद ७.३५.११

भावार्थ— हे परमेश्वर! आपकी कृपा से विद्या आदि शुभ गुण देनेवाले विद्वान् लोग हमारे लिए सुख प्रदान करनेवाले हों; प्राप्त की हुई विद्या उत्तम बुद्धि और कर्म से युक्त होकर हमारा कल्याण करे; आन्तरिक गुणों से सम्बन्ध रखनेवाले आत्मदर्शी विद्वान् हमें सुख और शान्ति देवें; विद्या आदि धन प्रदान करनेवाले गुरुजन भी हमें सुख-शान्ति देवें; दिव्य गुणों से युक्त पार्थिव पदार्थ हमारे लिए सुखकारी हों तथा जल में उत्पन्न होनेवाले पदार्थ भी हमारे लिए सुख प्रदान करनेवाले हों॥ ११॥

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः। शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु॥ १२॥

—ऋग्वेद ७.३५.१२

भावार्थ— हे जगदीश्वर! आपके अनुग्रह से सत्य वेद- विद्या के रक्षक विद्वान् हमारे लिए कल्याणकारी हों, उत्तम घोड़े हमारे लिए सुखरूप हों, दुधारू गउएँ हमें सुख प्रदान करें; पुण्य कर्म करनेवाले, उत्तम कार्यों में ही हाथ डालनेवाले मेधावी लोग हमारे लिए कल्याणकारी हों तथा जीवनरूपी यज्ञ में माता-पिता-आचार्य आदि ज्ञानी लोग हमारे लिए सुख प्रदान करनेवाले हों॥ १२॥

शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर् बुध्न्यः शं समुद्रः। शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु शं नः पृश्निर् भवतु देवगोपा॥ १३॥

—ऋग्वेद ७.३५.१३

भावार्थ— सकल ब्रह्माण्ड को अपने एकपात् अर्थात् अपने किञ्चित् मात्र सामर्थ्य में धारण करनेवाले, कभी उत्पन्न न होनेवाले, सकल दिव्य गुणों के दाता, प्रकाशक प्रभु! आप हमारे लिए कल्याणकारी हों, अन्तरिक्ष में रहनेवाला मेघ हमारे लिए शान्तिदायक हो, समुद्र हमारे लिए सुखकारक हो, पालना करनेवाली विद्युत् हमारे लिए कल्याण करनेवाली हो तथा दिव्य गुणयुक्त पदार्थों को अपने गर्भ में रखकर रक्षा करनेवाली पृथिवी हमारे लिए कल्याण करनेवाली हो॥ १३॥

इन्द्रो विश्वस्य राजति। शन्नो ऽ अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥ १४॥

—यजुर्वेद ३६.८

भावार्थ— हे सकल ब्रह्माण्ड के प्रकाशक एवं शासक परमेश्वर!

आपकी कृपा एवं अनुग्रह से हमारे दो पैरवाले पत्नी-पुत्र-सेवक आदि के लिए सुखमय वातावरण हो तथा हमारे चार पैरवाले गौ आदि पशुओं के लिए भी सुख ही सुख हों॥ १४॥

शन्नो वातः पवताꣳ शन्नस् तपतु सूर्यः। शन्नः कनिक्रदद् देवः पर्जन्यो ऽ अभि वर्षतु॥ १५॥ —यजुर्वेद ३६.१०

भावार्थ– हे जगदीश्वर! आपके अनुग्रह से पवित्र वायु हमारे लिए सुखकारक होकर प्रवाहित हो, देदीप्यमान सूर्य हमारे लिए सुखदायी होकर तपे। हे शान्ति के शाश्वत स्रोत! वर्षा द्वारा जल प्रदान करनेवाला बार-बार गर्जन करता हुआ मेघ हमारे लिए सब ओर से समुचित वर्षा करनेवाला हो॥ १५॥

अहानि शम्भवन्तु नः शꣳ रात्रीः प्रति धीयताम्। शन्न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न ऽ इन्द्रावरुणा रातहव्या। शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शँ योः॥ १६॥ —यजुर्वेद ३६.११

भावार्थ– हे परमेश्वर! आपकी कृपा से दिन हमारे लिए कल्याणकारी हों, रात्रियाँ सुख धारण करानेवाली हों, सूर्य और अग्नि अपनी दीप्तियों द्वारा हमारे लिए सुखदायक हों। शरीर में जीवन का संचार करनेवाले प्राण और अपान हमारे लिए सुखप्रद हों। जीवन-संग्राम में सूर्य और वायु हमारे लिए स्वास्थ्यप्रद हों। सुख के संचार के लिए सूर्य और चन्द्रमा हमारे लिए शान्तिप्रद हों॥ १६॥

शन्नो देवीरभिष्टय ऽ आपो भवन्तु पीतये। शँयोरभिस्रवन्तु नः॥ १७॥ —यजुर्वेद ३६.१२

भावार्थ– हे परम आनन्द के स्रोत परमेश्वर! आपकी कृपा और अनुग्रह से हमारे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक आदि अभीष्ट सुख की सिद्धि के लिए और पान करने के लिए दिव्य जल-धाराएँ शान्तिप्रद हों। शान्ति का संचार करनेवाले और रोग का निवारण करनेवाले ये जल हमारे अन्दर और बाहर– दोनों ओर बहें॥ १७॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर् विश्वे देवाः शान्तिर् ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ १८॥ —यजुर्वेद ३६.१७

भावार्थ– हे परमेश्वर! आपकी कृपा से प्रकाशमान द्युलोक शान्तिमय हो, पृथिवी शान्तिमय हो, जल शान्तिमय हों, सोमलता आदि ओषधियाँ शान्तिप्रद हों, वृक्ष-वनस्पतियाँ शान्तिमय हों, सूर्य-चन्द्र आदि सब दिव्य शक्तियाँ और विद्वान् लोग शान्ति प्रदान करनेवाले हों, जप और स्वाध्याय शान्तिप्रद हों, सकल ब्रह्माण्ड के सभी पदार्थ और उनकी दिव्य शक्तियाँ शान्तिमय हों। हे जगदीश्वर! सर्वत्र शान्ति ही शान्ति हो, सबको आह्लादित करनेवाली वह शान्ति मुझे प्राप्त हो। हे परम पिता! मुझे वह शान्ति प्रदान कीजिए कि मैं संघर्षों से जूझता हुआ भी सदा समुद्र के समान प्रशान्त और गम्भीर बना रहूँ॥ १८॥

तच्चक्षुर् देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥ १९॥ —यजुर्वेद ३६.२४

भावार्थ– हे करुणासागर प्रभु! वह तू सब लोक-लोकान्तरों का प्रकाशक चक्षु, देव-बुद्धिवाले मनुष्यों का परम हितकारी, सृष्टि-उत्पत्ति

से पूर्व तथा सृष्टि-प्रलय के पश्चात् भी वर्तमान, सृष्टि का कारणभूत, शुद्ध एवं पवित्र है। हे परम पिता! तेरी कृपा से हम तुझ परम ब्रह्म तथा तेरी अद्‌भुत सृष्टि को अपनी आन्तर एवं बाह्य आँखों से सौ वर्षों तक अर्थात् पूर्ण आयु तक देखें। हम सौ वर्षों तक प्राण धारण करें। हम अपने कानों से सौ वर्षों तक तेरा ही गुण-कीर्तन सुनें और अपनी वाणी से दूसरों को भी तेरे ही स्वरूप का उपदेश सौ वर्षों तक करें। सौ वर्षों तक हम किसी के सामने दीन-हीन न बनें।

हे दयालु देव! तेरी आज्ञा-पालन में विचरण करते हुए ही तेरी कृपा से हम सौ वर्षों के बाद भी देखें, जीएँ, सुनें, सुनाएँ और स्वतन्त्र रहें। हम किसी के अधीन न रहें, सदैव स्वाभिमानी होकर ही अपना जीवन व्यतीत करें। हम आपकी कृपा से स्वस्थ शरीर, दृढ़ इन्द्रिय तथा शुद्ध मनवाले होकर अपने आत्मा में सदा आनन्दित रहें॥ १९॥

शिव-संकल्प-मन्त्र (संख्या २०-२५ तक)

[*इन मन्त्रों का पाठ रात्री में सोने से पूर्व भी करना चाहिए*]

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ २०॥ —यजुर्वेद ३४.१

भावार्थ— जाग्रत अवस्था में जो मेरा मन दूर-दूर तक दौड़ता रहता है और वही मन उसी प्रकार स्वप्न अवस्था में भी चलता रहता है। हे कृपानिधान! आपकी कृपा से इन्द्रियरूपी ज्योतियों की ज्योति तथा प्रकाश से भी अधिक गतिशील वह मेरा मन शुभ संकल्पवाला हो अर्थात् मेरा मन अपने और दूसरों के लिए सदा कल्याण का ही संकल्प करे, किसी के प्रति अहित करने का भाव इसमें कभी पैदा न हो॥ २०॥

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ २१॥ —यजुर्वेद ३४.२

भावार्थ– जिस मन के द्वारा कर्मनिष्ठ, धैर्यशील, मनीषी विद्वान् यज्ञ और जीवन-संग्राम में कर्म करते हैं, जो मन अद्‌भुत सामर्थ्यवाला, अत्यन्त पूजनीय तथा सब प्रजाओं का आन्तर्-इन्द्रिय है, हे सर्वान्तर्यामिन् प्रभो! आपकी कृपा से इन्द्रियरूपी ज्योतियों की ज्योति तथा प्रकाश से भी अधिक गतिशील वह मेरा मन शुभ संकल्पवाला हो॥ २१॥

यत् प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ २२॥

—यजुर्वेद ३४.३

भावार्थ– जो मन उत्कृष्ट ज्ञान का साधन, दूसरों को चेतानेवाला तथा निश्चयात्मक वृत्तिवाला है, जो सब प्राणियों के अन्दर विद्यमान अमर ज्योति है, जिसके बिना कोई भी कर्म नहीं किया जा सकता, हे कृपानिधान! आपकी कृपा से इन्द्रियरूपी ज्योतियों की ज्योति तथा प्रकाश से भी अधिक गतिशील वह मेरा मन शुभ संकल्पवाला हो॥ २२॥

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परि-गृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस् तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ २३॥

—यजुर्वेद ३४.४

भावार्थ– जिस अमर मन के द्वारा योगी लोग भूत, भविष्यत् तथा वर्तमान का सब प्रकार का ज्ञान भली प्रकार किया करते हैं; पाँच ज्ञानेन्द्रियों, बुद्धि और आत्मावाला यह सप्तहोता जीवात्मा जिस मन के द्वारा यज्ञ आदि श्रेष्ठ कार्यों का ताना-बाना बुनता है, हे कल्याणवर्षक प्रभो! आपकी कृपा से इन्द्रियरूपी ज्योतियों की ज्योति तथा प्रकाश से भी अधिक गतिशील वह मेरा मन शुभ संकल्पवाला हो॥ २३॥

यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिꣳश्चित्तꣳ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ २४॥ —यजुर्वेद ३४.५

भावार्थ– रथचक्र के केन्द्र में जिस प्रकार अरे जुड़े रहते हैं उसी प्रकार जिस मन में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद प्रतिष्ठित होते हैं; जिस मन में समस्त प्राणियों की चिन्तन-शक्ति ओत-प्रोत रहती है, हे ज्ञाननिधान! आपकी कृपा से इन्द्रियरूपी ज्योतियों की ज्योति तथा प्रकाश से भी अधिक गतिशील वह मेरा मन शुभ संकल्पवाला हो॥ २४॥

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान् नेनीयतेऽभीशुभिर् वाजिन ऽ इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ २५॥ —यजुर्वेद ३४.६

भावार्थ– जैसे अच्छा सारथी लगामों द्वारा बलवान् घोडों को इच्छानुसार जहाँ चाहे ले जाता है, उसी प्रकार जो मन मनुष्य आदि प्राणियों को बलपूर्वक इधर-उधर घसीट ले जाता है; जो मन कभी बूढ़ा न होनेवाला नित्य नवीन, अत्यन्त वेगवाला तथा हृदय में प्रतिष्ठित रहनेवाला है, हे सर्वनियन्ता प्रभो! आपकी कृपा से इन्द्रियरूपी ज्योतियों की ज्योति तथा प्रकाश से भी अधिक गतिशील वह मेरा मन शुभ संकल्पवाला हो॥ २५॥

१ २ ३ २उ ३ १ २र ३ १ २र
स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते।
१ २ ३ १ २
शं राजन्नोषधीभ्यः॥ २६॥ —सामवेद उ० १.१.३

भावार्थ– हे प्रकाशस्वरूप सर्वत्र विराजमान परम पवित्र परमात्मन्!

आप हमें अन्दर-बाहर से पवित्र कर दें। प्रभो! आप हम पर सदैव अपनी करुणा की वृष्टि करें जिससे हमारे गो आदि पशुओं का कल्याण, मनुष्यमात्र के लिए शान्ति, घोड़ों के लिए सुख तथा वन-सम्पदा की रक्षा हो॥ २६॥

अभयं न करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे। अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु॥ २७॥ —अथर्ववेद १९.१५.५

भावार्थ— हे प्रभो! आप अपनी कृपा से हमारे हृदय-मन्दिर को भय-रहित कर दो। मस्तिष्क और शरीर इन दोनों को निर्भय बना दो अर्थात् हमें इनसे किसी प्रकार का भय अथवा अकल्याण प्राप्त न हो। हमें पीछे से=अदृश्य स्थान से निर्भयता हो, सामने से=प्रत्यक्ष स्थान से निर्भयता प्राप्त हो। ऊपर-नीचे से अर्थात् सब ओर से हमारे लिए निर्भयता हो॥ २७॥

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्। अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु॥ २८॥ —अथर्ववेद १९.१५.६

भावार्थ— हे सकल भयहर्ता प्रभो! आपके अनुग्रह से हमें मित्रों से अभय हो, क्रूर शत्रुओं से अभय हो, जाने हुए स्वार्थियों से अभय हो, पीठ पीछे अहित करनेवालों से अभय हो, रात्री में अभय हो, दिन में अभय हो। हे परम दयालु! सभी दिशाएँ और इनमें रहनेवाले समस्त प्राणी हमारे मित्र-स्नेही बन जाएँ॥ २८॥

॥ इति शान्तिकरणम्॥

॥ ओ३म् ॥

अग्निहोत्र का सामान्य प्रकरण (दैनिक हवन)

समिधा-चयन (४)

सबसे पहले आम, पीपल, ढाक, बड़, गूलर, बेल आदि की समिधाएँ हवन-कुण्ड में अच्छी प्रकार चयन कर लेवें ।

दीपक-प्रज्वलन (५)

फिर यजमान अपने सामने घी भरकर एक दीपक रखे, उसमें रूई की बत्ती रखे, फिर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर दियासलाई से दीपक प्रज्वलित करे :

ओ३म् भूर् भुवः स्वः ॥ -गोभिल गृह्यसूत्र १.१.११

भावार्थ– हे सर्वरक्षक सत्-चित्-आनन्दस्वरूप प्रभो! भूः-भुवः-स्वः = पृथिवी-अन्तरिक्ष-द्युलोक में विद्यमान अग्नि की प्रतीक रूप इस ज्योति को मैं प्रज्वलित करता हूँ, जिससे इन तीनों लोकों के ज्ञान का प्रकाश मेरे अन्दर हो सके॥ १ ॥

यज्ञकुण्ड में अग्नि-स्थापन (६)

यजमान हवन के चमसे में कपूर रखकर या चमसे में घी से भीगी रूई की बत्ती रखकर, उसे दीपक से जलाकर, नीचे लिखा मन्त्र पढ़े और यज्ञकुण्ड में अग्नि-स्थापन करे :

ओ३म्। भूर् भुवः स्वर् द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास् ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे॥

-यजुर्वेद ३.५

इस मन्त्र से यज्ञकुण्ड में अग्नि-स्थापन करके दीपक को यज्ञकुण्ड के उत्तर-पूर्व कोण में स्थापित कर देवें।

भावार्थ– भूः, भुवः, स्वः नामक तीनों लोकों में विद्यमान हे सर्वव्यापक, सर्वरक्षक, ज्योतिःस्वरूप परमेश्वर! 'मैं उच्चता-उदात्तता आदि महिमा में द्युलोक के समान एवं उदारता-सहनशीलता आदि श्रेष्ठ गुणसमूह में पृथिवी के समान हो जाऊँ'—इस कामना से तथा खाद्य अन्नों की प्राप्ति के लिए मैं इस अत्यन्त विस्तृत पृथिवी की पीठ पर हव्य-द्रव्य को सूक्ष्मरूप में सब तक पहुँचानेवाली अग्नि की स्थापना करता हूँ जो पृथिवी सब जड़-चेतन देवों की यजन-स्थली है॥ २॥

अग्नि-प्रदीपन (७)

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर यज्ञकुण्ड में छोटी-छोटी समिधाएँ रखकर स्थापित-अग्नि को प्रदीप्त करें :

ओ३म्। उद्बुद्ध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सꣳ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे ऽ अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥

–यजुर्वेद १५.५४

भावार्थ– हे दोषों का दहन करनेवाले, प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! मेरे अन्दर ज्ञान का प्रकाश करके अपनी ज्ञानाग्नि से मुझे समृद्ध करें, मुझे बोध करा, जगा और सावधान कर। हे पवित्र इच्छाओं को पूर्ण करनेवाले प्रभु! आप की कृपा से घर में सर्वोत्कृष्ट, सबके मिल-बैठने के स्थान इस यज्ञस्थल में सभी दिव्यगुणवाले विद्वान् और यज्ञ करनेवाले लोग आपस में मिलकर बैठें - सत्संगति करें - परस्पर संवाद द्वारा आत्मविकास करें॥

तीन समिधाएँ अग्नि के अर्पण (८)

आठ-आठ अँगुल की तीन समिधाएँ घी में डुबोकर रख लें, फिर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर एक-एक करके समिधा अग्नि में अर्पित करें :

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस् तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय। चास्मान् प्रजया पशुभिर् ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा॥ इदमग्नये जातवेदसे - इदन्न मम॥ १ ॥

–आश्वलायन गृह्यसूत्र १.१०.१२

(इस मन्त्र से पहली समिधा अर्पित करें)

भावार्थ– हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! यज्ञाग्नि में समर्पित यह समिधा अग्नि का जीवन है। जिस प्रकार इस समिधा से प्रत्येक पदार्थ को प्रकाशित करनेवाली यह अग्नि प्रदीप्त होती है और खूब बढ़ती है, उसी प्रकार आप भी हमें प्रजा, पशु, ब्रह्मतेज, खाने योग्य अन्न तथा खाए हुए अन्न को पचाने योग्य शक्ति से समृद्ध करें —यही हमारी प्रार्थना है। पदार्थमात्र को प्रकाशित करनेवाले प्रभु! लोककल्याण के लिए यह आहुति आपको समर्पित है, इसमें मेरा कोई स्वार्थ नहीं है॥ १॥

ओ३म्। समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर् बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन॥

सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा॥ इदमग्नये जातवेदसे - इदन्न मम॥ २ ॥

–यजुर्वेद ३.१–२

(इन दोनों मन्त्रों से दूसरी समिधा अर्पित करें)

भावार्थ– हे प्रभु! प्रतिदिन प्रातः सायं मैं समिधाओं से इस यज्ञाग्नि को प्रज्वलित करता रहूँ तथा जिस प्रकार अतिथि श्रद्धेय होता है उसी प्रकार पूर्ण श्रद्धाभाव से घृत द्वारा इस अग्नि को प्रदीप्त रखता रहूँ। सामग्री आदि हव्य पदार्थों से इसमें हवन करता रहूँ। सब पदार्थों में विद्यमान तथा पवित्र करनेवाली अग्नि में, उसे और अधिक प्रदीप्त करने

के लिए मैं अच्छी प्रकार तपे हुए घृत की आहुतियाँ देता रहूँ —यही मेरी प्रार्थना है। सर्वप्रकाशक प्रभु! यह आहुति आपको समर्पित है, यह मेरे लिए नहीं है॥ २॥

ओ३म्। तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा॥ इदमग्नयेऽङ्गिरसे - इदन्न मम॥ ३॥ -यजुर्वेद ३.३

(इस मन्त्र से तीसरी समिधा अर्पित करें)

भावार्थ— हे प्रभु! आप सब पदार्थों को प्राप्त करानेवाले, सर्वमहान्, सबको पवित्र करनेवाले तथा सर्वशक्तिमान् हैं। आपके इन्हीं गुणों से युक्त आपकी इस अग्नि को मैं समिधाओं तथा घृत की आहुतियों से बढ़ाता हूँ —यही मेरी प्रार्थना है। हे प्राणप्रिय प्रभु! निष्काम भाव से यह आहुति आपको समर्पित है॥ ३॥

घृत की पाँच आहुतियाँ (९)

नीचे लिखे मन्त्र को एक बार पढ़कर घी की एक आहुति दें। इस प्रक्रिया को पाँच बार दोहराएँ अर्थात् एक-एक करके **पाँच बार मन्त्र पढ़कर घी की कुल पाँच आहुतियाँ दें :**

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस् तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय। चास्मान् प्रजया पशुभिर् ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा॥ इदमग्नये जातवेदसे - इदन्न मम॥ १॥

-आश्वलायन गृह्यसूत्र १.१०.१२

भावार्थ— हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! यज्ञाग्नि में समर्पित यह समिधा अग्नि का जीवन है। जिस प्रकार इस समिधा से प्रत्येक पदार्थ को प्रकाशित करनेवाली यह अग्नि प्रदीप्त होती है और खूब बढ़ती है, उसी

प्रकार आप भी हमें प्रजा, पशु, ब्रह्मतेज, खाने योग्य अन्न तथा खाए हुए अन्न को पचाने योग्य शक्ति से समृद्ध करें —यही हमारी प्रार्थना है। सर्वप्रकाशक प्रभु! यह आहुति आपको समर्पित है, यह मेरे लिए नहीं है॥

जल-प्रसेचन (१०)

दाएँ हाथ की अंजली में जल लेकर, नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर **यज्ञकुण्ड की पूर्व दिशा में** *दक्षिण से उत्तर की ओर* जल छिड़कें:

ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व॥ –गोभिल गृह्यसूत्र १.३.१

भावार्थ– हे अखण्ड-एकरस परमेश्वर! आप हमें यज्ञ के अनुकूल बुद्धि प्रदान करें, जिससे हम जल द्वारा यज्ञ का मार्ग प्रशस्त कर सकें॥

दाएँ हाथ की अंजली में जल लेकर, नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर **यज्ञकुण्ड की पश्चिम दिशा में** *दक्षिण से उत्तर की ओर* जल छिड़कें:

ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व॥ –गोभिल गृह्यसूत्र १.३.२

भावार्थ– हे अनुमानगम्य परमेश्वर! आप हमें यज्ञ के अनुकूल बुद्धि प्रदान करें, जिससे हम याज्ञिकबुद्धि होकर वेद-विहित धर्म का पालन कर सकें॥

दाएँ हाथ की अंजली में जल लेकर,नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर **यज्ञकुण्ड की उत्तर दिशा में** *पश्चिम से पूर्व की ओर* जल छिड़कें :

ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व॥ –गोभिल गृह्य० १.३.३

भावार्थ– हे ज्ञान के शाश्वत स्रोत प्रभु! आप हमें यज्ञ के अनुकूल ज्ञान प्रदान करें, जिससे हम पवित्र ज्ञानवाले होकर निष्काम भाव से यज्ञ आदि शुभ कर्मों का अनुष्ठान कर सकें॥

दाएँ हाथ की अंजली में जल लेकर, नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर यज्ञकुण्ड की *पूर्व दिशा के मध्य से आरम्भ करके* **यज्ञकुण्ड के चारों ओर** जल छिड़कें :

ओ३म्। देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर् वाचं नः स्वदतु॥

–यजुर्वेद ३०.१

भावार्थ– हे सबको उत्पन्न करनेवाले सर्वप्रेरक प्रभु! आप सुख-सौभाग्य की प्राप्ति के लिए प्रत्येक मनुष्य के हृदय में यज्ञ आदि श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा दीजिए तथा यज्ञ के रक्षक यजमान को सब प्रकार से समृद्ध कीजिए। हे दिव्यस्वरूप, वेदवाणी के धारक, ज्ञान द्वारा हमारे जीवनों को पवित्र करनेवाले प्रभु! हमारे ज्ञान को पवित्र कीजिए। हे वाणी के स्वामी परमपिता! हमारी वाणी में मधुरता भर दीजिए॥

घृत की चार आघार-आज्यभाग आहुतियाँ (११)

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर पहली आहुति घृत की धार बाँध कर यज्ञकुण्ड के **उत्तर-भाग में** *पश्चिम से पूर्व की ओर* जलती हुई अग्नि पर देवें :

ओ३म् अग्नये स्वाहा॥ इदमग्नये - इदन्न मम॥ १ ॥

–यजुर्वेद २२.२७

भावार्थ– हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर! 'मैं भी आपके गुणानुरूप ज्ञानवान् बन जाऊँ' —इस भावना से यह आहुति आपको समर्पित करता

हूँ। हे प्रकाशस्वरूप प्रभु! यह समस्त हव्य-द्रव्य आपका ही प्रदान किया हुआ **है** —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर दूसरी आहुति घृत की धार बाँध कर यज्ञकुण्ड के **दक्षिण-भाग में** *पश्चिम से पूर्व की ओर* जलती हुई अग्नि पर देवें :

ओ३म् सोमाय स्वाहा॥ इदं सोमाय - इदन्न मम॥ २॥ –यजुर्वेद २२.२८

भावार्थ– हे सौम्यस्वरूप परमेश्वर! 'मैं भी आपके गुणानुरूप कान्त, शान्त और सौम्यस्वभाव बन जाऊँ' —इस भावना से यह आहुति आपको समर्पित करता हूँ। हे शान्तस्वरूप परम पिता परमात्मा! यह समस्त हव्य-द्रव्य आपका ही है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥

नीचे लिखे मन्त्रों को पढ़कर **शेष दो आहुतियाँ** घृत की धार बाँध कर **यज्ञकुण्ड के मध्य** में देवें :

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा॥ इदं प्रजापतये - इदन्न मम॥ ३॥ –यजुर्वेद २२.३२

भावार्थ– हे प्रजापालक परमेश्वर! 'मैं भी आपके गुणानुरूप प्रजापति बन जाऊँ' —इस भावना से यह आहुति आपको समर्पित करता हूँ। हे प्रजापति! यह समस्त हव्य-द्रव्य आपका ही है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥

ओ३म् इन्द्राय स्वाहा॥ इदमिन्द्राय -इदन्न मम॥ ४॥ –यजुर्वेद २२.६

भावार्थ– हे परम ऐश्वर्यशाली परमात्मा! शान्त, कान्त और सौम्यस्वभाव बनने के लिए मैं अपना सर्वस्व आपको अर्पित करता हूँ। हे सौम्यरूप प्रभु! यह समस्त हव्य-द्रव्य आपका ही है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं॥

घृत और सामग्री की आहुतियाँ (१२)

नीचे लिखे मन्त्रों से यजमान घी की तथा दूसरे याजक सामग्री की आहुतियाँ देवें:

(प्रातःकाल की चार आहुतियाँ)

ओ३म्। सूर्यो ज्योतिर् ज्योतिः सूर्यः स्वाहा॥ १ ॥ –यजुर्वेद ३.९

भावार्थ– हे प्रभु ! आप सकल चराचर जगत् के आत्मा, प्रकाशकों के भी प्रकाशक तथा सर्वप्रेरक हैं। हे प्रभु ! निःस्वार्थ भाव से यह आहुति आपको श्रद्धापूर्वक समर्पित करता हूँ॥ १ ॥

ओ३म्। सूर्यो वर्चो ज्योतिर् वर्चः स्वाहा॥ २ ॥ –यजुर्वेद ३.९

भावार्थ– हे प्रभु ! आप प्रकाशस्वरूप, ज्ञान के शाश्वत स्रोत तथा ज्ञानियों को भी ज्ञान देनेवाले हैं। हे प्रियतम देव ! लोक-कल्याण के लिए यह आहुति आपको विनम्र भाव से समर्पित करता हूँ॥ २ ॥

ओ३म्। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ ३ ॥ –यजुर्वेद ३.९

भावार्थ– हे ज्योतिःस्वरूप परमात्मा ! आप स्वयं प्रकाशमान तथा सूर्य आदि के भी प्रकाशक हैं। हे परम पिता परमेश्वर ! यह आहुति लोक-कल्याण के लिए निःस्वार्थभाव से आपको सादर समर्पित करता हूँ ॥ ३ ॥

ओ३म्। सजूर् देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या। जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥ ४ ॥ –यजुर्वेद ३.१०

भावार्थ– हे प्रभु! आप समस्त चराचर जगत् की प्रकाशक तथा प्रेरक शक्तियों से स्वयं सम्पन्न हैं और ऐश्वर्यशालिनी उषा से इस जगत् को संयुक्त करते हैं। सबसे प्रीति करनेवाले , सबके अंग-अंग में व्याप्त, सर्वान्तर्यामी प्रभु! आप अपने कृपाकटाक्ष से मुझमें व्याप्त हो जाएँ और अपनी ज्योति से मेरे हृदय को आलोकित कर दें। प्रियतम देव! लोक-कल्याण के लिए यह आहुति आपको प्रेमपूर्वक समर्पित करता हूँ॥ ४॥

(सांयकाल की चार आहुतियाँ)

ओ३म् । अग्निर् ज्योतिर् ज्योतिरग्निः स्वाहा॥ १ ॥ –यजुर्वेद ३.९

भावार्थ– हे प्रभु! आप ज्ञानस्वरूप, प्रकाशकों के भी प्रकाशक तथा सबके अग्रणी हैं। प्रियतम देव! लोक-कल्याण के लिए यह आहुति आपको सादर समर्पित करता हूँ॥ १॥

ओ३म्। अग्निर् वर्चो ज्योतिर् वर्चः स्वाहा॥ २ ॥ –यजुर्वेद ३.९

भावार्थ– हे प्रभु! आप प्रकाशस्वरूप, ज्ञानस्वरूप तथा ज्ञानियों के भी ज्ञानदाता हैं। हे भक्तवत्सल, देवाधिदेव प्रभु! लोक-कल्याण के लिए यह आहुति आपको श्रद्धाभाव से सादर समर्पित करता हूँ॥ २॥

ओ३म्। अग्निर् ज्योतिर् ज्योतिरग्निः स्वाहा॥ ३ ॥ –यजुर्वेद ३.९

(इस तीसरे मन्त्र का मन में उच्चारण करके आहुति दें)

भावार्थ– हे प्रभु! आप ज्ञानस्वरूप, प्रकाशकों के भी प्रकाशक तथा सबके अग्रणी हैं। हे प्रियतम देव! लोक-कल्याण के लिए यह आहुति आपको सादर समर्पित करता हूँ॥ ३॥

ओ३म्। स॒जूर् दे॒वेन॑ सवि॒त्रा स॒जू रात्र्येन्द्र॑वत्या। जुषा॒णो ऽ अ॒ग्निर् वे॑तु स्वाहा॑ ॥ ४॥

–यजुर्वेद ३.१०

भावार्थ– हे प्रभु! आप समस्त चराचर जगत् की प्रकाशक तथा प्रेरक शक्तियों से स्वयं सम्पन्न हैं। आप ही ऐश्वर्यशाली चन्द्रमा के प्रकाशवाली रात्री से इस जगत् को संयुक्त करते हैं। सबसे प्रीति करनेवाले , सबके अंग-अंग में व्याप्त होनेवाले, सर्वान्तर्यामी प्रभु! आप अपने कृपाकटाक्ष से मुझमें व्याप्त हो जाएँ और अपनी ज्योति से मेरे हृदय को ज्ञान के प्रकाश से भर दें। हे प्रियतम देव! लोक-कल्याण के लिए यह आहुति आपको निःस्वार्थ भाव से सादर समर्पित करता हूँ॥ ४॥

(प्रातःकाल तथा सायंकाल की आठ सामान्य आहुतियाँ)

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा॥ इदमग्नये प्राणाय - इदन्न मम॥ १ ॥

भावार्थ– हे प्रभु! आप सत्-स्वरूप, प्राणों के प्राण, ज्ञानस्वरूप तथा प्राणदाता हैं। हे प्रकाशस्वरूप, प्राणदाता परमेश्वर! यह आहुति लोक-कल्याण के लिए निःस्वार्थभाव से आपको सादर समर्पित करता हूँ —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ १॥

ओ३म् भुवर् वायवेऽ पानाय स्वाहा ॥ इदं वायवेऽ पानाय - इदन्न मम ॥ २॥

भावार्थ– हे प्रभु! आप चित्-स्वरूप, दुःख-विनाशक, सर्वशक्तिमान् तथा भक्तों के अज्ञान एवं दुःख को दूर करनेवाले हैं। हे अत्यन्त बलवान्, दुःखहर्ता प्रभु! लोक-कल्याण के लिए यह आहुति आपको निःस्वार्थभाव से सादर समर्पित करता हूँ —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ २॥

ओ३म् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ॥ इदमादित्याय व्यानाय -इदन्न मम ॥ ३ ॥

भावार्थ– हे प्रभु! आप आनन्दस्वरूप, अखण्ड-एकरस तथा सर्वव्यापक हैं। हे अखण्डैकरस, कण-कण में व्यापक प्रभु! यह आहुति लोक-कल्याण के लिए निःस्वार्थभाव से आपको सादर समर्पित करता हूँ —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ ३॥

ओ३म्। भूर् भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा॥ इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः -इदन्न मम ॥ ४॥

भावार्थ– हे सत्-चित्-आनन्दस्वरूप प्रभु! आप प्राणों के प्राण, दुःख-विनाशक, सुखस्वरूप, प्रकाश के पुञ्ज, अनन्त बलवान्, अखण्डैकरस, प्राणदाता, दुःखहर्ता तथा सर्वव्यापक हैं। हे ज्ञानस्वरूप, सर्वसमर्थ, अविनाशी, प्राणरूप तथा अज्ञान-अन्धकार को दूर हटानेवाले प्रभु! यह आहुति निःस्वार्थभाव से आपको सादर समर्पित है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ ४॥

ओ३म्। आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर् भुवः स्वरों स्वाहा॥ ५॥

भावार्थ– हे प्रभु! आप सर्वव्यापक, ज्योतिःस्वरूप, परम रसरूप, अविनाशी, सर्वमहान्, प्राणों के प्राण,दुःख-विनाशक तथा सुखस्वरूप हैं। हे परम ब्रह्म परमेश्वर! यह आहुति आपको सादर समर्पित है॥ ५॥

ओ३म्। यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा॥ ६॥

–यजु०३२.१४

भावार्थ– हे सर्वरक्षक, ज्ञानस्वरूप, ज्ञानप्रकाशक प्रभु! सभी विद्वान् लोग तथा ज्ञानी मनुष्य जिस मेधा बुद्धि को प्राप्त करने के लिए सदैव उद्यत रहते हैं; प्रभुवर! उसी मेधा बुद्धि से युक्त कर मुझे भी आज ही मेधावी बना दीजिए —यही मेरी हार्दिक प्रार्थना है, स्वीकार कीजिए। हे दयालु देव! यह आहुति आपको सादर समर्पित है॥ ६॥

ओ३म्।विश्वानि देव सवितर् दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा॥ ७॥

–यजुर्वेद ३०.३

भावार्थ– हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्य युक्त परमेश्वर! आप हमारी उन्नति और सुख के बाधक समस्त दुर्गुणों को दूर कर हमारे अन्दर अभ्युदय तथा निःश्रेयस् की सिद्धि करवानेवाले समस्त शुभ गुणों एवं कर्मों को धारण कराइए। हे प्रभु! यह आहुति आपको सादर समर्पित है ॥ ७॥

ओ३म्। अग्ने नय सुपथा राये ऽ अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम ऽ उक्तिं विधेम स्वाहा॥ ८॥

–यजुर्वेद ४०.१६

भावार्थ– हे ज्ञानस्वरूप प्रभु! आप हमें ऐश्वर्य की प्राप्ति केलिए अच्छे धर्मयुक्त मार्ग से ले चलिए। प्रभुवर! आप हमारे सम्पूर्ण ज्ञान और कर्मों को सदा जानते हैं, अतः हम लोगों को कुटिलतायुक्त पापरूप कर्मों से सदैव दूर कीजिए। हम विनम्रभाव से आपकी बारम्बार स्तुति करते हैं। हे प्रकाशस्वरूप परमात्मा! यह आहुति आपको सप्रेम समर्पित है॥

सामान्य-यज्ञों में अतिरिक्त विधि (१५)

यहाँ तक सामान्य अग्निहोत्र की आहुतियाँ देने के पश्चात् अभीष्ट उद्देश्य के अनुसार :

卐 *गायत्री , महामृत्युञ्जय आदि मन्त्रों की आहुतियाँ*

卐 *वेद-पारायण यज्ञों में सम्पूर्ण वेद अथवा वेदों के मन्त्रों की आहुतियाँ*

卐 *विशेष-यज्ञ में वेद के किसी अध्याय या सूक्त के मन्त्रों की आहुतियाँ, पौर्णमासी अथवा अमावस्या यज्ञ की आहुतियाँ*

卐 *दीपावली आदि पर्वों पर आर्य-पर्व-पद्धति में लिखे गए मन्त्रों की आहुतियाँ*

卐 *जन्म-दिवस आदि पर विशेष मन्त्र-समूह की आहुतियाँ*

—ये सभी आहुतियाँ इसी स्थान पर दी जाती हैं। इन विशेष-यज्ञों में उक्त आहुतियाँ देने के पश्चात् अगले पृष्ठ पर लिखे **पूर्णाहुति-प्रकरण** की आहुतियाँ देना भी आवश्यक होता है। यज्ञ करवानेवाले पुरोहित तथा यज्ञ करनेवाले यजमान इस विधि का विशेष ध्यान रखें।

गायत्री-मन्त्र की आहुतियाँ

इसके पश्चात् **इच्छानुसार** तीन या अधिक बार नीचे लिखा **गायत्री-मन्त्र** पढ़कर आहुतियाँ देनी चाहिए :

ओ३म्। भूर् भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा॥

–यजुर्वेद ३६.३

भावार्थ– हे सर्वरक्षक, सत्-चित्-आनन्दस्वरूप, सब जगत् के उत्पन्न करनेवाले, ऐश्वर्यप्रदाता, परम दयालु देव! आपके अत्यन्त ग्रहण करने योग्य 'भर्ग' नामक शुद्ध विज्ञानस्वरूप को हम अपने आत्मा में धारण करते हैं। हे भर्गस्वरूप भगवन्! आप हमारी बुद्धियों, कर्मों,प्राणशक्ति और वाणी को सदा सन्मार्ग में प्रेरित करें। हे सविता देव! यह आहुति निःस्वार्थभाव से आपको श्रद्धापूर्वक समर्पित है॥

अथ पूर्णाहुति-प्रकरणम्

विशेष-यज्ञों में सामान्य अग्निहोत्र तथा विशेष-यज्ञ की सभी आहुतियाँ देने के पश्चात् इस पूर्णाहुति-प्रकरण की आहुतियाँ दें :

घृत की चार आघार-आज्यभाग आहुतियाँ (१६)

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर पहली आहुति घृत की धार बाँध कर यज्ञकुण्ड के **उत्तर-भाग में** *पश्चिम से पूर्व की ओर* जलती हुई अग्नि पर देवें :

ओ३म् अग्नये स्वाहा॥ इदमग्नये - इदन्न मम॥ १ ॥ -यजुर्वेद २२.२७

भावार्थ– हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर! 'मैं भी आपके गुणानुरूप ज्ञानवान् बन जाऊँ' —इस भावना से यह आहुति आपको समर्पित करता हूँ। हे प्रकाशस्वरूप प्रभु! यह समस्त हव्य-द्रव्य आपका ही प्रदान किया हुआ है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर दूसरी आहुति घृत की धार बाँध कर यज्ञकुण्ड के **दक्षिण-भाग में** *पश्चिम से पूर्व की ओर* जलती हुई अग्नि पर देवें :

ओ३म् सोमाय स्वाहा॥ इदं सोमाय - इदन्न मम॥ २ ॥ -यजुर्वेद २२.२८

भावार्थ– हे सौम्यस्वरूप प्रभु! 'मैं भी आपके गुणानुरूप कान्त, शान्त और सौम्यस्वभाव बन जाऊँ' —इस भावना से यह आहुति आपको समर्पित करता हूँ। हे शान्तरूप परमेश्वर ! यह समस्त हव्य-द्रव्य आपका ही है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥

नीचे लिखे मन्त्रों को पढ़कर शेष दो आहुतियाँ घृत की धार बाँध कर यज्ञकुण्ड के मध्य में देवें :

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा॥ इदं प्रजापतये - इदन्न मम॥ ३ ॥ -यजुर्वेद २२.३२

भावार्थ– हे प्रजापालक परमेश्वर! 'मैं भी आपके गुणानुरूप प्रजापति बन जाऊँ' —इस भावना से यह आहुति आपको समर्पित करता हूँ। हे प्रजापति! यह समस्त हव्य-द्रव्य आपका ही है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥

ओ३म् इन्द्राय स्वाहा॥ इदमिन्द्राय - इदन्न मम॥ ४॥

–यजुर्वेद २२.६

भावार्थ– हे परम ऐश्वर्यशाली परमात्मा! शान्त, कान्त और सौम्यस्वभाव बनने के लिए मैं अपना सर्वस्व आपको अर्पित करता हूँ। हे सौम्यरूप प्रभु! यह समस्त हव्य-द्रव्य आपका ही है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं॥

घृत की चार व्याहति-आहुतियाँ (१७)

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा॥ इदमग्नये - इदन्न मम॥ १॥

भावार्थ– हे प्रभु! आप प्राणों के प्राण तथा ज्ञानस्वरूप हैं। हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! यह आहुति आपको निःस्वार्थभाव से सादर समर्पित करता हूँ—इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ १॥

ओ३म् भुवर् वायवे स्वाहा ॥ इदं वायवे- इदन्न मम ॥ २॥

भावार्थ– हे प्रभु! आप दुःख-विनाशक तथा सर्वशक्तिमान् हैं। हे सर्वसमर्थ प्रभु! यह आहुति आपको श्रद्धाभाव से सादर समर्पित करता हूँ —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ २॥

ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा ॥ इदमादित्याय -इदन्न मम ॥ ३॥

भावार्थ– हे प्रभु! आप आनन्दस्वरूप तथा अखण्ड-एकरस हैं। हे अखण्ड-एकरस प्रभु! यह आहुति आपको सादर समर्पित करता हूँ — इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ ३॥

ओ३म् भूर् भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा॥ इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः -इदन्न मम ॥ ४॥

भावार्थ– हे सत्-चित्-आनन्दस्वरूप प्रभु! आप प्रकाश के पुञ्ज, अनन्त बलवान् तथा अखण्ड-एकरस हैं। हे ज्ञानस्वरूप, सर्वसमर्थ, अविनाशी प्रभु! यह आहुति निःस्वार्थभाव से आपको सादर समर्पित है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ ४ ॥

स्विष्टकृत् - आहुति (१८)

इसके पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर भात, घृत अथवा मिष्टान्न की आहुति दें :

ओ३म् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद् वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान् नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा ॥ इदमग्नये स्विष्टकृते - इदन्न मम ॥

-आश्वलायन-गृह्यसूत्र १.१०.२२

भावार्थ– हे समस्त दोषों का निवारण करनेवाले, सकल इष्ट कामनाओं को पूर्ण करनेवाले, प्रकाशस्वरूप प्रभु! मेरी अज्ञानतावश इस यज्ञकर्म में मेरे द्वारा जो विधि से अधिक क्रिया हो जाए अथवा इस यज्ञ-

अनुष्ठान में कोई क्रिया विधि से कम हो जाए, उस अधिकता या न्यूनता को आप भली प्रकार जान लेते हैं। हे प्रभु! आप मेरी अल्पज्ञता को ध्यान में रखते हुए उसे ही यथोचित रूप से किया हुआ स्वीकार करें अर्थात् उत्तम फलदायक बनाएँ। हे पूर्णकाम, यज्ञों को सफल करनेवाले, सब प्रायश्चित्त आहुतियों तथा समस्त कामनाओं को पूर्ण करनेवाले ज्ञानस्वरूप परमात्मा! आप हमारी यज्ञ-विषयक सम्पूर्ण कामनाओं को कृपा करके पूर्ण कीजिए। समस्त यज्ञों को सफलीभूत करनेवाले, प्रकाशस्वरूप प्रभु! यह आहुति लोक-कल्याण के लिए निःस्वार्थभाव से आपको सादर समर्पित है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥

प्राजापत्य-आहुति (१९)

इसके पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र का **उच्चारण मन में** करके **केवल घृत की आहुति** दें :

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा॥ इदं प्रजापतये - इदन्न मम॥ ३॥

–यजुर्वेद २२.३२

भावार्थ– हे प्रजापालक परमेश्वर! 'मैं भी आपके गुणानुरूप प्रजापति बन जाऊँ' —इस भावना से यह आहुति आपको समर्पित करता हूँ। हे प्रजापति! यह समस्त हव्य-द्रव्य आपका ही है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥

घृत की चार पवमान-आहुतियाँ (२०)

इसके पश्चात् नीचे लिखे मन्त्रों से चार पवमान आहुतियाँ घृत की देवें :

ओ३म्। भूर् भुवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा॥ इदमग्नये पवमानाय - इदन्न मम॥ १॥

—ऋग्वेद ९.६६.१९

भावार्थ– हे सर्वरक्षक, सत्-चित्-आनन्दस्वरूप, ज्ञानस्वरूप

परमेश्वर! आप हमारे जीवनों को पवित्र करनेवाले हैं। हे प्रभु! आप हमारे लिए प्रचुर मात्रा में अन्न और बल प्रदान कीजिए तथा रोगकारक कीटाणुओं एवं बुरे विचारों को हमसे दूर कीजिए। हे परम पवित्र, प्रकाशस्वरूप प्रभु! यह आहुति आपको सादर समर्पित है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ १॥

ओ३म्। भूर् भुवः स्वः। अग्निर् ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयं स्वाहा॥ इदमग्नये पवमानाय - इदन्न मम॥ २॥ —ऋग्वेद ९.६६.२०

भावार्थ– हे सर्वरक्षक, सत्-चित्-आनन्दस्वरूप, ज्ञानस्वरूप, सर्वद्रष्टा, मनुष्य मात्र के अभीष्ट तथा सर्वप्रथम हितकारक जगदीश्वर! आप सबके प्रशंसनीय हैं, हम अतिप्रेम और भक्ति से आपकी स्तुति करते हैं। हे परम पवित्र, प्रकाशस्वरूप प्रभु! यह आहुति लोक-कल्याण के लिए निःस्वार्थभाव से आपको सादर समर्पित है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ २॥

ओ३म्। भूर् भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधद् रयिं मयि पोषं स्वाहा॥ इंदमग्नये पवमानाय - इदन्न मम॥ ३॥ —ऋग्वेद ९.६६.२१

भावार्थ– हे सर्वरक्षक, सच्चिदानन्दस्वरूप, प्रकाशपुञ्ज प्रभु! आप हमारे जीवनों को पवित्र करनेवाले तथा यज्ञादि उत्तम कर्मों के अधिष्ठाता हैं। हे प्रभु! आप हमें दान और भोग करने योग्य धन प्रदान करते हुए हमें पुष्टिकारक अन्न, बल और तेज प्रदान कीजिए। हे परम पावन, ज्ञानस्वरूप प्रभु! यह आहुति आपको लोक-कल्याण के लिए निःस्वार्थभाव से सादर समर्पित है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ ३॥

ओ३म्। भूर् भुवः स्वः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास् ते जुहुमस् तन्नो ऽअस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा॥ इदं प्रजापतये-इदन्न मम॥ ४॥

—ऋग्वेद १०.१२१.१०

भावार्थ— हे सर्वरक्षक, सच्चिदानन्दस्वरूप, प्रजापालक प्रभु! आपसे भिन्न दूसरा कोई उन-इन-सब उत्पन्न हुए जड़-चेतनादिकों को नहीं तिरस्कार करता है अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। जिस-जिस पदार्थ की कामनावाले हम लोग आपका आश्रय लेवें और वाञ्छा करें उस-उसकी कामना हमारी सिद्ध होवे, जिससे हम लोग धनैश्वर्यों के स्वामी होवें। हे परमपावन, अग्निरूप प्रभु! लोक-कल्याण के लिए निःस्वार्थभाव से यह आहुति आपको सादर समर्पित है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ ४॥

घृत की आठ आज्य-आहुतियाँ (२१)

इसके पश्चात् नीचे लिखे मन्त्रों से आठ आज्य-आहुतियाँ घृत की देवें :

ओ३म्। त्वं नो ऽ अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्याम् -इदन्न मम॥ १॥

—ऋग्वेद ४.१.४

भावार्थ— हे सर्वरक्षक, प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! आप हमारे जीवनों को जानते हैं, हमारे गुणों-अवगुणों से परिचित हैं। हे परम पिता! हमारे हृदयों में वरणीय विद्वानों के प्रति जो-जो अनादर या अवहेलना का

भाव जब-जब पैदा हो, उसे आप दूर कीजिए। हे प्रभु! आप सृष्टि-यज्ञ के परम याजक, सृष्टि के समस्त क्रिया-कलाप को वहन करनेवाले तथा परम तेजस्वी हैं। हे प्रकाशस्वरूप, वरण करने योग्य जगदीश्वर! हमारे हृदयों में विद्यमान सकल द्वेषभावों को आप दूर कर दीजिए, हमारे हृदयों में पवित्रता भर दीजिए —इसी भावना से यह आहुति आपको पूर्ण श्रद्धाभाव से समर्पित करता हूँ, यह समस्त हव्य-द्रव्य आपका ही है, आप द्वारा प्रदत्त वस्तु आपको ही समर्पित है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ १॥

ओ३म्। स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो ऽ अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्याम् -इदन्न मम॥ २॥

—ऋग्वेद ४.१.५

भावार्थ— हे ज्ञानस्वरूप प्रभु! आप हमारे परम रक्षक हैं, इस उषःकालीन प्रकाशमयी वेला में अपने रक्षाभाव से आप हमारे अंग-संग बने रहें। हे प्रभु! अपने श्रेष्ठ ज्ञान का दान देते हुए हमारे अज्ञान को दूर कीजिए, हमें सब प्रकार का सुख प्रदान कीजिए और हमारी शुभ पुकार को सुनते हुए हमें उत्साहित कीजिए। हे प्रकाशरूप, वरेण्य जगदीश्वर! यह आहुति आपको सादर समर्पित करता हूँ—इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ २॥

ओ३म्। इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय। त्वामवस्युरा चके स्वाहा ॥ इदं वरुणाय-इदन्न मम॥ ३॥

—ऋग्वेद १.२५.१९

भावार्थ— हे उपास्य देव! आपका रक्षा-कवच पाने की इच्छा से मैं आपको बार-बार पुकारता हूँ, आप मेरी पुकार को अविलम्ब सुनिए और अपने रक्षा-कवच में लेकर मुझे सुखी कीजिए — हे वरेण्य प्रभु!

इसी भावना से यह आहुति आपको सप्रेम समर्पित करता हूँ —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ ३॥

ओ३म्। तत् त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस् तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः स्वाहा॥ इदं वरुणाय-इदन्न मम॥ ४॥

—ऋग्वेद १.२४.११

भावार्थ— हे उपासनीय प्रभु! वेद-मन्त्रों से आपकी वन्दना करता हुआ मैं आपसे उसी पूर्ण आयु की याचना करता हूँ, जिस आयु की कामना हव्य-द्रव्यों द्वारा हवन करनेवाला यजमान किया करता है। हे सबके वरण करने योग्य तथा अति प्रशंसनीय प्रभु! आप मेरे इसी जीवन में मुझे सच्चा बोध प्रदान करें और हमारी आयु का हरण कभी मत करें अर्थात् हमें असमय में ही मृत्यु का ग्रास न बनना पड़े —इसी भावना से यह आहुति आपको समर्पित करता हूँ — इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ ४॥

ओ३म्। ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञिया पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो ऽ अद्य सवितोत विष्णुर् विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः-इदन्न मम॥ ५॥

—कात्यायनश्रौतसूत्र २५.१.११

भावार्थ— हे सब बन्धनों को शिथिल करनेवाले, सृष्टिकर्ता, सर्वव्यापक प्रभु! हमारे यज्ञीय कार्यों में जो-जो सैंकडों-हजारों कठोर बाधाएँ फैली हुई हैं, उन बाधाओं से आप हमें मुक्त कर दें और आपकी कृपा से भली-भाँति सत्कार के योग्य विद्वान् लोग भी हमारा मार्गदर्शन

कर हमें बाधाओं से मुक्त होने में सहायक हों —इसी भावना से यह आहुति आपको सादर समर्पित करता हूँ। हे वरणीय, जगत्-कर्ता, सर्वत्र व्यापक, देवाधिदेव, प्राण-प्रदाता, श्रद्धापूर्वक अर्चनीय प्रभु! यह समस्त हव्य-द्रव्य आपका ही है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ ५॥

ओ३म्। अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित् त्वमया असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजं स्वाहा॥ इदमग्नये अयसे-इदन्न मम॥ ६॥

—का०श्रौ० २५.१.११

भावार्थ— हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! आप सर्वव्यापक तथा न झुठलाए जाने योग्य प्रशंसनीय परम सत्य के रक्षक हैं। प्रभु! यह बात पूर्ण सत्य है कि आप ही समस्त सुखसाधनों के प्राप्त करवानेवाले हैं। हे स्वर्ण के समान तेजस्वी प्रभु! आप ही हमारे यज्ञ की आहुतियों को आकाश-मण्डल तक पहुँचानेवाले हैं। हे सबको आश्रय प्राप्त करवानेवाले पिता! आप हममें रोग-निवारक शक्ति धारण करवाएँ जिससे हम स्वस्थ-सुखमय-दीर्घ जीवन प्राप्त कर सकें। हे सर्वप्रकाशक तथा सर्वसुखसाधक प्रभु! —इसी भावना से यह आहुति आपको समर्पित करता हूँ —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ ६॥

ओ३म्। उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा॥ इदं वरुणायाऽऽदित्यायाऽदितये च - इदन्न मम॥ ७॥

—ऋग्वेद १.२४.१५

भावार्थ– हे सब बन्धनों को शिथिल करनेवाले प्रभु! हमारे जो उत्तम-मध्यम-अधम रूप आत्मिक-मानसिक-शारीरिक बन्धन हैं —इन तीनों प्रकार के बन्धनों को आप काट दीजिए। हे नित्य अविनाशी प्रभु! हम आपकी मर्यादाओं का पालन करते हुए मोक्ष के लिए समर्थ हो जाएँ —इसी भावना से यह आहुति आपको समर्पित करता हूँ। हे भव-बन्धन से छुड़ानेवाले, नित्य-एकरस, मोक्षदाता पिता! यह समस्त हव्य-द्रव्य आपका ही है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ ७॥

ओ३म्। भवतं नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञꣳ हिꣳसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा॥ इदं जातवेदोभ्याम् -इदन्न मम॥ ८॥

—यजुर्वेद ५.३

भावार्थ– हे परमेश्वर! हम दोनों पुरोहित और यजमान समान विचारवाले हों, हम दोनों का ज्ञान समान हो और हम दोनों के मन पापभाव से रहित हों। हे पिता! हमारे यज्ञ-अनुष्ठान में किसी प्रकार की कोई बाधा न हो और हम यजमान-पुरोहित की कोई हानि न हो। हे परम दयालु! आपकी कृपा से हम दोनों वेद-ज्ञान से सम्पन्न तथा कल्याण पथ के पथिक बन जाएँ। हे वेदज्ञान को उत्पन्न करनेवाले प्रभु! यह आहुति आपको सादर समर्पित करता हूँ —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥ ८॥

॥ इति पूर्णाहुति-प्रकरणम्॥

सूचना– *कुछ लोग बृहद् यज्ञ में पूर्णाहुति प्रकरण की आहुतियों के पश्चात्* ***'स्विष्टकृत्-आहुति'*** *तथा* ***'प्राजापत्य-आहुति'*** *पुनः देते हैं।* ***महर्षि दयानन्द के अनुसार पूर्णाहुति प्रकरण की आहुतियों के पश्चात् तीन पूर्णाहुति करके यज्ञ सम्पन्न कर देना चाहिए,*** *फिर भी यदि कोई देना चाहे तो पूर्णाहुति से पूर्व निर्दिष्ट विधि से दे। विधि इस प्रकार है :*

स्विष्टकृत् - आहुति (२२)

[भात, घृत अथवा मिष्टान्न की आहुति]

इसके पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर भात, घृत अथवा मिष्टान्न की आहुति दें :

ओ३म्। यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद् वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान् नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा ॥ इदमग्नये स्विष्टकृते - इदन्न मम ॥

–आश्वलायन–गृह्यसूत्र १.१०.२२

भावार्थ– हे समस्त दोषों का निवारण करनेवाले, सकल इष्ट कामनाओं को पूर्ण करनेवाले, प्रकाशस्वरूप प्रभु! मैंने अपनी अज्ञानतावश इस यज्ञकर्म में जो विधि से अधिक क्रिया कर दी हो अथवा इस यज्ञ-अनुष्ठान में कोई क्रिया विधि से कम कर दी हो, उस अधिकता या न्यूनता को आप भली प्रकार जानते हैं। हे प्रभु! आप मेरी अल्पज्ञता को ध्यान में रखते हुए इसे ही यथोचित रूप से किया हुआ स्वीकार करें अर्थात् उत्तम फलदायक बनाएँ। हे पूर्णकाम, यज्ञों को सफल करनेवाले, सब प्रायश्चित्त आहुतियों तथा समस्त कामनाओं को पूर्ण करनेवाले ज्ञानस्वरूप परमात्मा! आप हमारी यज्ञ-विषयक सम्पूर्ण कामनाओं को कृपा करके पूर्ण कीजिए। समस्त यज्ञों को सफलीभूत करनेवाले, प्रकाशस्वरूप प्रभु! यह आहुति लोक-कल्याण के लिए निःस्वार्थभाव से आपको सादर समर्पित है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥

प्राजापत्य-आहुति (१५)

इसके पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र का उच्चारण मन में करके **केवल घृत की आहुति** दें :

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा॥ इदं प्रजापतये - इदन्न मम॥ ३ ॥ -यजुर्वेद २२.३२

भावार्थ– हे प्रजापालक परमेश्वर! 'मैं भी आपके गुणानुरूप प्रजापति बन जाऊँ' —इस भावना से यह आहुति आपको समर्पित करता हूँ। हे प्रजापति! यह समस्त हव्य-द्रव्य आपका ही है —इसमें मेरा कुछ भी नहीं है॥

पूर्णाहुति (१६)

इसके पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र को एक बार पढ़कर एक आहुति दें । इस प्रक्रिया को तीन बार दोहराएँ अर्थात् तीन बार मन्त्र पढ़कर कुल तीन आहुतियाँ दें :

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा॥ (पहली पूर्णाहुति)

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा॥ (दूसरी पूर्णाहुति)

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा॥

(तीसरी और अन्तिम पूर्णाहुति)

भावार्थ– हे सर्वरक्षक, समस्त कामनाओं को पूर्ण करनेवाले आनन्दस्वरूप परमात्मा! आप स्वयं में सब प्रकार से पूर्ण हैं। आपकी कृपा से ही हमारे श्रेष्ठ-उपकारक कार्य सिद्ध होते हैं। हे पूर्णकाम! यह यज्ञ लोक-कल्याण के लिए निःस्वार्थभाव से आपको सादर समर्पित है। प्रभु! इसे सफल कीजिए और मेरी इस प्रार्थना को सत्य कीजिए॥

॥ इति बृहद्-अग्निहोत्र-विधिः॥

यज्ञ-प्रार्थना

यज्ञरूप प्रभो ! हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए ।
छोड़ देवें छल-कपट को मानसिक बल दीजिए ॥
वेद की बोलें ऋचाएँ , सत्य को धारण करें ।
हर्ष में हों मग्न सारे , शोक-सागर से तरें ॥
अश्वमेधादिक रचाएँ , यज्ञ पर-उपकार को ।
धर्म-मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को ॥
नित्य श्रद्धा-भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें ।
रोग-पीड़ित विश्व के संताप सब हरते रहें ॥
भावना मिट जाएँ मन से पाप अत्याचार की ।
कामनाएँ पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नार की ॥
लाभकारी हो हवन हर प्राणधारी के लिए ।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किए ॥
स्वार्थभाव मिटे हमारा प्रेम-पथ विस्तार हो ।
'इदन्न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो ॥
हाथ जोड़ झुकाय मस्तक वन्दना हम कर रहे ।
नाथ करुणारूप ! करुणा आपकी सब पर रहे ॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ॥

सबका भला करो भगवान् , सब पर दया करो भगवान् ।
सब पर कृपा करो भगवान्, सबका सब विधि हो कल्याण ॥

****

हे ईश सब सुखी हों , कोई न हो दुखारी ।
सब हों निरोग भगवन्, धन-धान्य के भण्डारी॥
सब भद्र भाव देखें , सन्मार्ग के पथिक हों ।
दुखिया न कोई होवे, सृष्टि में प्राणधारी ॥

****

सुखी बसे संसार सब

सुखी बसे संसार सब दुखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी भगवन् पूरी होय॥
विद्या-बुद्धि-तेज-बल, सबके भीतर होय।
दूध-पूत धन-धान्य से वञ्चित रहे न कोय॥
आपकी भक्ति-प्रेम से मन होवे भरपूर।
राग-द्वेष से चित्त मेरा कोसों भागे दूर॥
मिले भरोसा नाम का हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे धाम की बनी रहे मम ईश॥
पाप से हमें बचाइए करके दया दयाल।
अपना भक्त बनायके सबको करो निहाल॥
दिल में दया उदारता मन में प्रेम अपार।
हृदय में धैर्य-वीरता सबको दो करतार॥
हाथ जोड़ विनती करूँ सुनिए कृपानिधान।
साधु-संगत सुख दीजिए, दया-नम्रता दान॥

धन्यवाद गीत

आज मिल सब गीत गाओ, उस प्रभु के धन्यवाद।
जिसका यश नित गाते हैं, गन्धर्व मुनिजन धन्यवाद॥ १॥
मन्दिरों में कन्दरों में, पर्वतों के शिखर पर।
देते हैं लगातार सौ-सौ बार मुनिवर धन्यवाद॥ २॥
करते हैं जंगल में मंगल, पक्षिगण हर शाख पर।
पाते हैं आनन्द मिल, गाते हैं स्वर भर धन्यवाद॥ ३॥
कूप में तालाब में, सागर की गहरी धार में।
प्रेमरस में तृप्त हो, करते हैं जलचर धन्यवाद॥ ४॥
शादियों में कीर्तनों में, यज्ञ और उत्सव के आदि।
मीठे स्वर से चाहिए करें, नारी-नर सब धन्यवाद॥ ५॥
गान कर 'अमीचन्द' भजनानन्द ईश्वर की स्तुति।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता, कान धर-धर धन्यवाद॥ ६॥

तूने मुझे सब कुछ दिया

तूने मुझे सब कुछ दिया, मैंने धन्यवाद भी ना किया।
तेरी कृपा का पात्र बनने का सु-अवसर खो दिया॥

तूने बनाया सूर्य मेरे, पथ-प्रदर्शन के लिए।
अभिमान स्वारथ ने मेरे, नयनों को अन्धा कर दिया।
तूने मुझे सब कुछ दिया, मैंने धन्यवाद................ ॥ १ ॥

तूने बनाया वायु मेरे, प्राण-धारण के लिए।
मैंने राग-द्वेष के दीप से, उसको भी दूषित कर दिया।
तूने मुझे सब कुछ दिया, मैंने धन्यवाद............. ॥ २ ॥

तूने बनाकर देवता, हर अंग पर बिठला दिए।
कहना न तेरा मानकर, सर्वस्व अपना खो दिया।
तूने मुझे सब कुछ दिया, मैंने धन्यवाद........... ॥ ३ ॥

अब तो मेरी करनी पे करुणा, करदो ऐ जननी मेरी।
देवों के दुर्-उपयोग का, मैंने बहुत फल पा लिया।
तूने मुझे सब कुछ दिया, मैंने धन्यवाद.............. ॥ ४ ॥

यजमान परिवार को आशीर्वाद (पुष्पवर्षा)

ओं सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।
ओं सफलाः सन्तु यजमानस्य कामाः।
ओं पूर्णाः सन्तु यजमानस्य कामाः।
ओं सौभाग्यमस्तु, शुभं भवतु, कल्याणमस्तु।
ओं स्वस्ति, स्वस्ति, स्वस्ति॥

(यजमान की सभी शुभ कामनाएँ सत्य, सफल और पूर्ण हों। यजमान परिवार में सदा सौभाग्य, शुभ तथा कल्याण ही कल्याण बना रहे।)

शान्ति-पाठ

ओ३म्। द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर् विश्वे देवाः शान्तिर् ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥

॥ ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

बलिवैश्वदेव-यज्ञ की आहुतियाँ

चुल्हे की अग्नि में घी-शक्कर अथवा मीठे भात आदि शाकल्य की आहुतियाँ अधोलिखित मन्त्रों से दें :

ओ३म् अग्नये स्वाहा॥ १॥
ओं सोमाय स्वाहा॥ २॥
ओ३म् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा॥ ३॥
ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा॥ ४॥
ओं धन्वन्तरये स्वाहा॥ ५॥
ओं कुह्वै स्वाहा॥ ६॥
ओ३म् अनुमत्यै स्वाहा॥ ७॥
ओं प्रजापतये स्वाहा॥ ८॥
ओं द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा॥ ९॥
ओं स्विष्टकृते स्वाहा॥ १०॥

॥ इति बलिवैश्वदेव-यज्ञाहुतयः॥

पितृयज्ञ की विधि

दैनिक कर्मों में तीसरा यज्ञ है— पितृयज्ञ। पितृ शब्द का अर्थ है —रक्षा करनेवाला। इसीलिए पितृयज्ञ में जहाँ प्रपितामह (परदादा), प्रपितामही (परदादी), पितामह (दादा), पितामही (दादी), पिता, माता, बड़े भाई, भोजाई, अपनी कुल परम्परा में से आयु में बड़े दूसरे सम्बन्धियों के आदर-सत्कार, अन्न-पान, वस्त्र आदि द्वारा उनकी सेवा-शुश्रूषा का विधान है, वहीं उन विशिष्ट विद्वानों की सेवा-शुश्रूषा का भी विधान है, जिनसे गृहस्थों को धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की शिक्षा प्राप्त होती है। ये सभी पितर अर्थात् रक्षक हैं, अतः प्रत्येक गृहस्थ का यह नित्य कर्तव्य है कि इनके प्रति कृतज्ञभाव होकर इनका समुचित आदर करे और उनकी हितकारक आज्ञाओं का पालन करे—यही पितृयज्ञ है॥

अतिथियज्ञ की विधि

'अतिथि' उसे कहते हैं— जो विद्वान् उपदेशक मानव जाति की सेवा के उद्‌देश्य से भ्रमण करते हुए अचानक गृहस्थ के द्वार पर उपस्थित हो जाते हैं। ऐसे महापुरुषों का अन्न-पान आदि से आदर-सत्कार करना तथा उनकी सेवा-शुश्रूषा करना 'अतिथि-यज्ञ' कहलाता है। यह पाँचवाँ दैनिक कर्म है।

अतिथि-यज्ञ की महिमा अथर्ववेद के १५वें काण्ड के सूक्त १० से १४ में बड़े विस्तार से लिखी है। अतिथियों को आश्रय न देनेवाले गृहस्थी को महापातकी कहा गया है। रात्री के समय प्राप्त हुए अतिथि को विशेष रूप से आश्रय देने का विधान है। इसी परम्परा के कारण भारतीयों का आतिथ्य करना विश्व-प्रसिद्ध है॥

पौर्णमासी की विशेष आहुतियाँ

पूर्णिमा के दिन यज्ञ की अग्नि में खीर, हलवा आदि मिष्टपाक की निम्न तीन आहुतियाँ देवें:

ओ३म् अग्नये स्वाहा ॥ १ ॥

ओ३म् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा ॥ २ ॥

ओं विष्णवे स्वाहा ॥ ३ ॥

इसके पश्चात् निम्न मन्त्रों से घृत की चार **व्याहृति-आहुतियाँ** देवें:

ओं भूरग्नये स्वाहा॥ इदमग्नये -इदन्न मम ॥ १ ॥

ओं भुवर् वायवे स्वाहा॥ इदं वायवे-इदन्न मम॥ २ ॥

ओं स्वरादित्याय स्वाहा॥ इदमादित्याय-इदन्न मम॥ ३ ॥

ओं भूर् भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा ॥

इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः - इदन्न मम ॥ ४ ॥

॥ इति पौर्णमासेष्टि-यज्ञविधिः॥

अमावस्या की विशेष आहुतियाँ

अमावस्या के दिन यज्ञ की अग्नि में खीर, हलवा आदि मिष्टपाक की निम्न तीन आहुतियाँ देवें:

ओ३म् अग्नये स्वाहा ॥ १ ॥

ओ३म् इन्द्राग्नीभ्यां स्वाहा ॥ २ ॥

ओं विष्णवे स्वाहा ॥ ३ ॥

इसके पश्चात् निम्न मन्त्रों से घृत की चार **व्याहृति-आहुतियाँ** देवें:

ओं भूरग्नये स्वाहा॥ इदमग्नये -इदन्न मम ॥ १ ॥

ओं भुवर् वायवे स्वाहा॥ इदं वायवे-इदन्न मम॥ २ ॥

ओं स्वरादित्याय स्वाहा॥ इदमादित्याय-इदन्न मम॥ ३ ॥

ओं भूर् भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा ॥

इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः - इदन्न मम ॥ ४ ॥

॥ इति दर्शेष्टि-यज्ञविधिः॥

अधिक आहुतियों के लिए मन्त्र-संकलन

ओ३म्। भूर् भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा॥ १॥

—यजुर्वेद ३६.३

भावार्थ— हे सर्वरक्षक, प्राणाधार, दुःखविनाशक, सुखस्वरूप, सत्-चित्-आनन्दघन-परमात्मन्! आप सकल जड़-चेतन-जगत् के उत्पन्न करनेवाले, दिव्यगुणयुक्त, परम दयालु देव हैं। हम आपके वरण करने योग्य उस 'भर्ग' नामक तेज का ध्यान करते हैं; जो भर्ग-तेज हमारे सूक्ष्म, स्थूल और कारण शरीर में उत्पन्न होनेवाले समस्त पापों का भर्जन करनेवाला है—भून देनेवाला है, जो आत्मिक-मानसिक-शारीरिक सभी दोषों को जला देनेवाला है। वह धारण किया हुआ तेज हमारी बुद्धियों, कर्मों, प्राणशक्ति और वाणी को सदा सन्मार्ग पर प्रेरित करे॥

ओं स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकं स्वाहा॥ २॥

—अथर्ववेद १९.७१.१

भावार्थ— हे वेद ज्ञान के दाता परमेश्वर! हम भक्तजन इन्हीं वैदिक ऋचाओं से आपकी स्तुति करते हैं। हमारे द्वारा स्तुति की जाती हुई, माता के समान मार्गदर्शन करनेवाली तथा प्राणिमात्र को पवित्र करने वाली ये वैदिक ऋचाएँ हमें सन्मार्ग पर प्रेरित करें। हे मंगलमय प्रभु! आप हमें दीर्घायु, स्वस्थ प्राण, उत्तम सन्तान, पशुधन, कीर्ति, भोज्य द्रव्य तथा ब्रह्मवर्चस् तेज देकर अन्त में ब्रह्मलोक अर्थात् अपने मुक्तिधाम परमपद को प्राप्त कराइए॥

ओं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् स्वाहा॥ ३॥

—ऋग्वेद ७.५९.१२

भावार्थ— हे जगदम्बे! हम आपके 'ओ३म्' नाम से संकेतित

सृष्टि के निर्माण, पालन और संहार रूप आपकी त्रिविध शक्तियों का ध्यान करते हैं। हमारा जीवन पके हुए सुगन्धित और पुष्टिवर्धक खरबूजे के समान समाज में यशरूप सुगन्धि फैलानेवाला और समाज को पुष्ट करनेवाली स्वस्थ परम्पराओं को बढ़ानेवाला हो। हे देव! अन्त में हम पूर्णायु और पूर्ण भोग होकर इस शरीर रूपी बन्धन से सुगन्धित पुष्टिवर्धक पके हुए खरबूजे की ही भाँति बिना किसी कष्ट के छूटें अर्थात् हमें मृत्यु का कोई भय न हो। हे प्रभो! हम इस शरीर बन्धन रूप मृत्यु से ही छूटें, अर्थात् इस शरीर से छूटकर हमें आपके मोक्षसुख की प्राप्ति अवश्य हो॥

ओ३म्। आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्। आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्यो ऽतिव्याधी महारथो जायताम्। दोग्ध्री धेनुर् वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर् योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽ ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥ ४॥
–यजुर्वेद २२.२२

ब्रह्मन् स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्म तेजधारी।
क्षत्रिय महारथी हों, अरिदल-विनाशकारी॥
होवें दुधारु गौवें, वृष अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही॥
बलवान् सभ्य योद्धा, यजमान पुत्र होवें।
इच्छानुसार बरसें, पर्जन्य ताप धोवें॥
फल फूल से लदी हों, ओषध अमोघ सारी।
हों योग-क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी॥

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥ ५॥
—यजुर्वेद १६.४१

भावार्थ– हे शान्तस्वरूप परम कल्याणकारी तथा सुखस्वरूप प्रभु! आपको मेरा नमस्कार है। हे भक्तों का सर्वविध कल्याण करनेवाले

तथा उन्हें सदैव सुख देनेवाले प्रभु! आपको मेरा नमस्कार है। जो निरन्तर सकल जगत् का कल्याण और कल्याण ही किए जा रहा है — ऐसे परम कृपालु मङ्गलमय प्रभु! आपको कृतज्ञता-भाव से पूरित मेरा बार-बार नमस्कार है॥

ओं स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्या-चन्द्रमसाविव। पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि॥ ६॥ —ऋग्वेद ५.५१.१५

भावार्थ— हे परमात्मन्! हम सदैव सूर्य और चन्द्र के समान धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष के साधक कल्याणकारी मार्गों का ही अनुसरण करें। हे प्रभो! हम किसी को पीड़ा न देनेवाले, दानशील तथा ज्ञानीजनों की पुनः-पुनः अच्छी प्रकार संगति करें॥

ओ३म् । त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे॥ ७॥ —ऋग्वेद ८.९८.११

भावार्थ— हे सबको बसाने वाले, जगत् की रचना आदि सृष्टि के नानाविध कर्मों के कर्ता विश्वकर्मा प्रभो! तू ही हमारा पिता है और तू ही हमारी माता है। हे कृपासिन्धु, हम आपका शुभाशीष चाहते हैं॥

ओ३म् । इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अपघ्नन्तो अराव्णः॥ ८॥ —ऋग्वेद ९.६३.५

भावार्थ— हे परमात्मन्! हम अपने बल-ऐश्वर्य की वृद्धि करते हुए, अपनी कर्मठता तथा क्रियाशीलता को बढ़ाते हुए, हठी दुराग्रही असामाजिक तत्त्वों को सन्मार्ग पर लाते हुए सम्पूर्ण विश्व को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ सामाजिक मनुष्य बनाने का प्रयास करें, जिससे समस्त संसार में सुख शान्ति और भाईचारे का वातावरण बन सके॥

ओं तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि। बलमसि बलं मयि धेहि। ओजोऽस्योजो मयि धेहि। मन्युरसि मन्युं मयि धेहि। सहोऽसि सहो मयि धेहि स्वाहा॥ ९॥ —यजुर्वेद १९.९

भावार्थ– हे परम तेजस्वी प्रभु! आप मुझमें अपना तेज धारण कराइए। हे अनन्तवीर्य! आप मुझमें सर्वोत्कृष्ट वीर्यबल धारण कराइए। हे अनन्त बल के स्वामी! आप मुझे आत्मिक, शारीरिक तथा मानसिक बल से युक्त कीजिए। हे पराक्रमस्वरूप प्रभु! मुझे पराक्रमशाली बनाइए। दुष्टों पर क्रोध करनेवाले प्रभु! मुझे दुष्टों पर क्रोध करनेवाला बनाइए। सहनस्वरूप प्रभु! मुझमें सहनशीलता धारण कराइए॥

ओं तनूपा ऽ अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि। आयुर्दा ऽ अग्नेऽस्यायुर् मे देहि। वर्चोदाऽ अग्नेऽसि वर्चो मे देहि। अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्मऽआपृण स्वाहा॥ १०॥

—यजुर्वेद ३.१७

भावार्थ– हे प्रकाशस्वरूप प्रभु! आप प्राणीमात्र के शरीरों के रक्षक हैं, मेरे शरीर की रोगादि से रक्षा कीजिए। हे हमारी उन्नति के साधक प्रभु! आप दीर्घजीवन देनेवाले हैं, मुझे भी स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन प्रदान कीजिए। हे अग्रनायक पिता! आप ब्रह्मवर्चस् के देनेवाले हैं, मुझे भी ब्रह्मवर्चस् प्रदान कीजिए। हे ज्ञानस्वरूप प्रभु! हमारे शरीर में जो भी न्यूनता हो उसे आप पूर्णतया दूर कर दीजिए॥

ओं पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते स्वाहा॥ ११॥ —ब्राह्मण ग्रन्थ

तुम हो पूर्ण स्वयं परमेश्वर! पूर्ण सृष्टि यह मानव देह।
होती पूर्ण पूर्ण की रचना, पूर्ण आपका सबसे नेह।
भरते पूर्ण भक्त की झोली, पूर्ण शेष तेरे भण्डार।
सब विधि पूर्ण यज्ञ यह कीजै, पूर्ण कामना करुणागार॥

॥ इति मन्त्र-संकलनम्॥

जन्म-दिवस (वर्षगाँठ) पर विशेष आहुतियाँ

ओ३म्। उप प्रियं पनिप्नतं युवानमाहुतीवृधम्। अगन्म बिभ्रतो नमो दीर्घमायुः कृणोतु मे स्वाहा॥ —अथर्व० ७.३२.१

भावार्थ– हे स्तुति-योग्य प्रिय परमेश्वर! मुझे स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन देकर आयुष्मान् करें। जिस प्रकार आहुतियों के द्वारा यह यज्ञ-अग्नि बढ़ रही है, वैसे ही मैं भी सात्त्विक-पौष्टिक भोजन करते हुए यौवन को प्राप्त करूँ और प्रतिवर्ष इसी प्रकार अपना जन्म-दिवस मनाता रहूँ॥

ओ३म्। इन्द्र जीव सूर्य जीव देवा जीवा जीव्यासमहम्। सर्वमायुर् जीव्यासं स्वाहा॥

—अथर्ववेद १९.७०.१

भावार्थ– हे परम ऐश्वर्य के स्वामी, सर्वप्रकाशक, देवाधिदेव प्रभु! हमें जीवन धारण कराइए, आयुष्मान् कीजिए, स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन दीजिए। हे परम पिता! आपकी कृपा से मैं अपनी पूर्ण आयु जीवन धारण करूँ, मुझे कभी भी अकालमृत्यु का ग्रास न बनना पड़े॥

ओ३म्।तच्चक्षुर् देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥ ४॥ –यजुर्वेद ३६.२४

भावार्थ– हे करुणासागर प्रभु! आप सब लोक-लोकान्तरों के प्रकाशक चक्षु, देव-बुद्धिवाले मनुष्यों के परम हितकारी, सृष्टि-उत्पत्ति से पूर्व तथा सृष्टि-प्रलय के पश्चात् भी वर्तमान, सृष्टि के कारणभूत, शुद्ध एवं पवित्र हैं। हे परम पिता! आपकी कृपा से हम तुझ परम ब्रह्म तथा आपकी अद्भुत सृष्टि को अपनी आन्तर एवं बाह्य आँखों से सौ वर्षों तक अर्थात् पूर्ण आयु तक देखें। हम सौ वर्षों तक प्राण धारण करें। हम

अपने कानों से सौ वर्षों तक आपका ही गुण-कीर्तन सुनें और अपनी वाणी से दूसरों को भी आपके ही स्वरूप का उपदेश सौ वर्षों तक करें। सौ वर्षों तक हम किसी के सामने दीन-हीन न बनें। हे दयालु देव! आपकी आज्ञा-पालन में विचरण करते हुए ही आपकी कृपा से हम सौ वर्षों के बाद भी देखें, जीएँ, सुनें, सुनाएँ और स्वतन्त्र रहें। हम किसी के अधीन न रहें, सदैव स्वाभिमानी होकर ही अपना जीवन व्यतीत करें। हम पूर्ण आयु आपकी कृपा से स्वस्थ शरीर, दृढ़ इन्द्रिय तथा शुद्ध मनवाले होकर अपने आत्मा में सदा आनन्दित रहें॥ ४॥

भोजन के समय की प्रार्थना

ओ३म्। अन्न॑पते॒ऽन्न॑स्य नो देह्यनमी॒वस्य॑ शु॒ष्मिण॑ः।
प्रप्र॑ दा॒तारं॑ तारिष॒ ऽ ऊर्जं॑ नो धेहि द्वि॒पदे॒ चतु॑ष्पदे॥

—यजुर्वेद ११.८३

भावार्थ— हे अन्नपति परमेश्वर! आपकी कृपा से प्राप्त यह अन्न हमें रोगरहित करनेवाला तथा बल प्रदान करनेवाला हो। प्रभुवर! अन्नदान करनेवाले मनुष्यों को आप ही परम सन्तोष से संतृप्त करते हैं। प्रभु! जिस अन्न से मैंने बलिवैश्वदेव आदि यज्ञ सम्पन्न किए हैं, ऐसा यह अन्न हमारे दो पैरवाले सेवक आदि के लिए तथा चार पैरवाले गाय-कुत्ते आदि के लिए ऊर्जा प्रदान करनेवाला हो॥

यज्ञोपवीत-धारण-मन्त्र

ओ३म्। यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर् यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि॥

—पारस्कर गृह्यसूत्र २.२.११

भावार्थ— हे प्रजापति प्रभु! गर्भ में जरायु के रूप में आप द्वारा धारण कराए गए स्वाभाविक परम पवित्र यज्ञोपवीत के प्रतीकरूप में धारण किया हुआ यह श्वेत-शुद्ध यज्ञोपवीत मेरे लिए बल और तेज देनेवाला हो। आपकी कृपा से यह यज्ञोपवीत मुझे यज्ञ-बुद्धि से कार्य करने का बोध कराता रहे और इसे धारण कर मैं सदैव यज्ञ-भावना से आबद्ध रहूँ॥

गीत-भजन-संग्रह

(१) ओम् है जीवन हमारा

ओम् है जीवन हमारा, ओम् प्राणाधार है।
ओम् है कर्ता-विधाता, ओम् पालनहार है॥ १॥
ओम् है दु:ख का विनाशक, ओम् सर्वानन्द है।
ओम् है बल-तेजधारी, ओम् करुणाकन्द है॥ २॥
ओम् सबका पूज्य है हम, ओम् का पूजन करें।
ओम् ही के जाप से हम, शुद्ध अपना मन करें॥ ३॥
ओम् का गुरु-मन्त्र जपने - से रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि दिन-प्रतिदिन बढ़ेगी, धर्म में होगी लगन॥ ४॥
ओम् के जप से हमारा, ज्ञान बढ़ता जाएगा।
अन्त में यह ओम् हमको, मोक्ष तक पहुँचाएगा॥ ५॥

(२) जीवन की घड़ियाँ विरथा न खो

जीवन की घड़ियाँ विरथा न खो, ओम् जपो ओम् जपो।
चादर न लम्बी तान के सो, ओम् जपो ओम् जपो॥

ओम् ही सुख का सार है, ओम् ही जीवन-आधार है।
प्रीति न इसकी मन से तजो, ओम् जपो ओम् जपो॥ चादर...

मन की गति सम्भालिए, ईश्वर की ओर डालिए।
धोना जो चाहो जीवन को, ओम् जपो ओम् जपो॥ चादर...

चोला मिला है कर्म का, करने को सौदा धर्म का।
इसके सिवाय मार्ग न कोय, ओम् जपो ओम् जपो॥ चादर...

दुनिया में आके क्या किया, कभी न प्रभु का नाम लिया।
अज्ञान की निद्रा बन्दे न सो, ओम् जपो ओम् जपो॥ चादर...

साथी बना ले ओम् को, मन में बिठा ले ओम् को।
अन्त में क्यों भाग्य को रोय, ओम् जपो ओम् जपो॥ चादर...

(३) यज्ञ बिन जीवन कोई जीवन नहीं है

यज्ञ बिन जीवन कोई जीवन नहीं है।
यज्ञ मन बहलाव का साधन नहीं है॥ १॥

गन्ध में इसकी न रहती वासनाएँ, भस्म हो जाती सकल दुर्भावनाएँ।
धूम बनकर नील नभ में हैं उमड़ती, विश्व के कल्याण की शुभ कामनाएँ।
पन्थ की इसमें कोई उलझन नहीं है, यज्ञ बिन जीवन कोई.......... ॥ २॥

वेदमन्त्रों के भरे गुणगान इसमें, आर्य संस्कृति के भरे अरमान इसमें।
अमिट रोगों के मिलें अवसान इसमें,विकल प्राणी के दुखों का त्राण इसमें।
मोक्ष का है द्वार यह बन्धन नहीं है, यज्ञ बिन जीवन कोई.......... ॥ ३॥

यज्ञ वह है जो हमें भू से उठाता, यज्ञ वह है जो हमें प्रभु से मिलाता।
यज्ञ वह है जो सरल जीवन बनाता, यज्ञमय ही हैं प्रभु आनन्द-दाता।
यज्ञ बिन मानव कभी पूरण नहीं है, यज्ञ बिन जीवन कोई.......... ॥ ४॥

(४) विश्वपति जगदीश तुम

विश्वपति जगदीश तुम, तेरा ही ओम् नाम है।
मस्तक झुका के प्रेम से, ईश्वर तुझे प्रणाम है॥

सृष्टि बनाके पालना, दाता तेरे ही हाथ में।
करना प्रलय भी अन्त में, तेरा ही नाथ काम है॥ विश्वपति० ॥ १॥

आता नज़र नहीं मगर, कण-कण में तू समा रहा।
जग में जहाँ पे तू न हो, ऐसा न कोई धाम है॥ विश्वपति० ॥ २॥

ऋतुएँ बदल के आ रही, नदियाँ ये सिन्धु में जा रही।
शाम के बाद है सुबह, सुबह के बाद शाम है॥ विश्वपति० ॥ ३॥

सूरज समय पे ढल रहा, वायु नियम से चल रहा।
झुकता है सर यह देखकर, तेरा जो इंतजाम है॥ विश्वपति० ॥ ४॥

होता है न्याय ही सदा, ईश्वर तेरे दरबार में।
चलती नहीं सिफारिशें, चढ़ता न कोई दाम है॥ विश्वपति० ॥ ५॥

तेरे पदार्थ हैं प्रभु, 'पथिक' सभी के वास्ते।
सबके लिए हैं वेद भी, जिसमें तेरा ही भान है॥ विश्वपति० ॥ ६॥

(५) हम सब मिलके दाता आए तेरे दरबार

हम सब मिलके दाता आए तेरे दरबार।
भर दे झोली प्रभु जी, तेरे पूरण भण्डार॥ १ ॥
होवे जब प्रातः काल, निर्मल होके तत्काल।
अपना मस्तक झुका के, करके तेरा खयाल।
तेरे दर पे, आके बैठा पूरा परिवार॥ हम सब मिलके........ ॥ २ ॥
लेके दिल में फरियाद, करते हम तुमको याद।
जब हों मुश्किल की घड़ियाँ, तुमसे माँगे इमदाद।
सबसे बढ़के, ऊँचा जग में तेरा दरबार॥ हम सब मिलके....... ॥ ३ ॥
चाहे दिन हों विपरीत, होवे तुझसे ही प्रीत।
सच्ची श्रद्धा से गावें, तेरी भक्ति के गीत।
होवे सबका, प्रभु जी तेरे चरणों में प्यार॥ हम सब मिलके...... ॥ ४ ॥
तू है सब जग का वाली, करता सबकी रखवाली।
हम हैं रंग-रंग के पौधे, तुम हो हम सबके माली।
'पथिक' बगीचा, है यह तेरा सुन्दर संसार॥ हम सब मिलके... ॥ ५ ॥

(६) आनन्द स्रोत बह रहा पर तू उदास है

आनन्द स्रोत बह रहा पर तू उदास है।
अचरज है जल में रह के भी मछली को प्यास है ॥ १ ॥
फूलों में जो सुवास, ईख में मिठास है।
भगवान् का तो विश्व के कण-कण में वास है।
आनन्द स्रोत बह रहा पर तू उदास है, अचरज है जल .... ॥ ४ ॥
टुक ज्ञान चक्षु खोल, जरा देख तो सही।
जिसको तू ढूँढता वो सदा तेरे पास है।
आनन्द स्रोत बह रहा पर तू उदास है, अचरज है जल .... ॥ ४ ॥
कुछ तो समय निकाल आत्म-शुद्धि के लिए।
नर जन्म का उद्देश्य न केवल विलास है।
आनन्द स्रोत बह रहा पर तू उदास है, अचरज है जल .... ॥ ४ ॥
आनन्द मोक्ष का न पा सकेगा तब तलक।
तू जब तलक 'प्रकाश' इन्द्रियों का दास है।
आनन्द स्रोत बह रहा पर तू उदास है, अचरज है जल .... ॥ ४ ॥

(७) पितु-मातु सहायक स्वामी सखा

पितु-मातु सहायक स्वामी सखा।
तुम ही इक नाथ हमारे हो॥
जिनके कछु और अधार नहीं, तिन के तुम ही रखवारे हो।
प्रतिपाल करो सगरे जग को, अतिशय करुणा उर धारे हो॥
भूले हैं हम ही तुम को, तुम तो, हमरी सुधि नाहिं बिसारे हो।
उपकारन को कछु अन्त नहीं, छिन ही छिन जो बिस्तारे हो॥
महाराज महा महिमा तुम्हरी, समझे विरले बुधिवारे हो।
शुभ शान्ति-निकेतन प्रेमनिधे! मन-मन्दिर के उजियारे हो॥
इस जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
तुम सो प्रभु पाय 'प्रताप' हरे, केहि के अब और सहारे हो॥

(८) लाल रतन देना

लाल रतन देना, ओ दाता लाल रतन देना।
जिस सिमरन परमानंद पावें, सो सिमरन देना।
ओ दाता! लाल रतन देना॥ १॥

कण-कण में है तेरा बसेरा, अटल मेरा विश्वास है।
ऐसा लगता है क्यों मुझको, दूर नहीं तू पास है।
जिससे तेरा दिव्य दर्श हो, भाग्य नयन देना।
ओ दाता लाल रतन देना॥ २॥

मन मन्दिर में तेरी ज्योति, हृदय-हृदय में वास है।
पत्ते-पत्ते, फल-फूलों में, तू ही रंग-सुवास है।
भक्ति भजन मनन हो तेरा, ऐसा वर देना।
ओ दाता लाल रतन देना॥ ३॥

मात-पिता की सेवा कर हम, निज कर्तव्य निभावें।
उनकी आज्ञा पालन करके, जीवन सफल बनावें।
बनी रहे उनकी छाया नित, ऐसा वर देना।
ओ दाता लाल रतन देना॥ ४॥

कृपा नाथ से तेरी होवें, शिव संकल्प हमारे।
नहीं है कोई चिन्ता हमको, जब तुम साथ हमारे।
गाते रहें तुम्हारा ही 'यश', ऐसा वर देना ।
ओ दाता लाल रतन देना॥ ५॥

(९) मिलता है सच्चा सुख केवल

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान् तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है पल-पल छिन-छिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥ १ ॥
चाहे वैरी कुल संसार बने, चाहे जीवन मुझपर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥ २ ॥
चाहे कष्टों ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अंधेरा हो।
पर चित्त न डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥ ३ ॥
मेरी जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे।
बस काम यह आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥ ४ ॥
चाहे काँटो पे मुझे चलना हो, चाहे अग्नि में मुझे जलना हो।
चाहे छोड़ के 'देश' निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥ ५ ॥

(१०) तू है सच्चा पिता

तू है सच्चा पिता, सारे संसार का ओ३म् प्यारा।
तू ही तू ही है रक्षक हमारा॥ १ ॥
चाँद-सूरज-सितारे बनाए, पृथिवी-आकाश-पर्वत सजाए।
अन्त आया नहीं, भेद पाया नहीं पारवारा॥ तू ही ०॥ २ ॥
पक्षीगण राग सुन्दर हैं गाते, जीव-जन्तु सभी सिर झुकाते।
उसको ही सुख मिला, तेरी राह पर चला, जो भी प्यारा॥ तू ही ०॥ ३ ॥
पाप-पाखण्ड हमसे छुड़ाओ, वेद-मार्ग पर हमको चलाओ।
लगे भक्ति में मन, करे सन्ध्या-हवन जग यह सारा॥ तू ही ०॥ ४ ॥
अपनी भक्ति में मन को लगाना, कष्ट 'नन्दलाल' सबके मिटाना।
दुखियों कंगालों का, और धनवालों का, तू सहारा॥ तू ही ०॥ ५ ॥

(११) जब नाथ का नाम दयानिधि है

जब नाथ का नाम दयानिधि है, तो दया भी करेंगे कभी न कभी।
जब तारणहार कहावत है, भव पार करेंगे कभी न कभी॥ १ ॥
हम पापों के करने वाले हैं, प्रभु पापों के हरने वाले हैं।
जब पाप अधिक बढ़ जाएँगे, प्रभु नाश करेंगे कभी न कभी॥ २ ॥
प्रभु दुःख-विनाशक सुखदाता, सब संकट हरने वाले हैं।
जब देव दयालु कृपानिधि हैं, तो कृपा भी करेंगे कभी न कभी॥ ३ ॥

(१२) कितनी सुन्दर तेरी रचना

कितनी सुन्दर तेरी रचना, तू कितना सुन्दर होगा।
प्यासी अँखिया मेरी भगवन्, कब तेरा दर्शन होगा॥
नदियाँ नाले पर्वत सारे, करते तेरी ओर इशारे।
वन उपवन के सिरजनहारे, तू कितना सुन्दर होगा॥
भाँति-भाँति के वृक्ष उगाए, रंग-बिरंगे फूल सजाए।
सुन्दर स्वाद भरे फलवाले, तू कितना सुन्दर होगा॥
ऋषि मुनि तेरा ही यश गाते, तेरे ही उपदेश सुनाते।
सुन्दर ज्ञान के देने वाले, तू कितना सुन्दर होगा॥
नभ में सूरज को चमकाया, विमल चंद्र की शीतल छाया।
तारों को चमकाने वाले, तू कितना सुन्दर होगा॥
इतना बड़ा जहान बनाया, सुन्दरता से इसे चलाया।
समझ न आई तेरी माया, तू कितना सुन्दर होगा॥
जल के ऊपर थल है बनाया, थल ऊपर आकाश सजाया।
रोम रोम तेरा 'यश' गाया, तू कितना सुन्दर होगा॥

(१३) हुआ ध्यान में ईश्वर के जो मगन

हुआ ध्यान में ईश्वर के जो मगन, उसे कोई क्लेश लगा न रहा।
जब ज्ञान की गंगा में नहाया, तो मन में मैल जरा न रहा॥

परमात्मा को जब आत्मा में, लिया देख ज्ञान की आँखों से।
प्रकाश हुआ मन में उसके, कोई उससे भेद छिपा न रहा॥

पुरुषारथ ही इस दुनिया में, सब कामना पूरी करता है।
मन चाहा फल उसने पाया, जो आलसी बन के पड़ा न रहा॥

दुःखदायी हैं, सब शत्रु हैं, ये विषय हैं, जितने दुनिया के।
वही पार हुआ भवसागर से, जो जाल में इनके फँसा न रहा॥

यहाँ वेद-विरुद्ध जब मत फैले, पत्थर की पूजा जारी हुई।
जब वेद की विद्या लुप्त हुई, फिर ज्ञान का पाँव जमा न रहा॥

यहाँ बड़े-बड़े महाराज हुए, बलवान् हुए विद्वान् हुए।
पर मौत के पंजे से 'केवल', कोई दुनिया में आके बचा न रहा॥

(१४) जय जय पिता परम आनन्ददाता

जय जय पिता परम आनन्ददाता, जगदादि कारण मुक्ति-प्रदाता।
अनन्त और अनादि विशेषण हैं तेरे, सृष्टि का स्रष्टा तू धर्ता संहर्ता॥

सूक्ष्म से सूक्ष्म तू है स्थूल इतना,कि जिसमें यह ब्रह्माण्ड सारा समाता।
मैं लालित व पालित हूँ पितृ स्नेह का,यह प्राकृत सम्बन्ध है तुझसे ताता॥

करो शुद्ध निर्मल मेरे आत्मा को, करूँ मैं विनय नित्य सायं व प्रातः।
मिटाओ मेरे भय सब आवागमन के, फिरूँ जन्म पाता और बिलबिलाता॥

बिना तेरे है कौन दीनन का बन्धु, कि जिसको मैं अपनी अवस्था सुनाता।
'अमी' रस पिलाओ कृपा करके मुझको, रहूँ सर्वदा तेरी कीर्ति को गाता॥

(१५) विश्वकर्मा पिता तू ही माता

देव सविता सखा, सृष्टि के रचयिता, सुखप्रदाता।
विश्वकर्मा पिता तू ही माता॥

नाथ कण कण में तुम बस रहे हो, शिल्प संसार का रच रहे हो।
वेद के ज्ञान का, सृष्टि-विज्ञान का, तू ही दाता॥
विश्वकर्मा पिता तू ही माता॥ १ ॥

ज्ञान-बल-बुद्धि-वैभव-प्रदाता, दीन-वत्सल दयासिन्धु धाता।
पुष्प की गन्ध में, रूप में रंग में, तू समाता॥
विश्वकर्मा पिता तू ही माता॥ २ ॥

तूने इतना दिया क्या बताऊँ, गीत श्रद्धा से तेरे ही गाऊँ।
भक्ति में हो मगन, आया तेरी शरण, प्राणदाता॥
विश्वकर्मा पिता तू ही माता॥ ३ ॥

पाप संताप मन से मिटाओ, स्वार्थ की भावना को भगाओ।
कष्ट तन के कटें, द्वेष मन से हटें, दुःखत्राता॥
विश्वकर्मा पिता तू ही माता॥ ४ ॥

कर्म अच्छे ही जग में करूँ मैं, यश का भागी ही जग में बनूँ मैं।
शुद्ध हो भावना, पूर्ण हो कामना, जगविधाता॥
विश्वकर्मा पिता तू ही माता॥ ५ ॥

देख संकट न पग डगमगाएँ, ऐसी शक्ति प्रभु तुझ से पाएँ।
करुणासागर पिता, कर दो हम पर कृपा, शक्तिदाता॥
विश्वकर्मा पिता तू ही माता॥ ६ ॥

(१६) मेरे मालिक के दरबार में

मेरे मालिक के दरबार में, सब जीवों का खाता।
जिसने जैसा कर्म किया है, वैसा ही फल पाता॥

सख्त नियम हैं मेरे प्रभु के, बडी कठिन मर्यादा।
पैसा किसी को कम नहि देता, मिले न पाई ज्यादा।
अन्तर्यामी अन्दर बैठा, सही हिसाब लगाता॥ मेरे मालिक के ....

साधु हो या सन्त गृहस्थी, राजा हो या रानी।
प्रभु की पुस्तक में लिखी है, सब की कर्म कहानी।
पाप पुण्य की गठरी उनके, हाथों से खुलवाता॥ मेरे मालिक के ....

नेक कमाई कर ले बन्दे, कर्म न करियो काला।
लाख आँख से देख रहा है, तुझे देखनेवाला।
उसकी तेज नज़र से बन्दे, कोई नहीं बच पाता॥ मेरे मालिक के ....

चले न उसके आगे रिश्वत, चले नहीं चालाकी।
उसकी लेन-देन की बन्दे, रीति बड़ी है बाँकी।
समझदार तो चुप रहता है, मूरख शोर मचाता॥ मेरे मालिक के ....

(१७) धन्य है तुझको ऐ ऋषि

धन्य है तुझको ऐ ऋषि, तूने हमें जगा दिया।
सो-सो के लुट रहे थे हम, तूने हमें बचा लिया॥

अन्धों को आँखे मिल गई, मुर्दों में जान आ गई।
जादू सा क्या चला दिया, अमृत सा क्या पिला दिया॥ धन्य है....

तुझमें कुछ ऐसी बात थी, स्वामी कि तेरी बात पर।
कितने शहीद हो गए, कितनों ने सर कटा दिया॥ धन्य है....

श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने, सीने पे खाई गोलियाँ।
हँस-हँस के हंसराज ने, तन-मन व धन लुटा दिया॥ धन्य है....

अपने लहू से लेखराम, तेरी कहानी लिख गए।
तूने ही लाला लाजपत, शेरे बबर बना दिया॥ धन्य है....

तेरे दीवाने जिस घड़ी, दक्षिण दिशा को चल दिए।
वैदिक धर्म पे हो फिदा, दुनिया का दिल हिला दिया॥ धन्य है....

(१८) चमकेंगे जब तलक

चमकेंगे जब तलक ये, सूरज व चाँद तारे।
हम हैं ऋषि दयानन्द, तब तक ऋणी तुम्हारे॥
भारत की जब ये नैया, मझधार में पड़ी थी।
तूने ही बनके खेवट, पहुँचा दिया किनारे॥ १ ॥
हमको पिलाया अमृत, खुद ज़हर पी गया तू।
तूने हमारी खातिर, सब कष्ट थे सहारे॥ २ ॥
कातिल को अपने स्वामी, जीवन का दान दे तू।
तेरी जान के भी दुश्मन, तुझे जान से थे प्यारे॥ ३ ॥
तू वो दिया था जिसने, लाखों दिये सँवारे।
दी रोशनी 'पथिक' वो, घर जगमगाए सारे॥ ४ ॥

(१९) हम कभी माता पिता का ऋण चुका सकते नहीं

हम कभी माता पिता का ऋण चुका सकते नहीं ।
इनके तो अहसान इतने हैं गिना सकते नहीं॥

वो कहाँ पूजा में शक्ति, वो कहाँ फल जाप का।
हो तो हो इनकी कृपा से, खातमा संताप का।
इनकी सेवा से मिले धन, ज्ञान बल लम्बी उमर।
स्वर्ग से बढ़कर है जग में, आसरा माँ बाप का।
इनकी तुलना में कोई, वस्तु भी ला सकते नहीं॥
हम कभी माता पिता का ऋण .... ॥ १ ॥
देख लें हम को दुखी तो, भर लें अपने नैन ये।
इक हमारे सुख की खातिर, तड़फते दिन रैन ये।
भूख लगती प्यास ना और, नींद भी आती नहीं।
कष्ट हो तन पर हमारे, हों उठे बेचैन ये।
इनसे बढ़कर देवता भी, सुख दिला सकते नहीं॥
हम कभी माता पिता का ऋण .... ॥ २ ॥
पढ़ लो वेद और शास्त्र का भी, एक यह ही मर्म है।
योग्यतम सन्तान का यह, सबसे उत्तम कर्म है।
इनके चरणों में ये तन मन, धन लुटान धर्म है।
जगत में जब तक रहें, सेवा करें माँ बाप की।
यह 'पथिक' वह सत्य है, जिसको मिटा सकते नहीं।
हम कभी माता पिता का ऋण .... ॥ ३ ॥

(२०) बालक के जन्म-दिवस पर

इस कुल का यह दीपक प्यारा, बालक आयुष्मान् हो।
तेजस्वी-वर्चस्वी-निर्भय, सर्वोत्तम विद्वान् हो॥

बने सुमन-सा कोमल सुन्दर, दानी बनकर दान करे।
दुष्टों से न डरे कभी यह, श्रेष्ठों का सम्मान करे।
मानव-धर्म समझकर चलने - वाला चतुर सुजान बने।
इस कुल का यह दीपक प्यारा, बालक.......... ॥ १ ॥

चारों ओर विजय हो इसकी, पाए सुख-सम्मान भी।
सौ वर्षों से अधिक आयु हो, करे धर्महित दान भी।
नेता बने देश का अपने, जगभर में सम्मान हो।
इस कुल का यह दीपक प्यारा, बालक........... ॥ २ ॥

बनकर परम भक्त ईश्वर का, अपना यश फैलाए यह।
मात-पिता की सेवा करके, पितृ-भक्त कहलाए यह।
अपना नाम अमर कर जग में, सर्वगुणों की खान हो।
इस कुल का यह दीपक प्यारा, बालक......... ॥ ३ ॥

जन्म-दिवस पर बालक/ बालिका को आशीर्वाद

हे (बालक.........!) त्वम् जीव शरदः शतं वर्धमानः।
त्वम् आयुष्मान्, वर्चस्वी, तेजस्वी, श्रीमान्, धीमान्, विद्वान् च भूयाः॥

(हे बालक ! तुम सौ वर्षों तक जीवो,बढ़ो, फलो-फूलो। तुम आयुष्मान्, वर्चस्वी, तेजस्वी, श्रीमान्, बुद्धिमान् और विद्वान् बनो।)

हे (बालिके.........!) त्वम् जीव शरदः शतं वर्धमाना।
त्वम् आयुष्मती, वर्चस्विनी, तेजस्विनी, श्रीमती, धीमती, विदुषी च भूयाः॥

(हे बालिका ! तुम सौ वर्षों तक जीवो, बढ़ो, फलो-फूलो। तुम आयुष्मती, वर्चस्विनी, तेजस्विनी, श्रीमती, बुद्धिमती और विदुषी बनो।)

(२१) संगठन-सूक्त

ओ३म् सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर॥ १॥

हे प्रभो तुम शक्तिशाली, हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं, कीजिए धन वृष्टि को॥

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥ २॥

प्रेम से मिलकर चलो, बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भाँति तुम, कर्तव्य के मानी बनो॥

समानो मन्त्रः समितिः समानी
समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः
समानेन वो हविषा जुहोमि॥ ३॥

हों विचार समान सबके, चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूँ बराबर, भोग्य पा सब नेक हों॥

समानी व आकूतीः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वःसुसहासति॥ ४॥

हों सभी के दिल तथा, संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरें हों प्रेम से, जिससे बढ़ें सुख सम्पदा॥

—ऋग्वेद १०.१९०.१-४

(२२) शान्ति-गीत

शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में। शान्ति कीजिए ....
जल में थल में और गगन में, अन्तरिक्ष में अग्नि पवन में।
औषधि वनस्पति वन उपवन में,सकल विश्व में जड़-चेतन में॥
ब्राह्मण के उपदेश वचन में, क्षत्रिय के द्वारा हो रण में।
वैश्य-जनों के होवे धन में, और शूद्र के हो चरणन में॥
शान्ति राष्ट्र-निर्माण सृजन में, नगर ग्राम में और भवन में।
जीवमात्र के तन में मन में, और जगति के हो कण-कण में॥

(२३) हे जग-त्राता, विश्व-विधाता

हे जग-त्राता, विश्व-विधाता, हे सुख-शान्ति-निकेतन हे !
प्रेम के सिन्धु, दीन के बन्धु, दुःख-दारिद्र्य-विनाशन हे !
नित्य अखण्ड अनन्त अनादि, पूरण ब्रह्म सनातन हे !
जग-आश्रय जगपति जगवन्दन, अनुपम अलख निरंजन हे !
प्राण-सखा त्रिभुवन-प्रतिपालक, जीवन के अवलम्बन हे !!

(२४) ध्वज-गीत

जयति ओ३म् ध्वज व्योम विहारी।
विश्व-प्रेम प्रतिमा अति प्यारी॥
सत्य-सुधा बरसानेवाला, स्नेह-लता सरसानेवाला।
सौम्य-सुमन विकसानेवाला।
विश्व-विमोहक भव-भयहारी॥ जयति .... ॥ १ ॥
इसके नीचे बढ़ें अभय मन, सत्-पथ पर सब धर्मधुरी जन।
वैदिक-रवि का हो शुभ उदयन।
आलोकित होंवें दिशि सारी॥ जयति .... ॥ २ ॥
इससे सारे क्लेश शमन हों, दुर्मति-दानव-द्वेष दमन हों।
अति उज्ज्वल अति पावन मन हो।
प्रेम-तरंग बहे सुखकारी॥ जयति .... ॥ ३ ॥
इसी ध्वजा के नीचे आकर, ऊँच-नीच का भेद भुलाकर।
मिले विश्व मुद मंगल गाकर।
पन्थाई पाखण्ड विसारी॥ जयति .... ॥ ४ ॥
इसी ध्वजा को लेकर कर में, भर दें वेद-ज्ञान घर-घर में।
सुभग शान्ति फैले जगभर में।
मिटे अविद्या की अँधियारी॥ जयति .... ॥ ५ ॥
विश्व-प्रेम का पाठ पढ़ावें, सत्य अहिंसा को अपनावें।
जग में जीवन ज्योति जगाएँ।
त्यागपूर्ण हो वृत्ति हमारी॥ जयति .... ॥ ६ ॥
आर्य-जाति का सुयश अक्षय हो, आर्य-ध्वजा की अविचल जय हो।
आर्य जनों का ध्रुव निश्चय हो।
आर्य बनावें वसुधा सारी॥ जयति .... ॥ ७ ॥

आर्य समाज के नियम

१. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।
२. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।
३. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।
४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए।
६. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
७. सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।
८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए। किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

जयघोष

जो बोले सो अभय	वैदिक धर्म की जय
मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम चन्द्र की	जय
योगीराज श्री कृष्ण चन्द्र की	जय
गुरुवर विरजानन्द की	जय
महर्षि दयानन्द की	जय
आर्य समाज	अमर रहे
वेद की ज्योति	जलती रहे
ओ३म् का झंडा	ऊँचा रहे
वैदिक ध्वनि	ओ३म्

सब वेद पढ़े

सब वेद पढ़ें, सुविचार बढ़ें, बल पाय चढ़ें, नित ऊपर को।
अविरुद्ध रहें, ऋजु पन्थ गहें, परिवार कहें वसुधा भर को॥
ध्रुव धर्म धरें, पर दुःख हरें, तनु त्याग तरें भव-सागर को।
दिन फेर पिता, वर दे सविता, हम आर्य करें वसुधा भर को॥

ओम् जय जगदीश हरे

ओम् जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त-जनों के संकट क्षण में दूर करे॥ ओम् जय...
जो ध्यावे फल पावे दुःख विनशे मन का।
सुख सम्पत् घर आवे कष्ट मिटे तन का॥ ओम् जय...
मात-पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा आश करूँ जिसकी॥ ओम् जय...
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी।
पार-ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी॥ ओम् जय...
तुम करुणा के सागर तुम पालन-कर्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्ता॥ ओम् जय...
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति।
किस विध मिलूँ दयामय तुमको मैं कुमति॥ ओम् जय...
दीनबन्धु दुःखहर्ता रक्षक तुम मेरे।
करुणा-हस्त बढ़ाओ शरण पड़ा तेरे॥ ओम् जय...
विषय-विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा॥ ओम् जय..

शान्ति-पाठ

ओ३म्। द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी
शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्
विश्वे देवाः शान्तिर् ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥
॥ ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥